Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जैन

मासि

ड
(१)
क २
२०३१
महार ४

सम्पादकीय—

इतिहास को जागृत करो।

आज से १०० वर्ष पूर्व चैत्र सुदि प्रतिपदा को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। आगामी वर्ष १२-१३ अप्रैल को चैत्र सुदि प्रतिपदा पड़ रही है।

इतिहास एक बार फिर करवट ले रहा है। ८७५ की विकट परिस्थितयों में ऋषि दयानन्द ने र्यसमाज स्थापित किया था। १९७५ की भयंकर ोप आंधी में हम आर्यसमाज को जागृत करें।

र्यसमाज के प्रत्येक अधिकारी और शुभ से हमारा आग्रह है कि १२ अप्रैल १९७५ माज स्थापना शताब्दी पूरे उत्साह, उमंग र समारोह के साथ मनायी जाए।

हम जागरण का शंख फूंकें। इस को बताएं कि आर्यसमाज जाग गया अज्ञान के विरुद्ध युद्ध घोषणा करें।

१२ अप्रैल १९७५

२ अप्रैल १९७५

अप्रैल १९७५

ी तैयारी प्रत्येक क्षेत्र में आज जाए! यह हमारी आर्य- र श्रद्धा की परीक्षा है।

ा अपने ही क्षेत्र में करो। जाल से बचो और १२ कि आर्यसमाज जाग ा है। वह सभी को एगा।

अपने जन्म दिवस ह स्वर्णिम दिवस ए जागरण और

ार्यसंस्थाएं अभी से ने के कार्यक्रम में लग जाएं— ताकि हम इतिहास को नया मोड़ दे सकें।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...दैये | जून १९७४

१
३
७
१७
...कुमत राय २५
२६
—ब्रह्मचारी जगन्नाथ पथिक २८
—लक्ष्मी नारायण ३३
—डा० आत्माराम ३८
—[कहानी] ४१
—दीनानाथ सिद्धांतालंकार ४४
४८
५८
—तारकेश्वरी सिन्हा ६१
...य१—६४

चित्र परिचय

...ृष्ठ का चित्र वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का ... आदर्श वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई का है। वे ...ही राष्ट्र को प्रेरणा और नव जीवन देती रहेंगी

...य प्रकाशन के लिए १००१) और ...कर यश और पुण्य प्राप्त की... ...िक वेदभाष्य का कार्य ... न देंगे।

—संपादक श्रीमती पं० राय...

...नी प्रि...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[पंजीकृत ट्रस्ट]

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन-ज्ञान

(मासिक)

सम्पादक
—राकेशरानी

दूरभाष : ५६६६३९

—पता
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
निकट ३१-नाईवाला
करौल बाग, नई दिल्ली-५

वार्षिक मूल्य १५)
विदेश में—१ पौंड
आजीवन—२५१)

वर्ष ७ : अंक २
आषाढ़ संवत् २०३१
जून—१९७४

सम्पादकीय—

इतिहास को जागृत करो ।

आज से १०० वर्ष पूर्व चैत्र सुदि प्रतिपदा को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। आगामी वर्ष १२-१३ अप्रैल को चैत्र सुदि प्रतिपदा पड़ रही है।

इतिहास एक बार फिर करवट ले रहा है। १८७५ की विकट परिस्थितयों में ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज स्थापित किया था। १९७५ की भयंकर घटाटोप आंधी में हम आर्यसमाज को जागृत करें।

आर्यसमाज के प्रत्येक अधिकारी और शुभ चिन्तक से हमारा आग्रह है कि १२ अप्रैल १९७५ को आर्यसमाज स्थापना शताब्दी पूरे उत्साह, उमंग साधना और समारोह के साथ मनायी जाए।

इस दिन हम जागरण का शंख फूंकें। इस दिन हम संसार को बताएं कि आर्यसमाज जाग गया है। इस दिन हम अज्ञान के विरुद्ध युद्ध घोषणा करें।

१२ अप्रैल १९७५

१२ अप्रैल १९७५

१२ अप्रैल १९७५

का दिन मनाने की तैयारी प्रत्येक क्षेत्र में आज से ही आरम्भ कर दी जाए ! यह हमारी आर्यसमाज के प्रति भक्ति और श्रद्धा की परीक्षा है।

अपनी शक्ति का प्रयोग अपने ही क्षेत्र में करो। कागज़ी योजनाओं के माया जाल से बचो और १२ अप्रैल को संसार को बता दो कि आर्यसमाज जाग गया है। उसने फिर से हुँकारा है। वह सभी को जगाएगा और पापों को दूर भगाएगा।

हम १२ अप्रैल १९७५ को अपने जन्म दिवस के रूप में मनाएं। इतिहास का यह स्वर्णिम दिवस सभी को आवाहन कर रहा है, नए जागरण और शंखनाद के लिए।

आर्यजन, आर्यसमाजें, आर्यसंस्थाएं अभी से शताब्दी दिवस मनाने के कार्यक्रम में लग जाएं—ताकि हम इतिहास को नया मोड़ दे सकें।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धरती के प्रत्येक भू भाग में

जहां भी ऋषि दयानन्द का

कोई अनुयायी रहता हो

१२ अप्रैल

चैत्र सुदि प्रतिपदा

को

आर्यसमाज शताब्दी

स्थापना समारोह

धूम धाम और पूरे बल से

मनाने की तैयारी करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र

मेरे प्रश्न का उत्तर क्या तुम्हारे पास है ?

तू कौन है ?
तू कौन है ?
तेरी क्या हैसियत है ?
तेरी क्या हैसियत है ?

दो व्यक्ति आपस में बड़े जोर से, शोर से उलझ रहे थे।

जो मन में आ रहा था, एक दूसरे को कह रहे थे।

मैं उधर से जा रहा था तो मेरे कानों में यह स्वर पड़े। और उनका वाग्युद्ध मैं देखता रहा! ऐसे में बीच बचाव करना कितना कठिन होता है, यह सभी जानते हैं। फिर भी मैं आगे बढ़ा और दोनों से ही बोला……भाई! तुम लड़ रहे हो, या आत्मज्ञान प्राप्त कर रहे हो? वे गुर्राए, गुस्से से हमें देखा, और बिफर कर एक साथ बोले! तू कौन है ?

मेरा शांत उत्तर था,

यही तो उलझन है, मैं नहीं जानता कि मैं कौन हूँ ? पर तुम दोनों आपस में एक दूसरे से यही प्रश्न पूछ रहे थे कि—

तुम कौन हो ?

तुम कौन हो ?

तो क्या तुम दोनों मेरी इस उलझन को सुलझा मुझे बता सकोगे कि मैं कौन हूँ ?

यदि तुम दोनों ही मिलकर मेरा प्रश्न सुलझा दोगे, तो मैं तुम्हें अपना गुरु मान लूंगा।

मेरी बात सुनकर वे अपना झगड़ा भूल कर मुझे गौर से देखने लगे—और बोले कि—तुम पागल तो नहीं हो ?

मैंने कहा नहीं भाई! मैं पागल नहीं हूँ। लेकिन मैं यह जानने के लिए भटक रहा हूँ कि मैं कौन हूँ ?

मैंने आज तक बहुत कुछ जाना है, पढ़ा है, समझा है, पर मुझे इस प्रश्न का उत्तर अभी तक भी नहीं मिल पाया कि मैं कौन हूँ ?

मेरी बात को अब उन्होंने गंभीरता से लिया। पास के चबूतरे पर वे बैठ गये और बोले, भाई! तुम्हारा प्रश्न तो गहरा है। हमने भी आज तक इस पर कभी विचार नहीं किया!

हम अभी आपस में उलझ रहे थे पर अब तो तुमने और गहरे में हमें उलझा दिया! बताओ, कौन देगा, इस प्रश्न का उत्तर ?

मैंने कहा—

प्रश्न का उत्तर तुम्हें स्वयं आत्म चिन्तन से मिलेगा। मेरे भाई!

यह प्रश्न बहुत गहरा है, पर यही सत्य है। और यह मानव योनि हमें इसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न का उत्तर जानने के लिए मिली है। सारा ज्ञान इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए होता है।

हम में और पशु में बस यही एक अन्तर है कि वह नहीं जानता, न जान सकता है कि वह कौन है ? और हम भी यदि वैसे ही बने तो हम और वह एक हो गए ! मैं कौन हूँ ?

यह शरीर मैं नहीं हूँ।
शरीर तो नाशवान है।

मैं चला जाऊं तो मेरे प्रिय जन मेरे शरीर को नष्ट कर देंगे। मैं चला जाऊँ तो मेरा शरीर एक वद्‌व का ढ़ेर बन जाएगा। मैं चला जाऊँ तो मेरी इन्द्रियां कार्य करना छोड़ देंगी।

इसलिए मैं शरीर नहीं हूँ। मैं इस देह का स्वामी हूँ। मैं कुछ और हूँ।

क्या हूँ,
कैसे जानूं !

क्योंकि मैंने अपने को भुला दिया है। अपने को अन्धकार में सुला दिया है। अज्ञान मेरा रथी बन गया है। ज्ञान मुझ से दूर है, फिर मैं, कैसे जानूं कि—मैं कौन हूँ ? सुवह—शाम—रात का चक्र चल रहा है। दिन बीत रहे हैं, मैं दौड़ रहा हूँ, पर मेरा प्रश्न आज भी खड़ा है, और यह खड़ा रहेगा।

इस का उत्तर जानने के लिए हमें प्रभु के बताए मार्ग पर चलना होगा। सत्य को जीवन का प्रेरक बनाना होगा। असत्य की छाया से भी वचना होगा। पर हित करना होगा।

और...............
कौन हूँ ! मैं
मैं यहाँ क्यों आया हूँ।
मुझे यहाँ से क्या लेकर जाना है ?
जाना है...अवश्य जाना है।
जो कुछ मेरे पास है
वह सब छोड़ना होगा,
जाना होगा......
कहाँ,
किसे,
कब,
कौन जानता है ?
फिर भी यह सच है,
तुम या कोई और
सम्राट या भिखारी
इसे-जाने को
एक पल के लिए भी रोक नहीं
सकते।
तो—
जब जाओगे ?
तो क्या लेकर जाओगे ?
उत्तर दो।
चिन्तन करो,
और बताओ कि—
तुम अपने साथ क्या लेकर
जाओगे ?

प्रभु पुत्रो !

बहुत व्यस्त हो आज, तुम्हारे पास इस प्रश्न पर विचार का समय नहीं है।

पर जब मृत्यु द्वार आकर खटखटाएगी तब क्या करोगे ?

तब पछताने से क्या होगा ?
क्या यहाँ से खाली हाथ जाओगे !
सोचो मेरे भाई !
सोचो...गहरे पैठ कर सोचो !
तब तुम जानने के अधिकारी बनोगे
कि—
तुम कौन हो ?
तुम यहाँ क्यों आये हो ?
तुम यहाँ से लेकर क्या जाओगे ?
प्रश्न का उत्तर दे सको !
इसी में तुम्हारी सफलता है !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रत्येक आर्यसमाज चैत्र सुदि प्रतिपदा १२ अप्रैल १९७५ को ऐतिहासिक आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने की तैयारी करे।

मंजिल से मंजिल तक

हमारी मंजिल १८७५ में आरंभ हुई थी। हम चले थे धरती को स्वर्ग बनाने, अज्ञान हटाने और परमात्मा की पवित्र वेदवाणी के गीत धरती पर गुंजाने।

१८७५ में चला हुआ कारवाँ १९७४ के ९९ वर्षों में बहुत बढ़ा, चला, सफलताएं भी मिलीं, पर इन ९९ सालों में हम गीत गाने की तैयारी ही कर सके। गीत के स्वरों की गूँज हम गुंजाने में न लग पाए।

अब तो एक वर्ष रह गया है। इस एक वर्ष में क्या होगा? कौन कुछ करेगा? इस प्रश्न चिन्ह का उत्तर तो शायद हमारे पास भी नहीं है।

कागजी योजनाएं समाचार पत्रों में आ रही हैं। आकर्षक घोषणाएं की जा रही हैं। एक-दो उत्सवों को मंजिल बताया जा रहा है। कैसी छलना है यह? प्रश्न फिर उभरता है क्या यही हमारी मंजिल थी?

जिन के हाथ में पतवार है उनका ईमान बिका हुआ है। कुछ ने कुछ को, कुछ ने कुछ को अपना मन बेच दिया है। राजनीति के मंदिर में स्थान बनाने की इच्छा ने धर्म मंदिर की लालिमा धूमिल कर दी है।

ऋषि दयानन्द का, तप त्याग बलिदान और दिव्य स्वप्न मंजिल की ओर बढ़ने के लिए जहाँ प्रेरक है, वहाँ ऋषि के उत्तराधिकारी आधुनिक नेता नामधारी केवल पद-राजनीति की छलना में उलझ कर ऋषि के अनुयायियों को भटकाने में ही अपने बुद्धि चातुर्य का प्रयोग कर सकते हैं। कैसी विडंबना है कि मंजिल के साधक ही सबसे बड़े बाधक बन कर खड़े हो गए हैं।

पर जो भी हो हम मंजिल तक पहुँचेंगे, ऋषि दयानन्द के अनुयायी मंजिल की पुकार सुनेंगे और जागेंगे। एक वर्ष अर्थात् ३६५ दिन अर्थात् ८७६० घंटे हमारे पास हैं। इस थोड़े से समय में हमारा आग्रह है कि **देश-देशान्तर के प्रत्येक स्थान में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी मनाने की तैयारी की जाए।**

धरती के किसी भी कोने में, जहाँ स्वामी दयानन्द का एक भी अनुयायी रहता है अभी से शताब्दी महोत्सव मनाने की तैयारी की जाए।

१९७५ की चैत्र सुदि प्रतिपदा को सर्वत्र आर्यसमाज की विजय पताका लहरायी जाए। धरती के प्रत्येक स्थान पर चैत्र सुदि प्रतिपदा १२ अप्रैल १९७५ को आर्यसमाज स्थापना शताब्दी दिवस के रूप में मनाया जाए।

आर्यसमाजें, आर्यजन, और ऋषि भक्त अभी से कमर कस काम में लग जाएं। इस विषय में अब और प्रतीक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का समय नहीं रहा।

१. चैत्र सुदि प्रतिपदा १२ अप्रैल १९७५ से चैत्र सुदि पंचमी १६ अप्रैल १९७५ तक आर्यसमाज स्थापना शताब्दी प्रत्येक ग्राम और नगर में दीपमाला और उत्साह के साथ मनायी जाए।

२. विशाल जन सभाएं की जाएं।

३. भारत सरकार को, प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति को पत्र लिखे जाएं कि १२ अप्रैल १९७५ को सार्वजनिक अवकाश हो।

४. सभी समाचार पत्रों से संपर्क किया जाए कि इस दिन अपना विशेषांक निकालें।

५. नगरों ग्रामों में १२ से १६ अप्रैल तक प्रभात फेरियाँ आयोजित की जाएं।

आर्यो! नेताओं के निराश पथभ्रष्ट होने से आपको निराश नहीं होना है। हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी हैं और केवल उन्हें ही अपना नेता मानकर आर्यसमाज स्थापना शताब्दी को ऐसे मनाएं जैसे कि अपने घरों के समारोहों को मनाते हैं।

—अपने-अपने क्षेत्र में अपने धन साधनों का प्रयोग करो।

—१९७५ तक पूरे बल से वेद सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि जीवनी का प्रचार करो।

भूल जाओ कि कहाँ क्या हो रहा है। अपने-अपने क्षेत्र को उठाने में लग जाओ। अपने ग्राम में, अपने नगर में, अपने जिलों में वैदिक विचारधारा की विजय पताका फहराने की प्रतिज्ञा करो।

मैं नहीं जानता कि तुम्हें कैसे जगाऊँ, मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारे मन में ऋषि दयानन्द के प्रति कितनी श्रद्धा और आदर है, फिर भी मेरे भाई! मैं चाहता हूँ कि तुम गुरुदत्त, लेखराम, श्रद्धानन्द हंसराज की तरह अपनी श्रद्धा के पुष्प लेकर ऋषि दयानन्द की विजय पताका फहराने के लिए तैयार हो जाओ।

१९७५ फिर नहीं आएगा, इतिहास बुला रहा है। वह तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं करेगा। प्रभु की अमर वाणी के प्रचारक हे प्रभु पुत्र! समय थोड़ा है और काम बहुत, बस अभी से १९७५ चैत्र सुदि प्रतिपदा १२ अप्रैल १९७५ को आर्यसमाज स्थापना शती के ऐतिहासिक दिवस के स्वागत की तैयारी करो!

वेद भाष्य के लिए

अथर्ववेद भाष्य छप रहा है। उसके लिए कागज चाहिए। इच्छा है कि किसी तरह दीवाली तक यह आपके हाथ में हो।

अगर आप इस समय १००० रिम कागज का प्रबन्ध कर दें तो प्रकाशन कार्य बहुत तेजी से चल सकता है।

८०) रु० में एक रिम कागज प्राप्त होता है। आप यत्न करें तो बड़ी आसानी से लक्ष्य समीप आ सकता है। मन्दिर बनाने के लिए देने की तरह 'वेद' को घर-घर पहुँचाने के लिए कागज दीजिए।

प्रकाशन समिति के निश्चयानुसार १००१) देने वालों के चित्र और ५०१) देने वालों के नाम भी वेद भाष्य में छापे जा रहे हैं। आप भी प्रभु से प्रेरणा प्राप्त कर इस विषय में विचारें। यश और पुण्य प्राप्त करने का यह स्वर्णिम अवसर है।

एक मास की रेल हड़ताल ने हमें और पीछे डाल दिया है। २७ अप्रैल से डाक, V P. P. सब बन्द थे।, प्रभु हमारी परीक्षा ले रहे हैं और हमें विश्वास है कि हम अवश्य सफल होंगे! सभी का आशीर्वाद और स्नेह वेद-प्रचार के लिए मिले, शीघ्र से शीघ्र मिले, यही कामना है

का वर्षा जब कृषि सुखानी ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद भाष्य प्रकाशन यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

१.	श्री महात्मा स्वामी आनन्द स्वामी जी महाराज दिल्ली	१००१-००
२.	श्री १००८ स्वामी चन्द्रकिरण महाराज जी—कानलंदा (दक्षिण)	१००१-००
३.	श्री हरवन्सलाल सहगल—शिमला	१००१-००
४.	आर्यसमाज सिकन्दराबाद—(बुलन्दशहर)	५०१-००
५.	श्री पटेल भोगीलाल हरगोविन्ददास—बम्बई	५०१-००
६.	श्रीमती लाजवन्ती सपरा—गाजियाबाद	५०१-००
७.	आर्यसमाज—जामनगर	५०१-००
८.	श्री ललितकुमार आर्य, सिकन्दरपुर	५०१-००
९.	श्री कृष्णलाल सेठी, गोला गोकरणनाथ	५०१-००
१०.	श्री शत्रुघ्न लाल गुप्ता—गोहाटी	५०१-००
११.	श्री रामधारी जी आर्य—हिसार	५०१-००
१२.	श्री आनन्द स्वरूप जी आर्य—रूड़की	८००-००
१३.	श्री भगवान वी० संहतु—Natal	१२ पौंड-६८ शिलिंग
१४.	श्री दयालचन्द जी की पुन्यस्मृति में द्वारा रामलाल पुन्नू—Glasgow १० पौंड	१०००-००
१५.	श्री प्राणपालसिंह राणा—शाहपुर	३०१-००
१६.	श्री सत्यपाल महाजन सिल्क मिल्स—बम्बई	२५१-००
१७.	श्री सदानन्द आर्य—बम्बई	२००.००

१९. श्री विरधीचन्द जी, जयपुर—४५-०० २०. श्रीमती सरला चौधरी कानपुर ४१-००, २१. श्री तुकाराम, राम कृष्ण भंगूर ३९-००, २२ Pt. Ram Lal Guyana २ पौंड, २३. श्रीमती राजरानी दत्ता इलाहाबाद ३१-००, २४. श्री मोहनलाल जागीड ३१-००, २५. श्री गोपाल कृष्ण गुप्त अम्बाला छावनी ३१-००, २६. श्री कृ० भा० परांजपे नासिक ३०-००, २७. श्री अनिलकुमार सरताजगंज ३०-००, २८. श्री लक्ष्मणराव आर्य नवीपेठ ३०-००, २९. श्री प्रो० डी० एन० आसमवार रामनगर ३०-००, श्रीराम नारायणप्रसाद नाथनगर २६-००, ३१. श्री बल्देव प्रसाद कानपुर २६-००, ३२. श्रीमती शांतिदेवी नगीना २४.००, ३३. श्री रूपरामसिंह खानपारा २२-००, ३४. श्री वृजलाल मुजफ्फरनगर १९-५०, श्री रामधारी बीज भंडार आजमगढ़ १८-००, ३६. श्री विश्वनाथ सिंह रघुनाथपुर १२-२०, ३७. श्री प्यारेलाल जयपुर १३-००, ३८. श्री जैपालसिंह मैनपुरी ८-००, ३९. श्रीशिवचरण लाल कोटा ८-००, ४०. श्री जगदीशप्रसाद रामस्नेहीघाट ८-००, ४१. श्री बाबूलाल आगरा ३-००, ४२. श्री रामचन्द्र यादवआर्य नागौर ३-००,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४३. श्री सुरेश चन्द्र जयपुर ३-००, ४४. श्री दयानन्द मिशन-मद्रास ३-००, ४५. श्री गनपतसिंह कैरू २-५०, ४६. श्री रामनिवास कैरू २-५०, ४७. श्री खुशीराम जी शाहदरा २-५०, ४८. श्री शिवव्रत गुप्ता झांसी ८-००, ४९. श्री महादेव प्र० आर्य कटैयामाहे ६-००, ५०. श्री के० जी० शुक्ला ३०-००

१०१) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री जस्साराम जी दिल्ली, २. श्री महात्मा आर्यभिक्षु मुगलसराय, ३. श्रीमती स्वर्ण मलिक करनाल, ४. श्रीमती इन्द्रा आर्य (फरीदकोट) ५. श्री नारायणदास जी अहमदाबाद, ६. गुप्त दान हापुड़, ७. मन्त्री आर्यसमाज कोटा, ८. श्री सुगनचन्द बन्सल मुजफ्फरनगर, ९. श्री काकाराम महाजनजम्मू, १०. श्रीमती बाला रानी बुढ़ाना, ११. श्री हरि प्रसाद गुप्ता जयनगर, १२. श्री के० एस० भाटिया जलौर, १३. श्रीरघुनाथ साह राखावानी, १४. श्री हरिशचन्द्र नैंण गंगानगर, १५. श्री० वी० मेहता ९९ ए० पी० ओ० १६. श्री जगदीश खोसला बम्बई, १७.श्री सुखराज आर्य कोटा, १८. श्री लल्लूसिंह पीलाभीत, १९. श्रीमती पुष्पा चौधरी गाजियाबाद, २०. श्री कमलनयन सरोगी कलकत्ता

१००) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. डा० नारायणदास गोहाटी, २. श्री विजयकुमार देहरादून, ३. श्रीमती माता आज्ञावती मंत्राणी आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर

५१) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री आर० के० खेतान—शाहदरा २. श्री महाराज कृष्ण जी शिमला, ३. श्रीमती शांतिदेवी मोहन जी, दिल्ली, ४. चौ० देवकराम आर्य भिवानी, ५. श्री धर्मभिक्षु वानप्रस्थी शाहदरा, ६. डा० के० एन० श्रीवास्तव दिल्ली, ७. श्री राधेश्याम अग्रवाल हजारीबाग, ८. श्री रामप्रताप कलकत्ता, ९. श्री जसाराम आर्य छत्तरी, १०. श्री अपित्य सिंह डोंडा, ११. श्री चन्देश्वरदत्त शुक्ल रामस्नेही घाट, १२. श्री ना० स० जुमेल पथो, १३. श्री ठाकुर देवेन्द्रसिंह पैठानकोट, १४. श्री गणेशनारायण शर्मा चौंमू, १५. अग्रवाल बुक डिपो मुरादाबाद, १६. श्री टेकनारायण सिंह भागलपुर, १७, श्री हेमराज उदयपुर, १८. श्री मग्नलाल हरिशंकर भरुच, १९. श्री त्रिलोक चन्द्र बरेली, २०. श्री रूकमचन्द अग्रवाल सरहेड़ा, २१. श्री सुखदेव प्रसाद पाटन, २२. श्री कौशल किशोर मणि त्रिपाटी पटना, २३. श्री कमल कृष्ण बम्बई, २४. श्री राधाकृष्ण गुप्त सहसवान, २५. श्री रवीन्द्रचन्द पन्त राँची, २६. श्रीमती प्रमिला वर्मा वोकारोस्टील सिटी, २७. श्री ए० एन० वली रूड़की, २८. श्री ओ० पी० अवस्थी देवदीदुर्ग. २९. श्रीमती सरोज आर्य मेरठ, ३०. श्री कालुराम भोगपुर, ३१. श्री लक्ष्मीसिंह बम्बई

५०) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री आर्य रामरख पुरोहित जोधपुर, २. श्री सोमप्रकाश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रिवाड़ी, ३. श्री जगदीश्वरानन्द भंडारा, ४. श्री बनारसीदास अग्रवाल रायसिंह नगर, ५. श्री कृ० रहालकर शाहाबाद, ६. श्री भंवरसिंह चाँदपुर, ७. श्री विनीतकुमार बंसल कासगंज, ८. श्री आर० के शुक्ल पिपलानी, ९. श्री मूलचन्द आगरा, १०. श्री ईश्वरदास कानपुर, ११. श्री डोमारसिंह साहू ससहा

२५) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री मनमोहन लाल बवेजा दिल्ली, २. Sh. J. B. Bhavsar Kaira, ३. श्री नेमचन्द जी हितैषी दिल्ली, ४. श्रीमती मानकुमारी कपूर कानपुर, ५. श्री दीपक ग्रोवर जबलपुर, ६. सुश्री सरोज रानी आर्य मेरठ, ७. Flt. ft. V. Mehta 99 A. P. O. ८. श्री प्रहलाद राय पचेरिया बम्बई, ९. श्री सी० के० पटेल एण्ड सन्स बम्बई, १०. श्री सच्चिदानन्द सिन्हा हजारी बाग, ११. वैद्य जनमेजय शर्मा भिण्ड, १२. श्री विद्याधर सर्राफ भगवन्तनगर, १३. श्री सत्य स्वरूप गुप्ता, हसनपुर, १४. श्री ओमप्रकाश शर्मा वाराणसी, १५. श्री कालूराम माली भोगपुर, १६. श्री जगदीश्वरानन्द स्वामी हिसार, १७. श्री चमनकुमार चित्रदुर्ग १८. श्री निवास अध्यापक डीग, १९. श्री वी० एच० शिवनी भैंस देही, २०. श्रीमती रामदेही देवी रेणुकूट, २१. श्री आज्ञाराम बत्रा मुजफ्फरनगर, २२. श्रीमती सरोज रस्तोगी मेरठ, २३. श्री पं० रामाश्रय दास बम्बई, २४. श्री हरिशचन्द्र जनकपुरी, २५. पं० भूदेवप्रसाद शर्मा आगरा, २६. श्री नारायण बाल कृष्ण शोलापुर, २७. श्री परभाप्प जी निजामाबाद, २८. श्री अचपलसिंह त्यागी मुजफ्फरनगर, २९. श्री विशम्भर दयाल बंगलौर, ३०. श्री जुगतराम सिरमोर, ३१. श्री बलदेव वानप्रस्थी चाँदपुर स्याऊ, ३२. श्री हीरासिंह, साहनपुर, ३३. श्री जस्साराम वर्मा सम्हनी, ३४. श्रीमती लज्जावन्ती नागिया गुड़गाँव, ३५. श्री परमानन्द दण्डी फर्रुखाबाद, ३६. श्री बालकृष्णदत्त गुना

२१) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. नरेन्द्रकुमार आर्य हापुड़, २. श्री रामकिशोर गोपाल दिल्ली, ३. श्रीमती पुष्पा सोंधी दिल्ली, ४. श्रीमती निर्मल थापर दिल्ली, ५. श्रीकृष्णकुमार गुप्ता बुलन्दशहर, ६. श्री कनक जे साह किरन्दूल, ७. श्री जे० पी० मिक्ता किरन्दूल, ८. हरीराम विभोले किरन्दूल, ९. श्री जे० एन० विग अमृतसर, १०. श्री एच० सी० श्री वास्तव चण्डीगढ़, ११. श्री वासुदेव सहाय मुजफ्फरनगर, १२. श्री राम जी लुहारी भादर, १३, श्री मामचन्द गुप्ता नांगल, १४. श्री लच्छीराम विनोदकुमार सहारनपुर, १५. श्री बहोरीदत्त शर्मा अलीगढ़

२०) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री उम्मेदसिंह वैद्य बम्बई, २. श्री एम० एल० अग्रवाल कलकत्ता, ३. श्री भोलाराम आर्य सहारनपुर, ४. श्री बाबूराम मेरठ, ५. श्री ओमप्रकाश बात्ता, ६. श्रीमती नंदीदेवी तेजम, ७। श्री देवेन्द्र मलघा बेल्लौर, ८. श्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गोवर्धनदास रतनगढ़, ६. हिन्दुस्तान सोपमिल तेजपुर, १०. श्री प्रेमलता दुबलिश, ११. श्री उत्तमचन्द मथुरादास वेहट, १२ डा० आर० सी० शर्मा वेहट

१५) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्रीमती दयावती जंगपुरा, २. श्री जे० आर० शर्मा किरन्दूल ३. श्री टी० एन० श्री वास्तव अशोक बिहार, ४. श्री अशोककुमार जम्मूतवी, ५. श्री लक्ष्मण अम्बाराव परली बैजनाथ, ६. श्री राधेलाल चतुर्वेदी बीकानेर, ७. श्री कमलकिशोर ग्वालियर, ८. श्री चरणदास, ओमप्रकाश पटियाला, ६. श्री आत्माप्रसाद लाल तेलरी, १०. श्री जर्नादनाचार्य पुरुलिया, ११. श्री फिरंगी मिस्त्री बैनी, १२. कुमारी सुधामापुर कानपुर

११) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. अर्जुन जनरल स्टोर शिवगंज, २. श्रीमती दयावती, ३. रामचन्द्र पालीवाल,-आगरा, ४. श्री ईश्वरचन्द मुरादाबाद, ५. श्री छोटेलाल आर्य अलीगंज, ६. श्री जयशंकर शर्मा इन्दौर, ७. श्रीमती शान्तिदेवी दिल्ली, ८. श्रीमती राजेश्वरी गुड़गाँव, ९. श्री त्रिलोकीचन्द्र जी दिल्ली, १०. श्री दुर्गाप्रसाद मोदी राँची, ११. श्री जे० एस० साहनी नई दिल्ली, १२. श्री धर्मपाल यादव दिल्ली १३. श्री रतनसिंह जी राणा करनाल (पुत्र के विवाह पर), १४. श्री नवलकिशोर जी दिल्ली, १५. श्री शिवप्रसाद जी दिल्ली, १६. श्री रोहतास सिंह व श्री चतरसिंह बख्तावरपुर, १७. श्री श्यामकुमार किरन्दूल, १८. श्री सुरेश त्रिपाठी, १९. श्री रामचन्द्र तिवारी बसन्तनगर, २०, श्री रुराराम सिहमार गोहाटी, २१. श्री दुर्गाप्रसाद साव वांसवेरिया, २२. श्री देवीचरण आर्य कानपुर, २३. श्री रामकिशोर शर्मा जयपुर, २४. श्री जनकराज आर्य बवानी खेड़ा, २५. श्री मुरलीधर महता बवानी खेड़ा, २६. श्री दगडु तापीदास चौधरी शहोद, २७. श्री प्यारेलाल खन्ना अमृतसर, २८. श्री ओ० पी० गुप्ता जम्मूतवी, २९. श्री आर० के० शर्मा रामा कृ० पुरम, ३०. श्री एम० गंगाराम निजामाबाद, ३१. डा० जगदीश कुमार शर्मा अमृतसर, ३२. श्री शशिभूषण श्रेष्ठ शीतल माझा, ३३. श्री बद्रीमणि, त्रिपाठी वैतालपुर, ३४. डा० विरेन्द्रसिंह वर्मा श्री गंगानगर, ३५. श्री उमराव सिंह अलवर, ३६. श्री परमात्मा सहाय सक्सेना बूंदी, ३७. श्री रूपनारायण अध्यापक ललितपुर, ३८. श्री लक्ष्मीचन्द्र अग्रवाल तरकट, ३९. श्री तेज नारायण पाण्डेय रिशरा, ४० श्री रामपालसिंह यादव बीकानेर, ४१. श्री दिनेशकुमार शामली, ४२. श्री वी० के० श्री वास्तव गोंडा, ४३. श्री मिश्रीलालवर्मा साढ़ गऊ, ४४. श्री चरणसिंह रेणुकूट, ४५. श्री हरनामदास कोहली कानपुर, ४६. आर्य समाज हिसार, ४७. डा० यशपाल रतनगढ़, ४८. केसरी लाल वर्मा बरा, ४९. गोपाल श्रीप्रसाद मुजफ्फरपुर, ५०. श्री हरिओ३म् मुरादाबाद, ५१. श्री सतपालसिह इन्दौरा, ५२. आर्यसमाज नरसिंहगढ़, ५३. श्री जगदीशप्रसाद शर्मा रायगंज, ५४. श्री मोहनदास अंबड़, ५५. श्री ओम प्रकाश गुप्ता हापुड़, ५६. श्री मालिकचन्द-आगरा, ५७. श्री त्रिलोकनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आगरा, ५८. श्री त्रिलोकनाथ भट्ट आगरा, ५९. श्री पशुपतिनाथ सलेमपुर, ६०. श्री पवनकुमार जी कांटा बाजी ६१. श्री अभिप्रसाद मिश्र पलामू

१०) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्रीमती सीतादेवी मल्होत्रा दिल्ली, २. श्री देवेन्द्र जी दिल्ली, ३. आर्यसमाज दमकोट, ४. श्री गुरुराम जी लाल ओमप्रकाश जी दिल्ली, ५. श्री किशनलाल भाटिया नई दिल्ली, ६. श्री कृष्णमूर्ति किरन्दूल, ७. श्री बलवन्त सिंह आर्य बीकानेर, ८. श्री एच० एल० कपूर जींद, ९. श्री विजयसिंह इटावा, १०. डा० एस० पी० आर्य खीरी, ११. श्री राम नारायण सीताराम विजनवारी १२. श्री कृष्णकुमार मिश्र गुड़िया, १३. श्री मास्टर हरिशूर आर्य कांगड़ी, १४. ठा० फूलसिंह रीठरा, १५. श्री रामचन्द्र यादवार्य नागौर, १६. श्री नरेशचन्द्र मिश्र रामकृष्ण पुरम, १७. वैद्य धर्मवीर दत्त शर्मा ताजपुर, १८. श्री अवधराम वर्मा गनियारी, १९. श्री शिवजी गुप्ता छपरा, २०. श्री वंशबहादुरसिंह डुमरी, २१. श्री मानसिंह टाक जोधपुर, २२. श्री M. L. Sharma खड़गपुर, २३. निरंजन रेडियो जालौन, २४. श्री शमशेरसिंह सहायक बिसौली, २५. श्रीमती ज्ञानदेवी, फिरोजपुर, २६. श्रीराम सांवा प्रसाद मिदनापुर, २७. श्री गणेश चन्द्र आर्य कनगेटी, २८. श्री गोविन्द सहाय गुप्ता लक्ष्मीबाई नगर, २९, श्रीमती सावित्री जगदलपुर, ३०. श्री जगदीशचन्द्र ग्वालियर ३१. श्री बनवारीलाल उभानी, ३२. श्री मुनीलाल मंत्री जालन्धर, ३३. श्री मोहनप्रकाश छाबड़ा चण्डीगढ़, ३४. श्री रोहताश-कुमार पिलानी, ३५. श्री अमरनाथ पाहवा उज्जैन, ३६. श्री छगनलाल भीन, ३७. श्री महेशचन्द्र खानपुर, ३८. श्री खेमचन्द पुरदिलपुर, ३९. श्री दवेशी परबत पटेल मथलकच्छ, ४०. श्री मेवाराम जी श्योपुर, ४१. श्री उत्तम मुनि-वानप्रस्थी लातूर, ४२. श्री सोमनाथ गिरि मरौद, ४३. श्री सत्यपाल हाण्डा जवलपुर, ४४. श्री रामचन्द्र पाण्डे खारगढ़ ४५. श्री हंसमुख त्रिवेदी भीमड़ाद, ४६. श्रीमती नंदीदेवी आर्य तेजम, ४७. श्री नारायणलाल मिस्त्री राणावास, ४८. श्री देवप्रसाद धुरंधर कठिया ४९. श्री विन्देश्वरी आर्य शिवपुरी, ५०. श्री मिश्रीलाल गुप्ता-अलीराजपुर, ५१. श्री नन्दलाल बख्शी नई दिल्ली, ५३. श्री यमुनाप्रसाद सिंह जमशेदपुर, ५३. श्री वी० के० जोशी-भोपाल, ५४. डा० एस० पी० आर्य रायपुर, ५५. श्री रामप्रसाद गुप्ता-पटना, ५६. श्री भूमानन्द, आसनदास-अलवर, ५७. श्री हरिश्चन्द्र वर्मा पं० बंगाल, ५८. श्री अवधराम रायपुर, ६०. श्री चन्द्रराम आर्य इलाहाबाद, ६१. श्री महेन्द्रसिंह बिजनौर, ६२. श्री तारीराम आर्य तेजम

५) की आहुति देने वाले महानुभाव

१. श्री जयकृष्ण जी दिल्ली, २. श्री सुभाष जी दिल्ली, ३. गुप्तदान दिल्ली, ४. श्री रामेश्वरानन्द दिल्ली, ५. गुप्तदान दिल्ली, ६. श्री भारतसिंह नहटौर, ७. कु० सरोज चावला शिमला, ८. श्री शरणसिंह ठुकराल लखनऊ, ९. डा० टी० एन श्री वास्तव नई दिल्ली, १०. श्री वास्तव गांधी नगर,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११. श्री रवीन्द्रकुमार जी गाँधीनगर, १२. श्री विष्णु प्रकाश दीक्षित किरन्दूल, १३. श्री पृथ्वीनाथ बैस किरन्दूल, १४. श्री जी० एस० देवड़े किरन्दूल, १५. श्री वी० नटराजन किरन्दूल, १६. श्री दयाशंकर तिवारी किरन्दूल, १७. श्री पुखराज जैन किरन्दूल, १८. श्री चौरसिया साहब किरन्दूल, १६. श्रीमती शशि प्रभा पांडे किरन्दूल, २०. श्रीमती उमा शर्मा किरन्दूल, २१. श्रीमती सुब्रामणी किरन्दूल, २२. श्री शांथा नम किरन्दूल, २३. श्री सतीशचन्द्र मलिक किरन्दूल, २४. श्री एम० राय किरन्दूल, २५. श्री मनोहरलाल जी डिबाई, २६. श्री हरिहर प्रसाद सिंह रीवाँ, २७. श्री रामस्वरूप गौढ़ भरतपुर, २८. श्री अनिल कुमार हैदराबाद, २६. श्री रामचन्द्र जानकीनगर, ३०. श्रीधर आर्य कासिमपुर, ३१. श्री अमरचन्द्र खण्डेलवाल कोसीकलाँ ३२. श्री शशी भूषण श्रेष्ठ शीतलमाझा, ३३. श्री मैकूलाल आर्य गुरसहायगंज, ३४. श्री के० श्री निवास निजामाबाद, ३५. श्री देशराज शास्त्री अम्बाला, ३६. डा० जयनारायण मिश्र कानपुर, ३७. श्री केवलराम आर्य जोधपुर, ३८. श्रीमती भा० ग० चिट्टे गौकर्ण, ३६. श्री सत्यनारायण यादव बांसवेरिया, ४०. श्री सुदर्शन साव बांसवेरियाँ, ४१. श्री श्री राम रूपनारायण महतो समस्तीपुर, ४२. श्री बलबीरसिंह राजपाल बवानी खेड़ा, ४३. श्री गुलाबसिंह बवानी खेड़ा, ४४. वासुदेव आर्य नौतनवाँ बजार, ४५. श्री प्रताप बहादुरसिंह तम्बोर, ४६. श्री माधवानन्द आर्य जीतपुर, ४७. श्री जगदीश नारायण जयपुर, ४८. श्री रामकुमार वी० आर्य बम्बई, ४६. श्री चन्द्रभान विण्डमगंज, ५०. श्री दयालसिंह नैनीताल, ५१. श्री इन्द्रसिंह सोंलकी गुना, ५२. चौ० हुकमसिंह दौराला, ५३. श्री डी० एस० रावत हल्द्वानी, ५४. श्री नरेन्द्रसिंह वर्मा मेरठ, ५५. श्री के० श्री निवास बाँसवाड़ा, ५६. गुरुबचन सिंह चौपड़ा चम्बा, ५७. श्री रामराज आर्य ओबरा, ५८. श्री शिवशंकर शर्मा सागर, ५६. श्री कुंजलाल आर्य शिवपुरी, ६०. श्री शिवनन्दन प्रसाद आर्य पेशोर, ६१. श्रीं तुम्गा भूमधा दोमकांडा, ६२. श्रीराम मोहनसिंह जगदलपुर, ६३. श्री जुगुलकिशोर गोंडा, ६४. श्री सूरजप्रसाद अहोटपुरा, ६५. श्री रायबहादुर भटनागर भोपाल, ६६. श्री कृष्णलाल सहारनपुर, ६७. श्री सन्तप्रसादसिंह आजमगढ़, ६८. श्री भरतसिंह पन्ना, ६६ श्री धर्मपाल आर्य चन्द्रपुर, ७०. श्री लालूराम प्रतापगढ़, ७१. श्रीराज किशोर प्रसाद करण पटना, ७२. श्री जोधसिंह आर्य सीरों, ७३. श्री वैद्य लज्जाराम वर्मा मंधार, ७४. श्री एल० विश्व कर्मा कतरासगढ़, ७५. श्री फूलनसिंह जबलपुर, ७६. श्री विजयेन्द्र आर्य परसा, ७७. श्री पटवारी रामलाल शर्मा गोड़ड़ा, ७८. श्री अमरचन्द खन्डेलवाल, कोसीकलां, ७६. डा० मदन मोहनमेरठ, ८०. श्री प्रेमराम आर्य पूना, ८१. श्री हीरालाल कपूर जीन्द, ८२. श्री प्यारेलाल भटनागर अनूपशहर, ८३. श्री छगनलाल पाटीदार मल्हारगढ़, ८४. श्री रूपनारायण झा हजारीबाग, ८५. श्री बलबीरसिंह इस्माइलपुर, ८६. श्री शशिभूषण श्रेष्ठ शीतलमाझा;

क्रमश:

सभी दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद ! आप भी अपने पवित्र दान से यज्ञ पूर्ण करने में सहयोग प्रदान करें।

राकेश रानी
मंत्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन तो बहुत करता है। इच्छा होती है कि कुछ ऐसा हो कि
संसार के कोने कोने से स्वर गूँजे—

आर्य समाज की जय !
महर्षि दयानन्द की जय !!
वैदिक धर्म की जय !!

इसी भावना से प्रस्तुत है, एक प्रचार पुस्तक
आर्यसमाज स्थापना शताब्दी पर
कम से कम
आप इसकी एक-एक हजार प्रतियां
मंगा कर अपने क्षेत्र में फैलाएं।

शताब्दी तक यह एक करोड़
विभिन्न भाषाओं में बंटे।

आर्यसमाज
के
१०० वर्ष

१८७५ से १९७५ तक
आर्यसमाज ने
राष्ट्र-समाज और संसार
को क्या दिया ?

मूल्य २० पैसे : १५ रु० सैकड़ा

जन-ज्ञान प्रकाशन
१५६७—हरध्यान सिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य पहलवान को स्वर्ण पदक

सलेम (मद्रास) में अभी हाल ही में सम्पन्न हुई चतुर्थ अखिल भारतीय ग्रमीण खेलकूद प्रतियोगिता में ग्राम बांकनेर (दिल्ली) के बाल पहलवान ऋषिप्रकाश ने ७० कि० भार में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। पहलवान के पिता श्री मांगेराम एम० ए० ने बच्चों के निर्माण का सराहनीय प्रयास किया है।

चित्र में प्रो० शेरसिंह केन्द्रीय राज्यमन्त्री संचार विभाग विजयी पहलवान को पारितोषिक प्रदान कर रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले की पूज्य माता श्रीमती निहाल देवी जी का ११० वर्ष की आयु में ५ मई को अमृतसर में देहावसान हो गया। आप कर्मठ, धर्मपरायण और सत्यनिष्ठ देवी थीं। आपने हैदराबाद के सत्याग्रह और हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल यात्राएं कर साहस और वीरता का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया था।

हम दिवंगत आत्मा को सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। प्रस्तुत चित्र में ला० रामगोपाल जी संसद् सदस्य बनने के पश्चात् अपनी माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं।

सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद-भाष्य का मूल्य ३० अप्रैल से १२४) होगया है।

जन-ज्ञान के जो सदस्य अभी तक भी वेद-भाष्य के सदस्य नहीं बने हैं उनके लिए विशेष रियायत : वे १०१) भेजकर वेद भाष्य के सदस्य बन सकते हैं। जन-ज्ञान के प्रत्येक परिवार में वेद भाष्य होना ही चाहिए। —सम्पादक

क्या आप अपने परिवार में प्रभु की अमर वाणी वेद नहीं लाएंगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम किसी भी वर्ग विशेष के विरोधी नहीं किन्तु भारत में रहकर भी जो भारत के गीत नहीं गा सकता उस पर विश्वास कैसे किया जाए ?

अराष्ट्रीयता की लहर : जलता हुआ कहर कब और कैसे जाएगा ?

सभी कुछ एक मुसलिम भाइयों के देशद्रोहपूर्ण रवैये से भलीभांति अवगत हैं। जो अतीत में भारत को दासता की चक्की में पिसने के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार रहा है। यह बात अभी सभी को याद होगी कि उनके सर्वाधिक समर्थित संगठन मुसलिम लीग ने अंग्रेजों से सांठ-गांठ कर मातृभूमि का बंटवारा कराया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तक को यंग इण्डिया (१९-५-२४) में स्वीकार करना पड़ा कि **"मुसलमान प्रकृति से धौंस देने वाला होता है और हिन्दू होता है बुजदिल !"**

१—समस्या

केरल के भूतपूर्व राज्यपाल श्री अजितप्रसाद जैन ने अपने एक वक्तव्य में इस बात का उल्लेख किया था कि सन् १९६२ में चीनी आक्रमण के दौरान मुसलमानों ने तेजपुर खाली नहीं किया था, जबकि हिन्दू आबादी चीनियों के खौफ से सिर पर पैर धर कर भागी थीं। श्री जैन ने इसी संदर्भ में यह भी बताया कि कहा जाता है, तेजपुर के मुसलमानों ने उलटे प्रशासन की विफलता पर वहां पाकिस्तानी झण्डे तक फहराये थे और आक्रमणकारियों का मुक्ति सेना के सदस्यों के रूप में स्वागत करने हेतु जुलूस निकाले थे। मुसलमानों के हाल के कारनामे, खासकर जो पूर्वी पाकिस्तान से १० लाख हिन्दुओं के भाग कर आने तथा अलीगढ़ विश्वविद्यालय काण्ड से सम्बंधित हैं, हमारे सामने हैं।

भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मुहम्मद अली करीम भाई चागला, बिहार के स्वर्गीय मन्त्री श्री अब्दुल कयूम अंसारी तथा संसत्सदस्य आबिद अली ने तो स्वर्गीय "राष्ट्रवादी मुसलिमों" तक के रवैये पर असंतोष व्यक्त किया है। समाचार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्रों में प्रकाशित एक खबर के अनुसार बिहार के एक भूतपूर्व मुसलमान मन्त्री श्री ए० ए० एम० नूर ने पटना में कहा था कि "शिक्षित और आभिजात्य मुसलमानों में से ६० प्रतिशत साम्प्रदायिक हैं।" सन् १६३२ में वरिष्ठ कांग्रेसी मौलाना आजाद एवं डाक्टर अंसारी तक ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत पर लादे गए प्रतिक्रियावादी साम्प्रदायिक निर्णय के संबंध में कांग्रेस को तटस्थ रहने की घोषणा के लिए बाध्य किया था, जिसके परिणामस्वरूप महामना पंडित मदनमोहन मालवीय आदि ने कांग्रेस से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था।

दुश्मन हमारे दरवाजे पर ही है। यदि समस्या को नहीं सुलझाया गया तो अनेक बलिदानों के बाद अर्जित अपनी कीमती आजादी को हम बात की बात में गंवा सकते हैं। हमारी सेनायें सीमा पर व्यस्त होंगी और देश के भीतर विध्वंसात्मक एवं पंचमांगी कार्रवाइयां जोर पकड़ सकती हैं। 'समय से चेते तो जग जीते" कहावत के अनुसार हमको चाहिए कि हम ऐसी खतरनाक स्थिति आने से पहले ही समस्या का कोई न कोई हल ढूंढ़ निकालें।

हमको इस समस्या पर ठंडे और खुले मस्तिष्क से विचार करना होगा। आखिर भारतीय मुसलमान हमारे भाई ही तो हैं! भारत की जाति-संश्लेषण रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इन मुसलमानों में ६८ प्रतिशत ऐसे हैं, जो हिन्दू धर्म को छोड़ कर बाद में इस्लाम के अनुयायी हो गए थे। अतः वे न केवल भारतीय हैं वरन् हिन्दू भी थे। धर्म परिवर्तन से पूर्व वे भी हम हिन्दुओं के समान ही देशभक्त थे। परन्तु परधर्मी हो जाने के बाद से उनमें कुछ ऐसा परिवर्तन आ गया कि वे भारत के मीठे जल और स्वादिष्ट भोजन के अतिरिक्त हर भारतीय वस्तु से घृणा करने लगे। स्पष्टतः धर्म परिवर्तन-प्रक्रिया में निश्चय ही कोई मूलभूत त्रुटि रही होगी।

यह सोचना गलत है कि मुसलिम दृष्टिकोण विदेशी इसलिए है क्योंकि इस्लाम धर्म विदेशी भूमि उद्भूत था। चीन और जापान ने भारत के बौद्ध धर्म को अपनाया तो पर वहां के लोगों ने अपने देश से प्यार करना न छोड़ा और न ही वे देश, भारत-समर्थक बन गए। चीन एक बौद्ध देश होते हुए भी भारत-विरोधी और पाकिस्तान हितैषी है। ईसाई धर्म का उद्गम-स्थल फिलस्तीन है, पर अंग्रेज और रूसवासी उसको अपनाकर भी भूमि से प्यार करते रहे। ठीक यही बात फारस एवं तुर्क आदि इस्लामी देशों के साथ हुई। अतः सर्वप्रथम हमको इस बात की जांच करनी होगी कि भारत तथा अन्य देशों में होने वाले धार्मिक परिवर्तनों के स्वरूप में क्या अन्तर था, जो अन्य देशों के विपरीत भारत में इस्लाम के अनुयायी बनने वाले राष्ट्रीयता की भावना से विरत हो गए।

धर्म परिवर्तन बनाम अराष्ट्रीयकरण

वास्तविकता यह है कि भारत में इस्लाम-प्रचार के मूल में तुर्कों की राजनैतिक चाल छिपी थी। उनका उद्देश्य मजहब का प्रचार और प्रसार नहीं, वरन् भारत में एक ऐसा वर्ग पैदा करना था, जो भारत के शोषण में सदैव उनकी मदद करता रहे। उनकी नीति भी ब्रिटिश शासकों की तरह ही "विभाजित करो और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शासन करो" वाली थी। अतः अपने इन राजनैतिक इरादों की पूर्ति के लिए तुर्कों ने धर्म-परिवर्तन के साथ-साथ भारत में और भी बहुत से परिवर्तन आरम्भ कर दिए जिससे परिवर्तितधर्मियों का स्थानीय भूमि, वहाँ की संस्कृति और आचार-विचार से कोई वास्ता न रह जाए! इस प्रकार धर्म परिवर्तन के बाद उन्होंने दूसरा परिवर्तन नामों में किया। इस्लाम धर्म अंगीकार कर लेने के बाद एक हिन्दू का नाम बदल कर फारसी शैली पर रख दिया गया। इस महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का प्रयोजन यह था कि परधर्मी अपने को भारतीय समझना छोड़कर फारस का राष्ट्रिय महसूस करने लगे। कहा भी गया है—"यथा नाम तथा गुण।" बौद्धधर्म चीन गया, परन्तु वहाँ के लोगों के नाम नहीं बदले गए। वहाँ बौद्धधर्म अपनाने का अर्थ वर्त्तमान धार्मिक विश्वासों की कड़ी में एक नए मत को और जोड़ लेना मात्र था। अब भी चीन और जापान में माओवाद, कन्फूशियसवाद और शिष्टोवाद यथावत् प्रचलित हैं। यही बात और देशों में है।

तीसरा परिवर्तन भाषा परिवर्त्तन था। परिवर्तित धर्मियों से हिन्दी या किसी अन्य स्थानीय भाषा के स्थान पर उर्दू सीखने को कहा गया, जो वस्तुतः स्वयं हिन्दी ही है, परन्तु फ़र्क इतना है कि वह फारसी अक्षरों में लिखी जाती है। रूस और चीन में धर्म परिवर्तन के साथ-साथ भाषाएं नहीं बदली गयीं। वे सब बाइबिल आदि धार्मिक ग्रंथों को अपनी ही भाषा और लिपि में पढ़ते हैं। यह उल्लेखनीय है कि इस्लामी भाषा अरबी है, परन्तु तुर्क चूंकि आम तौर पर फारसी का प्रयोग करते थे, अतः उन्होंने अरबी की तुलना में फारसी को ही प्रोत्साहित किया। इससे इस बात की साफ तौर पर पुष्टि हो जाती है कि धर्मपरिवर्तन में उनका निहित उद्देश्य विशेष रूप से राजनैतिक था।

चौथा परिवर्तन सांस्कृतिक था। जो हिन्दू पहले धोती पहनता था, उससे इस्लाम का अनुयायी हो जाने पर पायजामा पहनने और तुक्की रखने को कहा गया। चीनी, जापानी और रूसी सभी अपनी राष्ट्रीय वेश-भूषा को अपनाये हुए हैं। रोमनों और यूनानियों ने ईसाई धर्म को अपनाने के बाद अपनी पुरानी संस्कृति से नाता नहीं तोड़ा। भारतीय संस्कृति को जड़मूल से मिटाने के कुचक्र के बाद पांचवां परिवर्तन इतिहास के सम्बन्ध में किया गया। धर्मपरिवर्तितों ने जामेजाम, सिन्दबाद, हिन्दबाद, अरस्तू, अफलातून, लैला, मजनू, रुस्तम, सिकन्दर आदि की बातें शुरू कीं। यहां तक कि आततायियों का उल्लेख करते समय भी भारतीय मुसलमान रावण और कंस जैसे नृशंसों का नाम न लेंगे। वे हलाकू की बात करेंगे। मजे की बात यह है कि अरस्तू, अफलातून, रुस्तम, सिकन्दर और हलाकू में से कोई भी मुसलमान नहीं था क्योंकि वे मुसलमान काल से पहले के हैं। पर चूंकि वे तुर्कों के हीरो थे, अतः भारतीय मुसलमानों ने भी उनके गीत गाने शुरू कर दिये।

छठा परिवर्तन भौगोलिक परिवर्तन था, जिसने इन परधर्मियों को गंगा, यमुना, हिमालय, काशी आदि से घृणा करना सिखाया। वे कोहेतूर एवं छोटे-छोटे नखलिस्तानों की प्रशंसा करने लगे। स्थानीय भूगोल से नफरत पैदा करने के बाद सातवाँ परिवर्तन उन्होंने समाज में किया, जिसने अन्य सभी मामलों में भारत-विरोधी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भावना को उभाड़ा। स्वदेशी रीति-रिवाजों, उत्सवों, आदतों, स्थानीय कैलेण्डर, यहां तक कि ऋतुपर्वों से भी, जिनका किसी धर्म या मजहब से कोई सरोकार नहीं है उनका सम्बन्ध-विच्छेद करा दिया गया। इस प्रकार इन सातों प्रकार के परिवर्तनों ने इस्लाम धर्म में दीक्षित होने वाले इन हिन्दुओं के दिलों और दिमागों से अपने राष्ट्र और राष्ट्रीयता के प्रति स्वाभाविक प्रेम का नामोनिशान मिटा दिया। बल्कि यह कहना गलत न होगा कि उन्हें राष्ट्रविरोधी बना दिया।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि उक्त धर्म परिवर्तन इस्लाम का प्रसार नहीं था, वरन शोषक को उसके शोषण-कार्य में सहायता देने के लिए भारतीयता-विरोधी कार्य था। ब्रिटिश लोग भारतीयों के बारे में एक मुहावरा कहा करते थे कि "एक कुत्ता दूसरे कुत्ते को फूटी आंखों नही देख सकता परन्तु हर कुत्ता अपने मालिक के प्रति वफादार होता है।" साम्राज्यवादी तुर्कों ने भारतीयों की इसी प्रवृत्ति का फायदा उठाया।

३–धर्म परिवर्तन के बाद चिर उपेक्षा

उपर्युक्त बहु परिवर्तनों में अधिकतर या तो दबाव डालकर स्वीकार कराये गए या फिर परिवर्तन से पूर्व तत्काल ही कोई अस्थायी लाभ का लालच दिखाकर। परन्तु धर्म परिवर्तन के बाद तुर्कों ने परिवर्तितों की उपेक्षा आरम्भ कर दी, क्योंकि वे जानते थे कि हिन्दुओं की रूढ़िवादी प्रथा के कारण, एक बार मुसलमान बन जाने पर, हिन्दू समाज उन्हें दुबारा अंगीकार नहीं कर सकता! तुर्कों के साधन सीमित थे। अतः उन्होंने या तो अपने देशवासियों को फायदा पहुँचाया या फिर केवल उन हिन्दुओं को जिन्होंने उनके साम्राज्यवादी प्रयासों में बाधा न डाली। हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान बनने वाले ये हिन्दू यों ही उपेक्षा के शिकार बने रहे। सम्राटों के दरबारदारों की सूची देखने से तो यह उपेक्षा और स्पष्ट हो जाती है। अलाउद्दीन के खास लोगों में मलिक काफूर और ख्वाजा हमाम थे। ये दोनों ही विदेशी मुसलमान थे। हुमायूं के पास थे बैरम खां, जो एक अफगान थे। अकबर के नवरत्नों में मानसिंह, टोडरमल, बीरबल एवं तानसेन हिन्दू थे और फैजी, अबुल फजल, हकीम हमाम, मुल्ला दुप्याजा एवं अब्दुल रहीम खानखाना विदेशी मुसलमान। जहांगीर के विश्वासपात्र थे आसफजांह एवं औरङ्गजेब के खासुलखास मीर जुमला, जिनमें से कोई भी भारतीय मुसलमान नहीं थे। जागीरों और राज्यों में भी भारतीय मुसलमानों की अपनी न कोई जागीर थी और न राज्य। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर इत्यादि हिन्दू राज्य थे और हैदराबाद, जौनपुर, भोपाल, टोंक, जावड़ा, गुजरात, खानदेश विदेशी मुसलमानों के हाथ में थे।

भारतीय मुसलमानों को केवल साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बनाया गया। उनसे विदेशी मुसलमानों के मकबरों की पूजा करायी गयी यद्यपि मकबरों की उपासना मूर्तिपूजा के सदृश ही है, जो सिद्धान्ततः इस्लाम धर्म के विरुद्ध है। भारत में अजमेर, बहराइच, दिल्ली, पाकपत्तन, नयी दिल्ली, प्रानविलयर (रुड़की), गुलमर्ग, पानीपत तथा मकापुर मुसलमानों के नौ सबसे बड़े तीर्थ माने जाते हैं, परन्तु इनमें से कोई भी किसी भी भारतीय मुसलमान से सम्बन्धित नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कबीर, रहीम, मलिक मुहम्मद जायसी आदि भारतीय मुसलिम संतों के मकबरों क. मुसलमानों द्वारा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। दीनाजपुर के राजा गनेश के पुत्र जलालुद्दीन मुहम्मद शाह को, जो स्वयं किसी वजह से इस्लाम के अनुयायी तो बने ही थे, उन्होंने पूरे पूर्व बंगाल को भी इस्लाम मतावलम्बी बनाया था, अधिकतर मुसलमान जानते तक नहीं हैं और एक भारतीय मुसलमान होने के कारण उनका मकबरा भी उपेक्षित पड़ा है।

४—उपेक्षा के बाद भय

तुर्कों की इस निरन्तर उपेक्षा के बावजूद भारतीय मुसलमान भय के कारण उनके राग अलापते रहे। कालान्तर में धीरे-धीरे यह उनकी आदत में शुमार होता गया कि बाद में वे हर भारतीय वस्तु से घृणा करने लगे जिनमें स्वयं भारतीय मुसलमान भी शामिल हैं। विडम्बना तो यह है कि तुर्कों का शासन समाप्त होने पर वे ब्रिटिश राज्य के समर्थक बन गये और मुस्लिम लीग ने भारत या भारतीय मुसलमानों की परवाह न करके हमेशा तुर्की, फिलिस्तीन एवं मिस्र की आजादी के लिए प्रस्ताव पारित किये। सन् १९४४ में पूर्व बंगाल के भीषण अकाल से १३ लाख मुसलमान काल के ग्रास बन गये पर उसका कलेजा जरा भी न पसीजा, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ उफ भी करती। हां, दूसरे मुस्लिम देशों में अटलांटिक घोषणा पत्र के लागू किये जाने के लिए उसने बार-बार प्रस्ताव पारित किये।

जब अंग्रेज भारत छोड़ने को थे, ये मुसलमान इस परम्परागत अराष्ट्रीयता के प्रभाव में इतने मदान्ध हो गये थे कि उन प्रांतों की मुसलिम आबादी ने भी जो आज कल भारत में है, और जिसके पाकिस्तान में शामिल किये जाने की बात कभी स्वप्न में भी नहीं सोची जा सकती थी, पाकिस्तान बनाने की माँग के लिए मुसलिम लीग के पक्ष में वोट दिया। अंग्रेजों के जाने पर सामान्य तौर से जहां उनको भारत में रह जाने वाले मुसलमानों के हितों की रक्षा के विषय में मांग करनी चाहिए थी, वहाँ उन्होंने अपने हितों की उपेक्षा कर पाकिस्तान बनाने की माँग का ही समर्थन किया। पाकिस्तान के पीछे यदि वे तब इतने दीवाने थे तो उसकी तुलना में अब उनसे भारत के प्रति वफादार होने की आशा कैसे की जा सकती है? क्या कोई यह विश्वास कर सकता है कि "एक बाप अपने बच्चे को दूर फेंक देगा?" उत्तर प्रदेश विधान सभा में १० अगस्त, १९६५ को विधयक श्री काशी प्रसाद मिश्र ने कहा था कि "९० प्रतिशत भारतीय मुसलमान साम्प्रदायिक हैं और पाकिस्तान को अपनी पितृ-भूमि समझते हैं।" इसमें पर्याप्त सत्य है।

ऐसे मुसलमानों को केवल "साम्प्रदायिक" कह कर पुकारना व्याधि की गंभीरता को घटा कर आंकना है। साम्प्रदायिक वह होता है, जो अपने सम्प्रदाय के हितों को देखे। परन्तु उपर्युक्त तथ्य तो इस बात के साक्षी हैं कि भारतीय मुसलमान साम्प्रदायिक न होकर विदेश भक्त हैं। हमें अपने इन भाइयों को उनकी इस विरोधात्मक नागरिकता से उबारना है, जिसकी वजह से वे यहां-वहां, कहीं के भी नहीं रहे हैं। राष्ट्रीय भावना से हीन यह अस्वाभाविक स्थिति उनका बौद्धिक विकास कुंठित कर रही है। जहां हिन्दुओं ने हाल ही में गांधी, रवीन्द्र, नेहरू, जगदीश चन्द्र बोस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राधाकृष्णन् एवं रमन जैसे महान् व्यक्तियों जन्म दिया है, वहां भारतीय मुसलमानों में अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त ऐसी कोई धिभूति नहीं है। पर हाँ, इस बात से हमें अवश्य कुछ सान्त्वना मिलती है कि देश में सर्वश्री चागला, मिर्जा, अली, अंसारी एवं नूर जैसे बहुत से विचारशील और प्रबुद्ध मुसलमान भी मौजूद हैं। भारत के पुनर्निर्माण हेतु हमें उनका पूरा सदुपयोग करना है।

५—समस्या का हल

"हिन्दू-मुसलिम एकता" पिछले ७०० वर्षों से एक प्रमुख समस्या रही है। गुरु नानक, कबीर, बहादुरशाह एवं न जाने और भी कितने लोग इस समस्या का संतोषजनक हल प्रस्तुत करने में असफल हो चुके हैं। महात्मा गांधी की तो जीवन लीला ही इसी समस्या को हल करने के पीछे समाप्त हुई थी। अतः हमको अतीत के अनुभवों से शिक्षा ग्रहण कर ही कोई पग उठाना चाहिए।

इस विषम समस्या को साररूप में पोषण देने वाले तत्त्व हैं—अधिकतर भारतीय मुसलमानों द्वारा भारतीय नामों की अपेक्षा फारसी नामों को पसन्द करना, उर्दू भाषा को प्यार करना क्योंकि वह भाषा फारसी लिपि में लिखी जाती है, उनका फारसी संस्कृति, इतिहास भूगोल एवं सामाजिक जीवन से अगाध अनुराग। इस पर भी वे दावा करते हैं कि उनको भारत से प्रेम है और वे देश के प्रति वफादार हैं। ये दोनों ही बातें परस्पर विरोधी हैं। "इरादे कितने ही नेक क्यों न हों, आचरण विपरीत होने पर उनका कोई अर्थ नहीं होता।" हम उन कोरी मीठी बातों पर जो केवल मात्र नागरिक अधिकारों को बरकरार रखने के उद्देश्य से की जाती है, अब और अधिक विश्वास नहीं कर सकते!

भारतीय मुसलमानों को अराष्ट्रीयता की इस स्थिति से उबारने और उनकी इस स्थिति से देश के लिए उत्पन्न खतरों को स्थायी रूप से दूर करने का एकमात्र उपाय यह है कि सभी भारतीयों, खासकर मुसलमानों और ईसाइयों में इस बात का प्रसार किया जाय कि नाम और भाषा आदि के मामलों में तुर्कों और ब्रिटिशों ने उन्हें किस तरह बुद्धू बनाया है। विश्व में हर जगह स्थानीय संस्कृति को सर्वोच्च महत्त्व प्रदान किया जाता है और कहावत भी है कि "रोम में रोम वासियों की तरह बन कर रहना चाहिए।" पर, खेद की बात तो यह है कि भारतीय भारत में ही रहकर पारसी, तुर्क और अंग्रेज हैं। अपने ही बच्चों द्वारा अपने इस अपमान पर भारतमाता को अपार क्लेश है और वह विलाप कर रही है। आज सबसे जरूरी शिक्षा इन बच्चों के दिल और दिमाग में "जैसा देश वैसा भेष" के महत्त्व को भरना है। भारत की प्रतिरक्षा के लिए भी यह परम आवश्यक है। मुसलमान अत्यधिक भावुक होते हैं। राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो जाने के बाद वे स्वतः मातृभूमि के निरादर का अनुभव करने लगेंगे और धर्म परिवर्तन की आड़ में किये गये अन्य उपर्युक्त उल्लिखित छः परिवर्तनों को त्याग देंगे।

देश में इस विचार धारा को पनपाना चाहिए। इसके लिए मुसलमानों पर दोषारोपण करने के बजाय उनमें विश्वास पैदा करना होगा। निरन्तर प्रचार-प्रसार से भारतीय मुसलमान और ईसाई विदेशियों की चाल-फरेब को समझने लगेंगे और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाद में धीरे-धीरे फिर से अपने नामों को भारतीय शैली के अनुरूप बदलने लग जायेंगे। अपना न सही, तो कम से कम अपने नवजात शिशुओं के नामकरण तो भारतीय शैली पर ही करेंगे। कालांतर में भारतीय रहन-सहन को भी पुनः अपना लेंगे जिसके लिए यह कदापि आवश्यक नहीं कि वे इस्लाम या ईसाई धर्म को भी छोड़ दें। क्योंकि धर्म तो मूलरूप में सभी एक से हैं। इस्लाम भी अच्छा है और मुसलमान भी अच्छे हैं, परन्तु बुरा है अराष्ट्रीयकरण, जिसे निश्चित ही दूर किया जाना चाहिए। हमारा नारा हो कि "भारत को तन-मन से प्यार करो और उसमें अमन चैन से रहो।" हम लोगों ने सिथियन, हूण, सीरियाइयों तथा यूनानियों को इसी आधार पर अपने आप में घुला-मिला लिया था। राष्ट्रीय हित को दृष्टि में रखते हुए आज मुसलमानों और ईसाइयों के साथ भी यही करना है। ऐसा हो जाने पर ये लोग हिन्दुओं के समान देशभक्त बन जायेंगे।

इस कार्य को गति देने के लिए हम सबको सरकार को इस बात के लिए राजी करना पड़ेगा कि वह उन मुसलमानों एवं ईसाइयों के लिए कुछ पद सुरक्षित रखने की व्यवस्था करें जो विदेशीपन त्याग कर पुनः राष्ट्रीयता के रंग में रंगे जाने को तैयार हों। यदि वे पहले से ही नौकरी में हों तो वह (सरकार) उनके वेतनों में कुछ अग्रिम वृद्धि करे। अराष्ट्रीयता सरकारी स्तर पर पैदा की गयी थी, अतः राष्ट्रीयता के संचार में भी सरकार को कुछ सहायक तो होना ही चाहिए। पदों की सुरक्षा एवं वेतन-वृद्धि उन युवकों और युवतियों के लिए भी जरूरी है जो जाति प्रथा को समाप्त करने के उद्देश्य से अन्तरजातीय विवाह करें। इन सभी बातों से भारत में एकता का सूत्रपात होगा और हम एकजुट होकर खड़े होंगे। तब भारत अध्यात्मवाद के माध्यम से एक बार पुनः विश्व का नेतृत्व कर सकने में समर्थ होगा और आणविक विनाश से उसकी रक्षा करेगा।

किसी को इस हल की व्यवहारिकता पर संदेह नहीं करना चाहिए। यदि तुर्क लोग भारतीयों के नाम भारतीय शैली से विदेशी शैली में बदलने में सफलता प्राप्त कर सकते थे तो भारतीयों के ही नाम पुनः भारतीय शैली में बदलना निश्चय ही अधिक आसान है। संविधान (धारा २९) अल्प संख्यकों को केवल "अपनी ही संस्कृति" के अनुरूप आचरण करने की अनुमति प्रदान करता है और फारसी संस्कृति को, जिसे अल्प संख्यकों ने अपना बना लिया है, अपनी संस्कृति की संज्ञा नहीं दी जा सकती। भारत के मुसलमान निःसंदिग्ध रूप से भारतीय हैं। एक शीर्ष मुसलमान नेता, श्री बाकर अली मिर्जा, ने २ सितम्बर १९६५ को लोक सभा में ठीक ही कहा था कि "मुझे ताज्जुब है कि आखिर यह मुस्लिम संस्कृति क्या बला है? ईरान, मोरक्को, हिन्दुस्तान तथा अफगानिस्तान के मुस्लिम धर्म में तो समानता हो सकती है पर उनकी संस्कृति का एक होना कैसे संभव है। आपने यह भी कहा कि असलियत में मूल धारणा ही गलत है। एक अन्य मुसलमान श्री रहमान ने बरेली में एक मन्दिर का निर्माण करा कर, जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्र प्रसाद ने किया था, स्थानीय संस्कृति को ही प्रोत्साहन प्रदान किया। यदि राष्ट्रीय एकता का मूलमंत्र १८ वीं शताब्दी में मराठों और सिखों को ज्ञात होता तो यह परिवर्तन कभी का हो चुकता और हमारी मातृभूमि दो टुकड़ों में न बंट पाती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अराष्ट्रीयता की भावना—अस्पृश्यता, जाति प्रथा, बाल-विवाह आदि सामाजिक कुरीतियों की तरह ही है जो सदुदेश, निरन्तर प्रचार-प्रसार और उपर्युक्त कथित सरकारी संरक्षणों के माध्यम से शनैः शनैः दिन पर दिन दूर होती जा रही है।

तुम्हारा कर्तव्य—

भारत मां तुर्क साम्राज्यवादियों द्वारा मदहोश अपने अपहृत बच्चों को पुनः पाने हेतु तुम्हारी मदद के लिए कातर स्वर में पुकार रही है। तुम दरवाजे-दरवाजे इस लेख में वर्णित विषय वस्तु के बारे में जी खोलकर बातें कर मां की पुकार को साकार करो, तो निश्चय ही अराष्ट्रीयता अपने आप ही निर्मूल होकर मौलिक राष्ट्रवाद को जन्म देगी।

तुम्हें इसके लिए कोई बलिदान नहीं करना है। बस, केवल मात्र अपने बीवी बच्चों, यार-दोस्तों, पास-पड़ोसियों, सहयोगियों एवं सहयात्रियों से इन तथ्यों के बारे में बातचीत करने से मातृभूमि अपनी खोई स्थिति पुनः प्राप्त कर लेने में सफल हो जायेगी। यह निस्सहाय, निराश एवं शोक संतप्त वयोवृद्ध तुमसे ऐसा करने के लिए विनम्र अनुरोध करता है।

ईश्वर तुम्हें इस मिशन में सफलता प्रदान करे। तुम निम्न-हस्ताक्षर कर्ता को लिखकर प्रस्तुत लेख का अंग्रेजी संस्करण और इस विषय पर अन्य साहित्य भी प्राप्त कर सकते हो।

३५१, हालोवे स्कूल मार्ग
सी० एम० ई०
पूना—३१

—भारत मां का एक असहाय पुत्र
और मुसलमानों का सच्चा दोस्त
राधेरमण सक्सैना
(एम०ए०, एल०एल०बी०, डी०एल०एस-सी०)

१२ अप्रैल १९७५ को

आर्य समाज की स्थापना हुए
१०० वर्ष पूरे होंगे।

यह दिन अभी से—उत्साह पूर्वक
मनाने की तैयारी कीजिए!

होली—दीवाली की तरह घर-घर में
यह पर्व मनाया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिकन्दर और साधु

सिकन्दर जब भारत पर हमला करके लौटने लगा तो उसे अपने गुरु की बात याद आई, जिसने कहा था कि भारत के साधुओं से ज्ञान लेते आना।

परन्तु भारत के साधु उसके हाथ आने वाले नहीं थे, एक बगावत में कई साधु पकड़े गए, सिकन्दर ने सोचा 'ये साधु उत्तर देने में बड़े चतुर माने जाते हैं क्यों न इनसे कुछ पूछा जाए; उसने उन सबसे, कहा' हम तुम से एक प्रश्न पूछेंगे, जिसका जवाब सबसे तीखा होगा उसका वध सबसे पहले होगा' साधु दस थे पर सिकन्दर ने नौ साधुओं से सवाल पूछ कर जवाब देने को कहा। दसवें साधु से उसने कहा कि जज बन कर यह बताएं कि किसका जवाब सबसे तीखा है ?

उसने पहले साधु से पूछा कि जीने वालों की संख्या ज्यादा है या मरने वालों की ? साधु बोला मरने वालों की। क्योंकि मरने वाले व्यक्ति मर कर रहते ही कहां हैं ? दूसरे साधु से सवाल हुआ जीव थल पर अधिक पैदा होते हैं या जल में ? साधु ने कहा थल पर। क्योंकि थल का ही एक भाग जल में है जो कि थल पर ही टिका हुआ है। तीसरे साधु से पूछा तुमने जनता को बगावत करने के लिए क्यों उकसाया ? साधु ने कहा 'क्योंकि मैं चाहता था कि अगर जनता जिए तो इज्जत के साथ, मरे तो इज्जत के साथ।'

चौथा प्रश्न और विकट था 'पहले दिन बना या रात बनी ? 'पहले दिन बना, रात से एक दिन पहले,' सिकन्दर ने चिढ़ कर पूछा इसका क्या मतलब हुआ ? तो साधु ने कहा 'असम्भव सवालों का जवाब भी असम्भव ही होता है ;

अब सिकन्दर ने पांचवें से पूछा, किस प्रकार मैं प्रजा का प्यारा हो सकता हूँ ; साधु ने कहा 'शक्तिमान् बनकर, प्रजा को डरा कर नहीं।'

सिकन्दर ने फिर छठे साधु से पूछा 'मनुष्य देवता कैसे बन सकता है ? उत्तर मिला कि ऐसे दिव्य कार्य करके जिन्हें कर सकना मनुष्य के लिए असम्भव है ;

अगला प्रश्न हुआ कि जिन्दगी बड़ी या मौत ? उत्तर मिला जिन्दगी, क्योंकि वह कठिन से कठिन चोट सह लेती है और मौत कुछ भी नहीं सह सकती।

सिकन्दर ने आठवें साधु से पूछा 'आदमी कब तक इज्जत से जीता है ? 'तत्काल उत्तर-मिला, 'जब तक आदमी यह न समझने लगे कि अब जीने से तो अच्छा मर जाना ही है ; सिकन्दर ने नौवें साधु से प्रश्न किया सबसे चालाक जानवर कौन है ? झट जवाब मिला 'जो अपने को आदमी की नजर से न बचा पाए वही बुद्धिमान् है।' सिकन्दर इस जवाब को अपने ऊपर व्यंग समझकर गुस्से से तमतमा उठा, परन्तु वह कसम खाकर चुप रह गया।

इसके बाद दसवें साधु यानी उस समय के जज की ओर मुंह करके सिकन्दर बोला किसका जवाब सबसे तीखा है। जज साधु बोला 'हर एक जवाब एक दूसरे से तीखा है। सिकन्दर के गुस्से का ठिकाना न रहा वह चिढ़ कर दसवें साधु से बोला तेरा जवाब ही सबसे तीखा है, मैं अब तेरा वध सबसे पहले करूंगा। यह कहकर साधु की ओर तलवार लेकर बढ़ा परन्तु उसके साथियों ने उसका हाथ यह कह कर पकड़ लिया कि 'इसके जवाब का पुरस्कार इसका वध नहीं वरन इसकी पूजा है।'

सिकन्दर अपने साथियों के साथ भारतीय साधुओं की बुद्धि की प्रशंसा करता चला गया।

—हकूमत राय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चयनित कविताएँ : नई पुरानी

प्रस्तुत कविताएँ 'चयनित कविताएँ : नई एवम् पुरानी' (१९२३-१९६६) पुस्तक से प्रस्तुत हैं। इसके लेखक हैं श्री राबर्ट पैन वारेन। मूलतः इन्हें पुस्तक के रूप में रेण्डम हाऊस, इन्क. न्यूयार्क, न्यूयार्क द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया था। कापीराइट (C) १९५८, १९५९, १९६३, १९६५ राबर्ट पैन वारेन द्वारा। सर्वाधिकार सुरक्षित

१. नक्षत्रावलोकन

पृष्ठभूमि मात्र है, नक्षत्र मानवीय अवस्था
के लिए,
वे ज्योतित हैं श्यामल मेघ परतों के ऊपर,
और उनसे बरसते हैं धूलि कण ।
नक्षत्रीय स्तब्धता में,
वायु भी निःस्पन्द हो जाती है।
वायु स्वयं से भयभीत है।
जैसे आप उन दीपों में
भयभीत हो जाते हैं,
जब विनाश और ज्ञान बोध ने
एक दूसरे पर घूरा हो विल्लियों के
समान ।
और दर्पण से भी उभर नहीं पाता
मानवीय जीवन का कोई चिह्न ।
उत्तरी ध्रुव प्रदेश की नक्षत्र ज्योति में,
बहुत दूर,
श्वास लेने से वायु भी भयभीत है,
और प्रतीक्षा करती है
क्षीण वातावरण की परतों में,
सिकुड़ी हुई नक्षत्र ज्योति ।
श्यामल आभा में सुदूर
उत्तर में जहां पहले से ही
आच्छादित है हिम
हवा करती है प्रतीक्षा ।
और कह रही है एक बालिका,
तुम नक्षत्रों की ओर नहीं देखते ?
मैंने नक्षत्रों की ओर नहीं निहारा ।
क्योंकि मैं तो जानता ही हूँ कि वे वहां
विद्यमान हैं।
मुझे पता है कि यदि मैंने,
नक्षत्रों की ओर निहारा तो,
मुझे वही जीवन पुनः जीना होगा
जो इन सारे वर्षों तक,
मैं नक्षत्रों को देखते हुए जीता रहा हूँ।
और चीखता रहा हूँ हे 'यथार्थ' !
नक्षत्र मुझे प्रेम करते हैं
मैं उनसे प्रेम करता हूँ।
मेरी यही हार्दिक कामना है कि
वे प्रभु से भी प्रेम करें।
यही तो है मेरी हार्दिक साध ।

२. श्वेत लघु गृह

लघु श्वेत गृह पर पड़ रही है,
जुलाई मास की धूप ।
मैदान है पीतल के तुल्य भूरा व चमकीला
और पीतल के तुल्य ही ऊष्मा के
साथ गा उठता है।
ठहरो ! और मैं यहां खड़ा हूँ,
पहाड़ियां प्रकम्पित हो उठती हैं
और चली जाती हैं दूर
प्रमाद के तुल्य ।
मकान से उभरती है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक बालक की चीख।
मुझे बताओ! अरे!
किस अवस्था में, कहां देखा है
मैंने वह श्वेत लघु गृह,
जिसे मैं अपनी कल्पनाओं में निहारता हूँ?
और कठफोड़वा की चोंच
जिस भांति वृक्ष पर लगे नीले फल से
फोड़ देती है
जो इतना नीला है,
जितना नीला फाख्ता है।
बहुत दूर पर सरिता,
सिकुड़ जाती है लुढ़कते हुए,
तप्त पाषाणों के मध्य, निष्प्रभ।
और मृत प्रतीत होती है
पत्थर से रगड़ खाकर
सर्प द्वारा छोड़ीं गई केंचुली-सी।
समय हीनता की इस चकाचौंध में,
तब वह गृह तैर उठता है
और उससे गूँज उठता है
बालक का चीत्कार।

मान्यवर!

अब रात्रि के ठीक १२॥ बजे हैं। अल्प आय मैं ७॥ बजे से रात्रि के ११ व १२ बजे तक कार्य करना पड़ता है। इस समय के बीच दो घंटे का रेस्ट मिलता है। इस सब के बाद दिल में वेद प्रचार व जन ज्ञान पत्रिका के ग्राहक बनाने की ज्वाला धधकती रहती है।

मैं अपने पढ़ने के बाद जन-ज्ञान और लोगों को पढ़ने को दे दिया करता हूँ। अब मैं देखता जो लोग पत्रिका को पढ़ते हैं। वे मेरे विचारों से सहमत हो जाते हैं। यह मुझे जन ज्ञान पत्रिका का प्रचार व ग्राहक बनाने के लिये एक आसान तरीका मिल गया है। अब देखिये मैं कितने ग्राहक बनाता हूँ। एक साथ तो नहीं मगर एक-एक करके। जब जन ज्ञान पत्रिका के ग्राहक बनेगें तो वेद भाष्य का प्रचार व उसके ग्राहक भी बनेंगे। अभी मैंने एक कालेज के प्रिन्सीपल महोदय से मिला और मेंने वेदभाष्य की पुस्तकों के बारे में पूछा कि आपकी लाइब्रेरी में वेद पुस्तक हैं या नहीं। तो उन्होंने एक या दो वेदों के होने की बात बताई। तब उनसे मेंने कहा लाइब्रेरी के अन्दर चारों वेदों का होना बहुत जरूरी है। इसके बगैर लाइब्रेरी ही अधूरी है। इस बात के कहने से वह मेरी बात से सहमत ही गये अभी कुछ दिनों में अप्रैल के ही अन्दर मनीआर्डर करके भेज देंगे। मेंने उन्हें जन ज्ञान की कई पत्रिका पढ़ने को दीं तो अब मेरे ख्याल से कालेज में यह पत्रिका भी मंगायेंगे। मेरा एक सुझाव भी है। आशा है आप इसे अवश्य मानेंगे। निम्न वाक्य को आप जन ज्ञान हर पत्रिका के Index के नीचे ही प्रकाशित करेंगे वह यह है।

जन ज्ञान पत्रिका के पढ़ने के बाद जन ज्ञान के सदस्य पत्रिका को अपने पड़ोसी व साथी व सम्बन्धी व मिलने वालों को पढ़ने को अवश्य दें। जिससे अधिक से अधिक व्यक्ति लाभ उठा सकें।

इस तरह एक पत्रिका से कई लोग फायदा उठा सकेंगे और ग्राहक भी बनेंगे। अल्प आय होने पर मैं ५) रु० प्रति माह वेद भाष्य के प्रचार व यज्ञ की सफलता के लिये भेज देता हूँ।

कोसी कलां (मथुरा) **—अमर चन्द खंडेलवाल**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानव जीवन का लक्ष्य

—ब्रह्मचारी जगन्नाथ पथिक

मौलाना रूमी ने कहा है कि—तर्क दुनिया, तर्क अकबा, तर्क मौला, तर्क-तर्क—त्याग=परित्याग करो।

अब जब रोग ही न रहा तो औषध का क्या काम ?

ऐसी अवस्था में कई व्यक्ति ऐसी आशंका करते हैं कि इस अवस्था में शुभाशुभ वृत्तियों का सर्वथा अभाव—निरोध होने से आत्मा का चेतन गुण तो नष्ट न हो जाएगा ? और क्या इस अवस्था में इस सूत्र के अनुसार हमारा उद्देश्य जड़ वा उन्मत्तवत् बनने का ही है ? और यदि यह है तो इस योग और यौगिक क्रियाएं करने का क्या प्रयोजन ? क्योंकि यह अवस्था तो विषय सेवन, कुपथ तथा मादक द्रव्य सेवन आदि से भी सुलभ है। परन्तु यहां यह स्मरण रहे कि जब कोई मनुष्य कार्य करते करते, कार्य करने की चेष्टा में सो जाए तो जागने पर कार्य समाप्त करना ही पड़ेगा ; और स्वप्न में भी कार्य करने की उधेड़बुन और व्याकुलता में रहेगा, परन्तु कार्य समाप्ति पर यह अवस्था न रहेगी। ऐसे ही विषय लालसा और लम्पटता से, बुद्धि की क्षीणता से, यदि कुछ काल के लिए बेसुधी वा मूर्च्छा सी हो भी जाए जिससे उसे बाह्य ज्ञान वा कष्ट की अनुभूति न हो तो भी उसे भोग समाप्ति वा भोग समयावधि के समाप्त होने तथा पुर्नजन्म लेने पर, फिर निज संस्कार और वासनाओं के अनुसार कर्म=विपाक भुगतना ही पड़ेगा। परन्तु जो व्यक्ति विषयों में प्रतीत होने वाले सुखाभास के भ्रम को मिटा चुका है, वही उस परम प्रशान्त निश्चिन्तता की अवस्था को पांता है। उसने यह अवस्था ज्ञानपूर्वक स्वेच्छा से प्रयत्न करके उपलब्ध की है, जो अन्य जन साधारण को अपनी बेबसी—विवशता और निर्बलता से सुषुप्ति में क्षणिक तौर पर मिलती है।

जैसे दान की भावना से दिए द्रव्य का, वह चाहे सहस्रों का भी क्यों न हो, सन्ताप नहीं होता; यही नहीं प्रत्युत सन्तोष और हर्ष होता है, किन्तु इच्छा के विरुद्ध एक पैसा खोए जाने का भी खेद होता है, ऐसे ही संसार के सब भोग तथा देहादि नित्य तो हैं नहीं, इन्हें छूटना और छोड़ना तो है ही, यदि ऐसा निश्चय करके इच्छानुसार छोड़ें तो सन्ताप न होगा। यही नहीं, वरन् प्रसन्नता और परितोष होगा कि यह क्लेश परम्परा का क्रम टूटा और छूटा ; इसके विपरीत अनिच्छा से विवशतापूर्वक छुटने पर तो दुःख होगा ही जैसा नित्य मृत्यु का ग्रास बनने वालों को देह त्याग होते समय देखते हैं—

यदात्म तत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं, दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत्
अजं ध्रुवं सर्व तत्त्वैर्विशुद्धं, ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्व पाशैः।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भक्त को केवल सुख की ही स्मृति रहती है।

ज्ञानी को सुख-दुःख दोनों की स्मृति रहती है।

दुःखों से सुरक्षा पाना अर्थात् जगज्जननी की गोद तथा भगवान् को पाना ही जीव का केवल मात्र ध्येय है। इसके अतिरिक्त अन्य सब कार्य व्यवहार बालकों की क्रीड़ा वा पशुओं का चलन है। वर्तमान सभा सोसाइटियां स्वार्थपरायण व्यक्तियों के समूह हैं। ये संसारी जन जो अपना ही कल्याण नहीं कर पाते, वे किसी अन्य का भला करेंगे यह तो दुराशा मात्र है। निकृष्ट रजोगुण से वशीभूत हुए ये विलास-प्रिय जन कर्म में प्रवृत्त होते हैं, जिसे वे भ्रमवश परोपकार का नाम देते हैं और परोपकार समझ बैठे हैं। केवल वीतराग महानुभाव, जिन्होंने आत्म तत्त्व को पा लिया है वे ही परोपकार करने के अधिकारी हैं तथा परोपकार कर सकते तथा करते हैं। अतः वैराग्य के प्रतिपक्ष—विरोध में अथवा वैराग्य के समक्ष—सामने योग की अन्य क्रियाएं नहीं जंचतीं। क्योंकि शारीरिक दुर्बलता तथा रोग पीड़ित अवस्था में, जब अन्य कोई साधन नहीं बन पड़ता, वैराग्य को तो उस अवस्था में भी प्रचुर रूप से बढ़ा सकते हैं।

इच्छामात्र ही कष्ट का कारण होने से हेय है—त्याज्य है—अज्ञानमूलक है। क्योंकि इस इच्छा—आकांक्षा—कामना से मन में क्षोभ और चंचलता होती है जो यथार्थ बोध में बाधक है। हाँ, केवल वैराग्य की ईप्सा इसलिए श्रेष्ठ है कि इसके पश्चात् अन्य इच्छा ही न होगी, कामना उठेगी ही नहीं। शोक—निराशा तथा वैराग्य में और त्याग में बहुत भेद है। प्रायः मनुष्य निराशा—शोक द्वारा त्यक्त अथवा अशक्ति द्वारा अप्राप्य वा असेव्य वस्तुजात को भ्रम से वैराग्य समझ बैठते हैं किसी वस्तु का छुटना वा छोड़ना हमारी विवशता वा अरुचि के कारण भी हो सकता है, जो वैराग्य की परिभाषा में नहीं आता—हां वह प्रकारान्तर में त्याग है। क्योंकि चित्त में जब तक किसी रूप में भी इच्छा घुसी बैठी है, राग छिपा हुआ है—मोह विद्यमान है, ममत्व का व्यापार है, तो फिर वैराग्य कहाँ और कैसा ? पठन-पाठन, और केवल बाह्य योगसाधन, तथा दिखावटी सत्संग से ही वैराग्य नहीं सम्पादित होता—हो जाता—प्रत्युत यह तो अन्दर की लगी से—जो क्षण प्रतिक्षण संसार के कटुतापूर्ण आघात के प्रहारों से व्यथित चित्त को—भगवान् की शरण में पूर्ण वेग से अति शीघ्र पहुँच जाने के लिए आकुल करती रहती है। **सर्वं दुखं विवे किनः**-का यथार्थ अनुभव—विवेक ही परम साधन है, जो मुमुक्षु को भगवान् की ओर दौड़ाता है। यही परम ज्ञान है जिसे पाकर योगी का चित्त चक्षु की भांति दुःख के लेश का भी अनुभव करके—क्लेश से पीछा छुड़ाने को आतुर-सा रहता है।

जब चित्त संस्कार वासनाओं की अधीनता में न पड़कर निष्पक्षता से कार्य ले अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों से तो ज्ञान उपार्जित करे और कर्मेन्द्रियों का आचरण तदनुकूल हो, तभी यथार्थ बोध होना सम्भव है। जैसे कारागार का एक बन्दी—कैदी जेल की अन्ध दुर्गन्ध पूर्ण कोठरी में रहता हुआ वहीं खानपान करने तथा मल मूत्रादि त्यागने को बाधित होता है तो स्वभावतः उसे उस कोठरी से घृणा हो जात है—वा घृणा होने लगती है—ठीक ऐसे ही यदि हम निज देह पर दृष्टि डालें कि यह तो हाड़-माँस-मल-मूत्रादि का पुंज रोगागार, मलस्रावी एक भांडा—पात्र है तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसा विवेचन निज देहगत आसक्ति को न्यून करता जाएगा और इससे निकल भागने की ही इच्छा होगी—न कि इसमें रहने की।

सर्वत्र स्मृति का यथार्थ प्रयोग न होना ही तो अबोध का कारण है। संसार के मुक्त विषयों में तथा भोगों में भी यदि अनुभूत कष्ट की स्मृति को प्रत्यक्ष लाने—उपस्थित करने का अभ्यास कर लिया जाए तो विषयों में प्रवृत्ति ही न होगी। और हम कष्ट में पड़ने से बचे रहेंगे।

अभ्यास समय की आत्म-विस्मृति, जिसकी साधक वृन्द प्रायः इच्छा रखते हैं—दीर्घकाल तक तो रहती ही नहीं, व्युत्थान में पूर्ववत् कष्ट और द्विविधा आ घेरते हैं, क्योंकि शिशु रूप अभ्यास के संस्कार जो वैराग्य के प्रौढ़ संस्कारों से दुर्बल हैं, व्युत्थान के संस्कारों को दबा नहीं पाते, अतः केवल अभ्यास पर ही निर्भर न रहकर—वैराग्य के यथार्थ साधन से ही हम क्लेशों पर विजय पा सकते हैं।

साधक को सदा इस विचार पर दृष्टि रखनी चाहिए कि उसे इस सृष्टि और देह से लाभ ही क्या है? यदि है तो क्या? और कितना? सत्य पूछो तो सर्व-कष्टों का घर वा वृक्ष देह ही है जिसमें आसक्ति बने रहने पर दुखों की कोंपलें फूटती रहती हैं। भूख-प्यास आदि व्याधियां जिन्हें सर्वसाधारण सुख समझते हैं—एक सन्ताप हैं, जिन्हें शान्त करने के लिए समस्त प्राणी समुदाय इतस्ततः व्याकुल परि-भ्रमित है—मारा-मारा फिर रहा है—दर-दर द्वार-द्वार भटक रहा है। यदि भूख प्यास, शीतोष्ण आदि द्वन्द्व न सताएं—संतप्त न करें तो इतना हाहाकार न हो, इतनाश्रमभार और कष्ट किसी को न सहना पड़े। और यदि देह ही न हो तो फिर कहना ही क्या? अतः देहोत्पत्ति तथा उसके कारण पर विचार करके देह प्राप्त कराने वाले कारणों से सुरक्षित रहने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रायः मनुष्य दुःख निवृत्ति को ही सुख मान बैठे हैं, सुख तो दुःख के कारण-भूत—राग—द्वेष आसक्ति—ममत्व—अहंकार की वासनाओं का वैराग्य ज्वाला के द्वारा दग्ध कर देने पर ही प्राप्त होना सम्भव है।

सांसारिक कर्तव्य कर्म का व्यापार तभी तक हमारे लिए आवश्यक है जब तक पर वैराग्य प्राप्त नहीं हुआ, इसके पालने पर सर्व कर्तव्य की इतिश्री है। अथवा है भी वैराग्य प्राप्ति ही कर्तव्य। सर्व प्रकार का राग-मोह-ममत्व-आसक्ति- अहं-भाव वैराग्य प्राप्ति, प्रभु प्राप्ति में बाधक है।

वृत्ति तथा विषयों का दमन भी, उसकी विपरीत भावना की वृत्ति से ही होता है। जो दोष जहाँ से उत्पन्न होता है वहां ही संयम वा सुधार करने से वह नष्टभी हो जाता है—कथन है **विषस्य विषमौषधम्।**

कामनाएं जितनी ही न्यून होंगी, उतना ही मानसिक स्वातन्त्र्य बढ़ेगा। इसलिए जीवन निर्वाहार्थ चिन्ता भी नहीं करनी पड़ेगी, क्योंकि योग क्षेम की पूर्ति भगवान् स्वयं ही करते हैं—यह उनका व्रत है। तथा च देह मिला ही है कृत कर्मों का विपाक भोगने के लिए, तो कर्मफलानुबन्धी भोग तो मिलके ही रहेगा। परन्तु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह तथ्य सदा स्मरण रहे कि भ्रमवश होकर नित्य कर्म—विहित—विधि कर्म कभी न त्यागो। सन्ध्योपासन किसी दण्ड भुगतने के विचार से, यज्ञ होमादि वायु शुद्धि के विचार से नहीं—प्रत्युत शास्त्र आज्ञा—कर्तव्य कर्म—समझकर **परस्परं भावयन्तः** के यज्ञ को ध्यान में रखकर करते ही रहना उचित है। क्योंकि सुकृत करना मानव कर्तव्य है—फल की इच्छा रखना पशु आचरण तथा दुष्कर्म है, क्योंकि फलाकांक्षा दुःख का कारण होने से त्याज्य है।

अन्तःकरण की शुद्धि के लिए गायत्री का जप परम लाभकारी है। जितना भी हो सके करना चाहिए। जप में अर्थ-विचार आवश्यक नहीं; अर्थ पर विचार करने की आवश्यकता तो प्रार्थना के समय है।

विषयों में ज्ञानपूर्वक अरुचि होने से यदि उपरामता आए तो उसका स्वागत करना चाहिए।

सब कुछ योग्यता के अनुसार ही मिलता है। योग्यता वा अधिकार के बिना किसी वस्तु का सम्मान तथा उसकी पहचान नहीं होती। सद्गुरु और सदुपदेश भी अधिकार से ही मिलते हैं। और अधिकार वा योग्यता प्राप्त होती है चित्त की निर्मलता से; निर्मलता मिलती है कामनाओं के परित्याग से।

आत्मा का किसी आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं, कर्मफल भोगानुसार शारीरिक व्यवहार के लिए—सांसारिक व्यवहार परिचालन के लिए ही—नाना नाम—तथा सम्बन्धों के संकेत स्थिर कर रक्खे हैं—यथा माता, पिता, मित्र, पुत्र आदि। ये हानि लाभ के प्रदाता नहीं, हानि लाभ तो निज कर्मों से होता है।

संसार में सुख वा दुःख की खोज करना केवल मानसिक भ्रम है—उन्माद है—पागलपन है। प्रतिकूलता में सुख की आशा रखना क्या बुद्धिमत्ता है? सुषुप्ति वा ध्यानावस्थिति से यह स्पष्ट हो जाता है कि सांसारिक पदार्थों के अभाव में भी सुख मिल सकता है, जो वैराग्य प्राप्ति की पुष्टि करता है।

वस्तुतः आनन्द तो है ही सांसारिक संसर्ग की आसक्ति और विचार—संकल्प विकल्पों के परित्याग में—विचारशून्य अवस्था में।

मृत्यु समय मनुष्य को एक स्वप्न-सा आता है जिसमें उसके जीवन भर के संस्कार उसके सम्मुख आ उपस्थित होते हैं। जैसी स्थिति उस समय चित्त की होती है, वैसी ही जन्म-जाति-आयु-भोग रूप योनि मिलती है।

इन्द्रियाचरण—विषय सेवन का स्वभाव जन्म जन्मान्तरों से इतना दृढ़ हो चुका है कि इच्छा न होने पर भी बलात् प्रवृति विषयों की ओर होती है और हमें विषय ग्रहण करने में प्रयत्न नहीं करना पड़ता। मन के इस स्वभाव को बदलने के लिए, अथवा इस दुरभ्यास को तोड़ने के लिए, इसके विपरीत अभ्यास दीर्घकाल तक करना पड़ेगा तब मन का दुष्ट स्वभाव नष्ट होगा। तब विषयों से हटने पर आत्मा की ओर मन की गति-प्रवृत्ति होगी।

वर्तमान काल को धक्का मत दो—भावी की आशा मत रक्खो—और वर्तमान काल का सदुपयोग करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

गुरुकुल कासारि

खांसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग—किसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि से लाभदायक है।

सेवन विधि—दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाटें।

आंखों के अनेक रोगों के लिए

संसार प्रसिद्ध

भीमसेनी सुरमा

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन

शरीर को बलिष्ठ एवं कान्तिमय बनाता है

शारीरिक क्षीणता एवं फेफड़ों के लिये प्रसिद्ध

आयुर्वेद रसायन

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

पो० गुरुकुल कांगड़ी [सहारनपुर]

शाखा कार्यालय—चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—लक्ष्मीनारायण

स्वास्थ्य रक्षा के पांच नियम

'स्वास्थ्य वृद्धि के पांच नियम' इस वाक्य से यह अनुमान न किया जावे कि इनके अतिरिक्त और किसी रीति से स्वास्थ्य की वृद्धि हो ही नहीं सकती। इससे अभिप्राय यह है कि ये नियम मुख्य हैं और जिस प्रकार वायु बिना जीवित रहना कठिन है, उसी प्रकार इन नियमों के पालन किये बिना पूर्ण स्वस्थ रहना कठिन है।

दूसरा प्रश्न यह होता है कि यदि स्वास्थ्य के लिये नियम हैं तो हम उनसे अपरिचित क्यों हैं। जब पशु पक्षी बिना किसी की सहायता के और बिना किसी शिक्षा के यह जानते हैं कि उनके स्वास्थ्य के लिये कौन सी बातें उपकारी हैं, फिर हम इस पथ से विचलित क्यों हैं? वास्तव में कारण यह है कि प्रकृति ने मनुष्य को वनविहारी बनाया है, पर सभ्यता व ज्ञान ने हममें परिवर्तन कर दिया है। उसने हमें घरों में बन्द कर दिया है, वह हमें कचहरी, फैक्टरी, दुकान इत्यादि जगहों में समय का बहुतसा हिस्सा बिताने पर बाधित करती है। हमारे अधिकतर कार्य ऐसे हैं कि उनमें न तो शारीरिक व्यायाम, न दीर्घ श्वास प्रश्वास की आवश्यकता पड़ती है।

हमें स्वास्थ्य के नियमों की शिक्षा इसलिए ग्रहण करनी चाहिये कि जीवन-चर्या में हम प्राकृतिक नियमों से विचलित हो गये हैं और उस अभाव की पूर्ति के साधनों पर ध्यान नहीं देते हैं। हम वर्तमान सभ्यता से पूर्ण लाभ उठाते हुए भी पूर्ण स्वस्थ कैसे रह सकते हैं यह बताना इस लेख का उद्देश्य है।

शरीर के प्रत्येक अंग को जीवित व स्वस्थ रखने लिये निम्न वस्तुओं की अपेक्षा होती है—(१) वायु, (२) जल, (३) भोजन, (४) व्यायाम, (५) विचार। इन्हीं के सदुपयोग जिन रीति से होते हैं वे ही स्वास्थ्य को लाभप्रद हैं।

(१) **वायु**—संसार में कतिपय उदाहरण पाये जाते हैं जिनसे पता चलता है कि मनुष्य बिना भोजन किये केवल जल, वायु की सहायता से ६० व इससे अधिक दिन भी जीवन निर्वाह कर सकता है। इसी प्रकार बिना पानी पिये हुए भी लोग बड़ी बड़ी अवधि तक जीवन रखने में समर्थ हो सकते हैं; परन्तु एक भी उदाहरण किसी साधारण व्यक्ति का नहीं मिला जो वायु के बिना अपना जीवन ८ या १० मिनट से अधिक रख सके। इससे ज्ञात हुआ कि वायु ही प्राण है और जितनी शुद्ध वायु का सेवन हम करेंगे उतना ही अधिक हम जीवित रहेंगे।

वायु ग्रहण अथवा श्वास कर्म हमारे स्थूल शरीर की एक क्रिया है। इस बात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को ध्यान में रखते हुए कि बालक माता के गर्भ में ही श्वास लेना आरंभ कर देता है। यदि मैं यह कहूँ कि अस्सी प्रतिशत मनुष्य श्वास कर्म की उचित रीति ही नहीं जानते या जानते भी हैं तो उसके पालन में बहुतसी त्रुटियाँ और अशुद्धियाँ करते हैं। पाठक मेरे इस कथन पर आश्चर्य प्रकट करेंगे या संभव है यह कहें कि लेखक को बहुत अभिमान हो गया है।

श्वसन क्रिया में फेफड़ों में वायु का भीतर जाना और पुनः बाहर आना यही दो कर्म हैं। प्रथम कर्म में वायु नासिका द्वारा प्रवेश करती है, जिस कारण छाती अधिक विस्तृत हो जाती है। इस क्रिया को उच्छ्वास कहते हैं; तत्पश्चात् अन्तःस्थित वायु बाहर निकलती है और वक्षस्थल अपनी समान दशा में आ जाता है। इसी को प्रश्वास कहते हैं। उच्छ्वास और प्रश्वास मिलकर एक पूरा श्वास कर्म होता है।

श्वसन क्रिया में सबसे पहले वायु का सम्बन्ध नासिका के दो छिद्रों से होता है। इन छिद्रों द्वारा ग्रहण की हुई वायु का ओषजन भाग रक्त को शुद्ध करनेवाला है और स्वास्थ्य के लिये सबसे अधिक आवश्यक है। इसी से हमारे शरीर के प्रत्येक अवयव व नस नाड़ियों के अन्दर चेतन शक्ति स्थित रहती है और इसके अभाव से जीवन काल का संकोच होता है। जिस प्रकार एक तार के अन्दर स्वतः कोई शक्ति नहीं होती पर यदि उसमें विद्युत् प्रवाह कर दिया जावे तो वह तार के अन्दर एक प्रकार की उष्णता उत्पन्न कर देती है। इसी प्रकार इस ओषजन द्वारा नस नाड़ियाँ, जो शुद्ध वायु के अभाव से अनुपयुक्त व सुप्त पड़ जाती हैं, जीवन प्राप्त करने लगती हैं।

उच्छ्वास फेफड़ों में जाकर रक्त की शुद्धि करता है। स्वच्छ वायु द्वारा शुद्ध हुआ रक्त हमारी नस नाड़ियों में स्वास्थ्य का संचार करता है। परन्तु श्वास यदि स्वच्छ वायु में न लिया जावे तो शरीरस्थ मलिन रक्त शुद्ध नहीं होता। इससे ज्ञात हुआ कि विजातीय द्रव्य मिश्रित वायु जैसे कारबन डाइ ओक्साइड, श्वास द्वारा फेफड़ों में लेना एक ऐसी त्रुटि है जो बड़े बड़े रोग उत्पन्न कर देती है। ऑफिस में काम करने वाले प्रायः इसी कारण दुबले पतले और अस्वस्थ रहते हैं कि वे लोग ऐसे कमरों में रहते हैं जहाँ शुद्ध वायु नहीं पहुँचती और इससे उनके निजी श्वास प्रश्वास से वायु मलिन रहती है।

श्वसन क्रिया में दूसरी त्रुटि यह है कि लोग श्वसन करते समय अन्दर इतनी थोड़ी वायु लेते हैं कि वह फेफड़ों के प्रत्येक भाग में नहीं पहुँच पाती। ऐसे स्त्री-पुरुषों के फेफड़ों के सवा सात करोड़ वायु कोषों में से बहुत थोड़े वायु कोष अपना कार्य करते हैं, जिससे फेफड़े के वे भाग, जिसमें वायु प्रविष्ट नहीं हो पाती, धीरे धीरे प्राण व जीवनशक्ति शून्य हो जाते हैं। फेफड़े की समस्त बीमारियाँ—खांसी, जुकाम, दमा, निमूनिया व हृदय, पेट, अंतड़ियों और गुर्दे की दुर्बलता—सब की उत्पत्ति इसी कारण से होती है। मनुष्य दुष्काल से इतने नहीं मरते जितने प्राण वायु के न मिलने तथा उसको ठीक रीति से न ग्रहण कर सकने के कारण मर रहे हैं।

प्राणियों में देखा जाता है कि जिस जाति के प्राणी शीघ्रता से जल्दी जल्दी सांस लेते हैं उनकी आयु बहुत थोड़ी होतीहै; जैसे कुत्ता, घोड़ा इत्यादि तथा जिस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाति के प्राणी देर देर में श्वसन क्रिया करते हैं वे दीर्घायु होते हैं जैसे कछुआ, हाथी, सर्प इत्यादि। मनुष्यों में स्वस्थ अवस्था में श्वास क्रिया की संख्या आयु पर निर्भर है। स्वस्थ मनुष्य साधारणतया एक मिनिट में सोलह से बीस तक श्वास लेता है। हृदय की धड़कन इससे चौगुनी होती है। इससे स्पष्ट है कि श्वास को शीघ्रता व देर देर में लेने पर जीवन काल निश्चित है। दीर्घ श्वसन का अभ्यासी दीर्घ काल तक स्वस्थ रहता है। इस हेतु हमारे प्रत्येक श्वसन के वायु का परिमाण इतना अधिक व गहरा होना चाहिये जससे वायु फेफ़ड़े की पूर्ण गहराई तक पहुँच कर फेफड़े में स्थित रक्त को शुद्ध कर उस रक्त को शरीर के प्रत्येक भाग में पहुँचा दे।

(२) **जल**—शरीर को शुद्ध जल की अधिक आवश्यकता है, क्योंकि शरीर स्वयं पिचहत्तर प्रतिशत पानी है। दिन भर में कम से कम चार सेर स्वच्छ निर्मल जल अवश्य शरीर में पहुँच जाना चाहिये, नहीं तो विजातीय द्रव्य, विषैले कण और मल इत्यादि शरीर में संचित होकर स्वास्थ्य में बाधा डालेंगे। जल शरीर के बाहरी मल को धोने के लिये भी आवश्यक है। वास्तव में जल शुद्धता का चिह्न है। इसका अधिक मात्रा में उपयोग करना चाहिये, परन्तु निम्नलिखित अवसरों पर जल सेवन करने से हानि होती है :—

(१) भोजन के पश्चात् और अंत में, (२) खाली पेट, (३) व्यायाम करने के पश्चात्, (४) चिकने और खट्टे पदार्थ खाने के पश्चात्, (५) बिना प्यास, (६) नींद आने के समय, (७) सोने से एकदम उठने के समय, (८) पसीने की दशा में, (९) पक्के फल मेवा खाने के पश्चात् (१०) मल त्याग के पश्चात।

(३) **भोजन**—आहार का न केवल हमारे शरीर पर बल्कि मन, बुद्धि और इन्द्रियों पर भी प्रभाव पड़ता है। भोजन के विषय में भोजन में क्या पदार्थ होना चाहिये, कैसे खाना चाहिये, कितना खाना चाहिये और भोजन करते समय मानसिक स्थिति; ये बातें उल्लेखनीय हैं।

भोजन में क्या पदार्थ होना चाहिये यह एक ऐसा विषय है कि इस पर एक मत नहीं हो सकता। आयुर्वेदिक शास्त्रानुसार भोजन के तीन भेद हैं—सात्त्विक, राजस और तामस। सात्त्विक आहार सब से श्रेष्ठ माना गया है। जिन वस्तुओं में सरलता, सुवास, पुष्टि और तुष्टि होती है, जो पचने में हलकी और शक्ति देने में भारी होती हैं उन्हीं को सात्विक आहार में ग्रहण करना चाहिये। आज कल के वैज्ञानिक भोजन के पदार्थों में खाद्य जीवन पर अत्यधिक महत्व दे रहे हैं, जैसा इनके नाम से ज्ञात होता है। ये खाद्य पदार्थ के वे सूक्ष्म कण हैं जो इतनी अल्प मात्रा में होते हैं कि उनको पृथक् करना असंभव है; पर जीवनप्रद हैं। वैज्ञानिकों ने ऐसे दस जीवन खाद्य निकाले हैं, जिनमें से आठ तो पूर्णरूप से स्थापित हो चुके हैं और प्रत्येक के गुण पृथक्-पृथक् हैं।

(४) **व्यायाम**—भोजन के आमाशय में ठीक पचने पर रस बनता है, इसके पश्चात् रक्त बनता है और यह रक्त नियम से नाड़ियों में परिभ्रमण करता है। भोजन को पचाने के लिये व उसमें से रस खींचने के लिये एक प्रकार की गरमी की आवश्यकता है। व्यायाम द्वारा शारीरिक अंगों में गरमी पहुँचती है। दूसरा मुख्य कर्त्तव्य व्यायाम का यह है कि इसके द्वारा शरीर से सम्पूर्ण विजातीय द्रव्य निकल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाने से शरीर में नीरोगता, कार्याकारिणी शक्ति का संचार, पाचन शक्ति की वृद्धि तथा दक्षता, शूरता, तेजस्विता, मनस्विता, चतुरता आदि अनेक गुण प्राप्त होते हैं। व्यायाम से शरीर की सब पेशियाँ पुष्ट होती हैं और उसमें सौंदर्य तथा दृढ़ता आती है। इसी हेतु आगे कुछ व्यायाम क्रियायें दी जाती हैं, जो नवयुवकों में स्फूर्ति और बल का संचार करती हैं और वृद्ध अगों की शिथिलता को दूर करने में बड़ी उपयोगी हैं।

(५) **विचार**—शरीर को स्वस्थ रखने में विचारों का बहुत प्रभाव पड़ता है। आप कैसा ही सात्त्विक भोजन खाते रहें, कितना ही व्यायाम करते रहें पर यदि क्रोधित और चिंतित रहें तो उनमें से एक भी अंग न लगेगी। विचार दो भागों में विभाजित किये जा सकते हैं—बीमारी लानेवाले और स्वास्थ्यप्रद। डर, चिंता, क्रोध, द्रोह, वैर, वैमनस्य आदि के विचार रक्त में विष संचार करते हैं और रोग उत्पत्ति की जड़ हैं। वीरता, शांति, प्रेम, आशा इत्यादि भाव शरीर में स्वास्थ्य और बल की वृद्धि करनेवाले हैं। शुद्ध विचारों द्वारा इच्छा शक्ति के योग से शरीर में दृढ़ता और-शक्ति आती है।

दैनिक व्यायाम क्रियायें

प्रति दिवस प्रातःकाल कम से कम बीस मिनट तक शुद्ध वायु में इन क्रियाओं को करना चाहिये। पहले पेशियों के खिचाव के व्यायाम आरंभ करने चाहियें।

पेशियों को पुष्ट करने के व्यायाम—

(१) सीधे खड़े होकर हाथों को सिर के ऊपर ले जाइये। उंगलियों के बल खड़े होकर जहाँ तक हो सके वहाँ तक हाथों को ऊपर खींचने का यत्न करें। ऐसा खींचने से गुदा और गुह्य इन्द्रिय के पास की नस नाड़ियाँ भी ऊपर खींची जाती हैं और पेट की नाड़ियों पर भी खिचाव पड़ता है।

(२) प्रथमतः एड़ी मिलाकर सीधे खड़े हो जाइये। पाँव सीधे रहें, घुटने टेढ़े न हों और हाथ भी जहाँ तक हो सीधे रखकर दोनों हाथों की उंगलियों से दोनों अंगूठे छूइये। ऐसा करते समय पेट को जहाँ तक खींचा जाये अन्दर अच्छी प्रकार खींचना चाहिये।

(३) हाथों को सिरके ऊपर ले जाकर ऐसा विचार कीजिये मानो रस्सी खींच रहे हैं। दोनों हाथों से उसे दृढ़ता से पकड़ कर उन्हें सीधा ठोड़ी तक लाइये, फिर हाथों को गोलाई में लाकर सामने ले आइये।

(४) सीधा खड़े होकर हाथों को सिर के ऊपर ले जाकर ऐसा मिलाएँ कि बाहें कानों तक सटी रहें। पुनः शरीर को कमर पर से चक्र के समान घुमावें।

(५) पृथ्वी पर पेट के बल लेटकर छाती के दोनों ओर दोनों हाथ रखिये। शरीर कड़ा करके हथेलियों पर और पंजों पर उठिये और लेटिये।

(६) (अ) भूमि पर लेट जाइये, हाथ सिर के पीछे जुड़े रहें, पश्चात् पावों को उठाकर अपने सिर के पीछे पृथ्वी से लगाइये। घुटनों समेत पाँव सीधे सम सूत्र में रहें, पुनः पूर्व दिशा में आ जाइये।

(ब) हाथों को बगल में रखकर शरीर को उठाइये और धीरे-धीरे सिर को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घुटनों से लगाइये और पुनः शरीर को पीछे करते हुए लेट जाइये।

मिश्रित पेशियों की और श्वास की क्रियायें—

(७) सीधे खड़े होकर हाथों को सीधा फैलाइये। हाथों को उठाते हुए और पंजों पर खड़े होते हुए श्वास भीतर लीजिये। तीन की गिनती तक श्वास को रोकिये पुनः जिस प्रकार सीटी बजाते हैं श्वास को तीन बार में बाहर निकाल दीजिये, यहां तक कि फेफड़े पूर्णतया खाली हो जायें। ऐसा करते समय हाथ नीचे आना चाहिये। यह शुद्धि करण व्यायाम है।

(८) पहले की भाँति हाथ फैला कर खड़े हो जाइये, पुनः सीधी बाँह को सिर के ऊपर से घुमाकर उंगलियाँ बायें कान तक लायें। बाईं ओर झुकते समय तीन या चार बार श्वास को लें, जिससे फेफड़े पूर्णतया भर जावें, सीधे होकर वायु को बाहर निकालें; इसी प्रकार सीधी ओर झुकें।

(९) हाथ फैला कर और पाँव थोड़े चौड़े करके खड़े हो जाइये। कमर से आधे घूम कर झुकें यहां तक कि सीधे हाथ की अंगुलियाँ पृथ्वी से छू जावें। झुकते समय सांस को ग्रहण करें और सीधा खड़े होते समय प्रश्वास करें। इसी प्रकार दूसरी ओर करें।

विशेष साधन के व्यायाम

इन क्रियाओं के करने में श्वास लेते समय इच्छा शक्ति से यह विचार करना चाहिये कि साधन प्राप्ति हो रही है:—

(१) थक जाने पर या अशुद्ध वायु में बहुत समय बैठने के पश्चात् शुद्धिकरण क्रिया की जाती है। उसकी रीति यह है कि पूर्ण श्वास लेने पर होंठों को आगे निकालो, जैसे सीटी बजाने में करते हैं, तत्पश्चात् कई बार में वेग से वायु निकाल दें

(२) स्वर और राग सुधारने के लिये—बहुत धीरे धीरे पूर्ण श्वास लें, तत्पश्चात् मुँह खोलकर एक प्रवाह में श्वास निकाल दें।

(३) खांसी, जुकाम और छाती की दुर्बलता के लिये बैठते, उठते, खड़े होतें जब समय मिले ऊपर दी हुई ७ व ८ नंबर की क्रिया करें।

(४) प्लीहा और यकृत् के दोष कम करने को टाँगों में अन्तर रखकर सीधे खड़े होइये। हाथों को जाँघों पर रखकर कमर से शरीर को चारों ओर घुमाइये।

(५) कंधों की पुष्टि और शरीर को सुडौल बनाने के लिये हाथों को कंधों की समरेखा में रख कर सीधे खड़े हो जाइये। अंगुलियाँ छाती पर आ जायें, ऐसा बाहों को अन्दर की ओर कीजिये, फिर बाहों को कंधों की सीध में बाहर फेंकिये और तत्पश्चात् नीचे कर दीजिये। वेग के साथ यह क्रिया की जाये।

(६) दुर्बल शरीर की पुष्टि के लिये—पाँवों में अन्तर रख कर और हाथों को सिर के ऊपर ले जा कर सीधे खड़े हो जाइये, शरीर को जितना हो सके आगे की ओर झुकाइये और टाँगों के बीच पीछे की ओर अंगुलियों से पृथ्वी को छुएँ। एक साथ ऊपर आते समय श्वास लीजिये और हाथ सिर के ऊपर कीजिये।

(७) नींद न आने के लिये—खाट पर सोने से पहले गहरी श्वसन क्रिया कीजिये और लेट कर शरीर को ढीला छोड़ दीजिये। सोते में जैसा गहरा साँस आता है वैसा ही लेते रहिये। अगर तिसपर भी नींद न आवे तो प्रत्येक श्वास प्रश्वास पर आँखें खोलिये और मूंदिये, अवश्य गहरी नींद आयगी। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विज्ञान को सामान्य आदमी से जोड़ने के लिए हिन्दी जरूरी

—डॉ० आत्माराम, भू० पू०
महानिर्देशक, वैज्ञानिक तथा
औद्योगिक अनुसंधान परिषद्

जब भी विज्ञान की बात चलती है तो यह कहा जाता है कि बिना अंग्रेजी के विज्ञान का काम नहीं चलेगा। अब अंग्रेजी ने पिछले २५ सालों में हमारे विज्ञान की जैसी बधिया बिठाई है वह तो हम देख ही रहे हैं। चारों तरफ जैसा हाहाकार मचा हुआ है, खाने पीने की चीजें हवा हो गई हैं, हर चीज की किल्लत है ये सब हमें उस विज्ञान और टैकनोलोजी ने दिया है जो अंग्रेजीदां लोगों की एक तरह से कहें तो जेब में रखा हुआ है। इस जेब तक हिन्दी लिखने, बोलने और पढ़ने वाले सामान्य जन की पहुँच नहीं है। ये सब तो कहने की बातें हैं कि हिन्दी में टर्मिनोलोजी नहीं थी, कि हिन्दी में विज्ञान की पुस्तकें नहीं थीं, ये सब बहाने हैं। अभी पिछले ही दिनों बंगाल के सुप्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी डा० सत्येन बोस का निधन हुआ है। ८० साल के डा० बोस इन दिनों बंगीय विज्ञान परिषद् के माध्यम से बंगला भाषा के विज्ञान साहित्य को समृद्ध करने में लगे थे। जिन दिनों मैं सी० एस० आई० आर० में था, तब की बात है कि मुझे बंगीय विज्ञान परिषद् ने व्याख्यान देने के लिए बुलाया। मुझे कहा गया कि यदि मैं बंगला में बोलूं तो ज्यादा अच्छा हो। मैंने कलकत्ता में रहते टूटीफूटी बंगला सीख तो ली थी, पर मुझे बड़ा संकोच हो रहा था। लेकिन डा० बोस ने मेरा साहस बढ़ाते हुए कहा कि नहीं नहीं तुम जरूर बंगला में ही बोलना। मैं गया और बंगला में मैंने भाषण दिया। उस दिन शाम को आकाशवाणी कलकत्ता ने बंगला में दिया हुआ वह भाषण प्रसारित किया और तब मुझे भी आश्चर्य हुआ कि मैं, वैज्ञानिक अनुसंधान पर एक ऐसी भाषा में जो मेरी मातृ भाषा नहीं थी, अच्छा खासा व्याख्यान दे गया। डा० बोस ने ही नहीं अपितु बंगला के कई साहित्यकारों ने भी इस व्याख्यान की प्रशंसा की। रुड़की में इसी तरह विज्ञान कांग्रेस के अधिवेशन पर 'ऑप्टीकल ग्लास' पर मेरा व्याख्यान कराया गया। डा० सत्यप्रकाश ने कहा कि अभी किसी को ये नहीं कहेंगे कि भाषण अंग्रेजी में नहीं हिन्दी में है। पूरा हॉल भर गया। मैंने बोलना शुरू किया हिन्दी में ही। लेकिन सामने बैठे दक्षिण भारतीय वैज्ञानिक भी अपनी जगह से नहीं हिले। बनारस में विज्ञान कांग्रेस का अध्यक्षीय भाषण भी मैंने हिन्दी में दिया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी को हम विज्ञान के लाभ के लिए अपनाना चाहते हैं यह बात मैं पूर्णतः स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। पिछले ४ मार्च को मुझे कानपुर के हारकोर्ट बटलर टैक्नोलोजीकल इन्स्टीट्यूट में दीक्षांत भाषण देने के लिए बुलाया गया था। मैंने वहाँ कुछ सच्ची बातें कहीं जोकि स्पष्ट है बहुतों को कड़वी भी लगी होंगी। मेरा पूरा जीवन देश में विज्ञान और टैक्नोलोजी के विकास कार्यों में ही बीता है और मुझे सचमुच बड़ा दु:ख होता है जब मैं यह सोचता हूँ कि हमारे एम्प्लायमैंट एक्सचेंजों में विज्ञान के २ लाख स्नातकों के नाम दर्ज हैं और यही नहीं २२ हजार इंजीनियर भी नौकरी के लिए कतार लगाये खड़े हैं और उन्हें नौकरी नहीं मिलती। दूसरी ओर बहुत से कारखानों और फैक्टरियों के संचालक जब मुझसे मिलते हैं तो वे कहते हैं कि उनके यहाँ बहुत जगह खाली हैं जिनके लिए कुशल कारीगर नहीं मिलते। तो एक तरफ तो जगह खाली पड़ी हैं और दूसरी ओर बेकारी बढ़ रही है। अगर हमने अंग्रेजी का सहारा नहीं लिया होता तो हम ऐसे इंजीनियर और ऐसे वैज्ञानिक पैदा न करते जो अपने देश के किसी काम नहीं आ सकते। इस अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की गुलामी करके हमने सिर्फ यह हासिल किया है कि हमारे इंजीनियर और साइंस के ग्रेजुएट अपने देश की समस्याओं से बिलकुल कटे हुए हैं। उन्हें जो किताबें पढ़ायी जाती हैं उनमें लन्दन, न्यूयार्क, बर्लिन और पेरिस की प्रयोगशालाओं में किये हुए अनुसंधान का तो उल्लेख रहता है जबकि इस देश में वैज्ञानिक अनुसंधान का कहीं नाम तक नहीं आता।

मैं नहीं समझ पाता कि अन्तर्राष्ट्रीयता की हवा चलाने का दोष किसको दिया जाये, लेकिन एक बात अच्छी तरह समझ में आती है कि हम अपनी ही भाषा में लिखते पढ़ते तो शायद हम ऐसे वैज्ञानिक या इंजीनियर बना सकते जो देहातों की धूल और गंदगी भरी जिन्दगी को, भूख और गरीबी से जूझती हुई जनता को सही रास्ता दिखा सके। अभी तो हम ऐसे वैज्ञानिक और इंजीनियर हैं जो धूल में पाँव रखते शर्माते हैं—सिर्फ कुर्सी पर बैठना और ऑर्डर देना जानते हैं। ये सब इसलिए हुआ कि अंग्रेजी के सिवाय और कोई भाषा बोलने में हमारा गला दुखता है। यही वजह है कि जिसे देखो वह नौकरी की फिराक में रहता है अपना धंधा करेंगे तो जूतियाँ घिसेंगी, जूते की पॉलिश खराब होगी, कपड़े मैले होंगे, सड़कें नापनी पड़ेंगी। देहातियों और गँवारों के बीच जाकर उनकी बोली में बोलना पड़ेगा।

कई बार मुझे ऐसा महसूस होता है कि हमारे जितने भी विश्वविद्यालय हैं हमारी जितनी अनुसंधान संस्थाएँ हैं, हमारी जितनी भी वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ हैं, ये सबकी सब भारत के लिए नहीं अमरीका, कनाडा, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, फ्रांस और जर्मनी के लिए डाक्टर, वैज्ञानिक और इंजीनियर तैयार कर रहे हैं। विदेशी सहायता से प्राप्त किये गये मूल्यवान् उपकरणों और वातानुकूलित शीश महलों में शिक्षा प्राप्त करके हमारा हर श्रेष्ठ वैज्ञानिक परीक्षा का नतीजा निकलते ही विलायत का वीसा बनवाने की फिराक में रहता है। उसे इस देश में अपनी प्रतिभा के उपयोग का कोई अवसर दिखाई नहीं देता। भूखे नंगों के इस देश में शायद इतने महान् वैज्ञानिकों और महान् इंजीनियरों की जरूरत नहीं। हमें तो टेक्नीशियन चाहिए थे जो इस देश के निर्माण में नींव भर सकते। वे नहीं जो नक्शे तो ऊँचे बनाते, लेकिन खुद जिन्हें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करनी पकड़ना भी नहीं आता।

आखिर विज्ञान और टैक्नोलोजी को हम आम आदमी से अलग करने का यह षड्यंत्र कब तक जारी रखेंगे। समय आ गया है कि जो कुछ अब तक चलता आया है वो आगे वैसे न चले। बदलाव का यह सिलसिला अब ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता। इससे पहले कि जनता उठे और ऊँची ऊँची अट्टालिकाओं में बन्द बैठे वैज्ञानिकों को घसीट घसीट कर बाहर लाये और कहे कि मेरे कस्बे के घंटाघर में १० साल से घड़ी बन्द है इसे चालू करो, यहाँ क्या कर रहे हो। इससे पहले कि देहात और कस्बों में आने वाले विद्यार्थी कक्षाओं में उठ खड़े हों और कहें कि हमें विज्ञान समझाओ, रटाओ मत और इससे पहले कि जनता विज्ञान और टैक्नालोजी के आधार पर इस देश के विकास की योजना बनाने वाले से पिछले २५ सालों का हिसाब मांगे, हमें संभलना चाहिए। तमाम वैज्ञानिक संस्थानों को अपना काम काज हिन्दी में और कम से कम अपनी भाषा में शुरू कर देना चाहिए जनता को बताना चाहिए कि उनकी गाढ़ी कमाई किन प्रयोगों पर खर्च हो रही है और जब जनता से बात होगी तो जनता की भाषा में हो सकती है। विज्ञान के लिए हिन्दी जिस रूप में अपनाई जाये वह जनभाषा के निकट होनी चाहिए। हमारे इलाहाबाद के ही एक विद्वान् श्री गंगाप्रसाद जो कि हिन्दी में विज्ञान साहित्य के सबसे बड़े प्रचारक, सुप्रसिद्ध विद्वान् और लेखक डॉक्टर सत्यप्रकाश (स्वामी सत्यप्रकाश) के पिता थे, उन्होंने भाषा के बारे में एक जगह जो लिखा था, उसका आशय कुछ ऐसा था :

> "कोट में बटन है" इस वाक्य में मुख्य दो शब्द हैं, कोट और बटन-दोनों ही अंग्रेजी के हैं। केवल क्रिया हिन्दी की है। फिर भी शायद ही कोई आदमी इस वाक्य को अंग्रेजी का बतायेगा। स्पष्ट है कि यह वाक्य विशुद्ध हिन्दी का है, क्योंकि इसमें क्रिया हिन्दी की है। अब एक दूसरा वाक्य लीजिए, "चपरासी वान्ट्स बख्शीश"। इस वाक्य की जान है चपरासी और बख्शीश। दोनों ही शब्द अंग्रेजी के नहीं फिर भी वाक्य अंग्रेजी का है। क्यों? इसमें क्रिया जो अंग्रेजी की है। एक और वाक्य लीजिए—'मेरा चैलेंज है मिस्टर, इसमें चैलेंज और मिस्टर दो अंग्रेजी शब्द हैं पर वाक्य हिन्दी का है, क्योंकि इसमें सर्वनाम और क्रिया हिन्दी की है। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी वाक्य की पहचान उस वाक्य की क्रियाओं और सर्वनाम से होती है।

सारांश यह है कि हम आवश्यकता पड़ने पर बेधड़क अंग्रेजी के शब्द इस्तेमाल करें पर वाक्य विन्यास हिन्दी का ही रहे।

"एक मुक्तक"

जड़ में चेतन का संचार असम्भव है।
नीरवता-हलचल का प्यार असम्भव है॥

जो अजन्मा, अभिन्न, सर्व व्यापक है।
उस ईश्वर का अवतार असम्भव है॥

—कन्हैयालाल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बाल संसार

युवराज स्कन्दगुप्त

बात पाँचवीं शताब्दी की है। आर्यावर्त (भारत) पर विदेशी आक्रमणकारी चढ़ दौड़े। यवन, हूण, पल्लव और शक अपने लाखों खूंख्वार सैनिकों को लेकर हमारे देश की सीमाओं को रौंदने लगे थे। ये जातियाँ योरोप और चीन तक को पददलित कर चुकी थीं तो इन्होंने रोम साम्राज्य को भी खंड-खंड कर दिया था। अब ये बर्बर आक्रमणकारी हिन्दुस्थान को भी अपनी विनाशलीला का दृश्य दिखाने के मंसूबे बना रहे थे।

उस समय भारत के शासक थे आर्य सम्राट् कुमार गुप्त। उनके सुपुत्र स्कन्दगुप्त थे उनके उत्तराधिकारी अर्थात् युवराज। उनकी आयु उस समय थी केवल तेरह वर्ष की।

विदेशियों के भारत भूमि पर आक्रमण का समाचार सुना तो यह तेरह वर्ष का बालक बेचैन हो उठा। वह तत्काल ही सम्राट् कुमार गुप्त के मंत्रणा गृह में जा पहुँचा। उसने देखा कि राज्य के सभी प्रमुख सेनापति उपस्थित हैं और युद्ध के सम्बन्ध में वार्तालाप हो रहा है। वह चुपचाप खड़ा इस दृश्य को देख रहा था। उसी समय वहाँ चर्चा चली कि रणभूमि में कौन-कौन शत्रुओं से लोहा लेने जाएँगे?

बालक स्कन्दगुप्त अपने स्थान से आगे बढ़ा और बोल उठा "पिता जी, इस युद्ध में मैं भी भाग लूंगा। कृपया आज्ञा प्रदान कीजिए।"

सम्राट् कुमार गुप्त इस बालक की बात सुनकर अवाक् रह गए। कुछ क्षण बाद बोले "तुम अभी बालक हो युवराज। यह युद्ध बड़ा भयानक होगा मेरे बेटे। इसमें तो हमें मृत्यु से ही लोहा लेना पड़ेगा।"

दृढ़व्रती स्कन्दगुप्त की गंभीर वाणी गूंज उठी "तो क्या बात है पिताजी। तनिक मुझे भी तो मृत्यु से दो हाथ कर लेने दीजिए।"

सम्राट् एकटक स्कन्दगुप्त के मुख की ओर देखते ही रह गए। उन्होंने देखा कि बालक के मुख मंडल पर जहाँ बाल सुलभ कोमलता है, वहाँ वीरता और दृढ़ता के भाव भी उभर रहे हैं। वे अपने सिंहासन से उठे और उन्होंने स्कन्द-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुप्त को छाती से लगा लिया। गद्‌गद हुए सम्राट् युवराज का आलिंगन कर रहे थे।

पाटलिपुत्र से मगध के दो लाख सैनिक पाँच सौ सरदारों के नेतृत्व में वीर गान गाते रण के मारू बाजे जबाते वैदिक पताका फहराते चल पड़े पंचनद (पंजाब) की नदियों और घाटियों में शत्रुओं के रक्त से अपनी प्यास बुझाने के लिए।

गौरवपूर्ण दिन थे वे आर्यावर्त्त के हिन्दुस्थान के। देश और धर्म पर आपत्ति आते ही उसे दूर करने के लिए माताएँ अपने लाड़ले लालों को, पत्नियाँ अपने पतियों को और बहनें अपने माँ जाये भाइयों को सहर्ष रणक्षेत्र में भेजा करती थीं—शत्रुओं को ठिकाने लगाने के लिए या इस प्रयास में अपना जीवन पुष्प चढ़ाने के लिए।

इसीलिए मगध की ये वीर सेनाएँ भी दानवों जैसी बर्बर विदेशी जातियों को छठी का दूध याद दिलाने के लिए नितांत प्रसन्नता सहित प्रस्थान कर रही थीं, रण-भूमि की ओर।

पर्वत मालाओं के पीछे है मध्य एशिया की विस्तीर्ण मरुभूमि। जब तक भारतवर्ष की राज्यशक्ति सुदृढ़ थी मगध की सेनाएँ इसी स्थान पर तैनात रह कर स्वदेश की रक्षा किया करती थीं। किन्तु जब से यह शक्ति दुर्बल हुई, इसका दृढ़ आधार हिला, उसी मरु धरा से सैकड़ों ही नहीं अपितु सहस्रों और लाखों मरुवासी बार बार हमारे देश पर धावे बोलने लगे और धरती को रक्तरंजित करने लगे थे।

× × ×

आज इसी हिममंडित पर्वत माला के उस ओर हूणों की सेनाएँ डेरे डाले पड़ी थीं और इस ओर की हरीतिमायुक्त समतल भूमि पर था मगध की वीर वाहिनी का पड़ाव।

सूर्योदय की वेला, अंशुमाली की किरणों से पर्वतों के हिमाच्छादित शिखर लाल होने लगे। बर्फानी हवा के झोंकों में अपनी सेनाओं के बीच निश्चय और गम्भीर भाव से खड़ा था वीर बालक युवराज स्कंद गुप्त। वह इस दृश्य को बड़ी तन्मयता से देख रहा था। उसके शरीर पर लौह कवच था और हाथों में थी तीक्ष्ण धार वाली तलवार। देखते ही देखते सामने के लाल-लाल हुए पर्वतशिखरों पर काली काली चींटियां सी उभरती दिखाई दीं। ये थे हूण सैनिक।

तत्काल ही आर्य सैनिकों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तलवारें भी म्यानों से बाहर आकर झनझना उठीं और पर्वतमालाओं में गूँज उठा एकउद्घोष "युवराज स्कन्दगुप्त की जय।" उस गंभीर जयघोष को सुनते ही आगे बढ़ते आ रहे शत्रुओं के अश्वों की गति रुक गई।

पर्वत शिखरों पर रण का शंख-नाद हुआ और उसके उत्तर में मागधी सेनाओं ने भी युद्ध का डंका बजा दिया।

स्कन्दगुप्त के नेतृत्व में आर्य सेनाएं आक्रांता हूणों पर टूट पड़ीं। पर्वतीय श्वेत हिममंडित धरा रक्त की सरिता से लाल होने लगी। श्वेत रंग के अश्व पर आरूढ़ राजकुमार स्कन्दगुप्त दानव-से शत्रुओं के लिए महाकाल बने प्रतीत होते थे। उनकी तीक्ष्ण तलवार विद्युल्लता-सी शत्रुओं पर गाज बन कर टूट रही थी और शत्रु दल काई-सा फटता जा रहा था।

विनाश के पुतले हूण आक्रांता महाकाल की सजीव मूर्ति बने स्कन्दगुप्त और उनकी वीर वाहिनी के समक्ष अधिक देर तक न ठहर सके। हूण सैनिकों के घोड़े मुँह फेर कर वापस भाग निकले। उनके खुरों से उठती धूल से रणभूमि में दिन में ही अन्धकार-सा छा गया।

एक बार पुनः जयघोष गूँजा "कुमार स्कन्दगुप्त की जय।" और मगध की विजयी पताका सगौरव फहरा उठी।

और फिर विजयश्री का वरण कर मगध की सेनाएँ लौट पड़ीं पाटलिपुत्र की ओर।

× × ×

बालवीर स्कन्दगुप्त की मान-वन्दना और अभ्यर्थना हेतु सारे आर्यावर्त वासियों में होड़-सी लग गई। मार्ग के सभी ग्रामों में इस विजयी बालनायक का हार्दिक अभिनन्दन सहस्रों लोगों ने किया तो नगरों में विराट उत्सवों का आयोजन हुआ।

तक्षशिला, जालंधर, थानेश्वर (स्थाण्वीश्वर), मथुरा और वाराणसी में दीपमलिका आयोजित हुई तो पाटलिपुत्र में नगर से पांच कोस की दूरी से ही तोरण द्वार बने और सारा मार्ग पुष्पों से सजा दिया गया।

नगर के मुख्य प्रवेश द्वर पर स्वयं सम्राट् कुमार गुप्त और सम्राज्ञी ने अपने पराक्रमी हूण दमनकर्ता वीरपुत्र का स्वागत किया। दूसरे ही दिन सम्राट् कुमार गुप्त ने स्कन्दगुप्त का राजतिलक कर वान-प्रस्थ ग्रहण कर लिया।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्मा कुमारी मत की पोल

श्री पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार, आर्योपदेशक

आज भारत में नये-नये भगवानों और अवतारों की बाढ़ है। उसमें कलियुग की शीघ्र समाप्ति और सतयुग के आगमन का ढिढोंरा पीटने वाला और नारी द्वारा ही शिव दर्शन कराने का ढोंग रचने वाला "ब्रह्मकुमारी" मत भी शामिल है। आज के सारे नकली अवतार—जिनकी देश में बाढ़ सी आयी हुई है—मोक्ष तक का सीधा बिना वापसी का टिकट देने का कारखाना खोले बैठे हैं। पर ब्रह्मकुमारी मत के संस्थापक सिन्ध के दादा लेखराज ने श्वेतवसनावता और नेत्रों को विशेष काजल से कमनीय बनाने तथा नाटक सावन चतुरा कुमारी नायकी आद्र में महिलाओं—विशेषतः युवतियों द्वारा अपने को "त्रिमूर्ति"—परमात्मा, शिव, ब्रह्मा घोषित कर एकमात्र गुरु रूप में पुजवाने का अनोखा ढंग निकाला है। "ब्रह्मकुमारी" मत के सम्बन्ध में कुछ विस्तृत वर्णन करने से पहले इसके संस्थापक दादा लेखराज के पिछले जीवन के सम्बन्ध में कुछ लिखना आवश्यक है।

खूबचन्द कृपलानी से दादा लेखराज :

देश विभाजन से पहले कराची में खूबचन्द कृपलानी नामक अवकाश प्राप्त व्यक्ति ने "ओ३म् मंडली" नाम से एक संस्था कायम की। यही खूबचन्द आगे चल कर दादा लेखराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस "ओ३म् मंडली" नाम की आड़ में दादा लेखराज स्वयं कृष्ण बनकर मंडली की देवियों को गोपिकाओं के साथ रासलीला करता। सिन्ध में इस मंडली का बड़ा विरोध हुआ। कई विवाहिता स्त्रियाँ भी अपने परिवार को छोड़कर इसमें शामिल होने लगीं। यह विरोध इतना प्रबल हुआ कि साधु टी० एल० वास्वानी सदृश जनसेवक धार्मिक व्यक्ति को भी इसके विरुद्ध सत्याग्रह करते हुए जेल यात्रा करनी पड़ी। अन्त में, इस मंडली के संस्थापक पर कराची में अनैतिक कार्यवाही के अपराध में मुकदमा चला। देश के दुर्भाग्य पर दादा लेखराज के सौभाग्य से देश का विभाजन हो गया। अब इस ढोंगी ने आबू पर्वत पर पोकारण भवन में ओ३म् मंडली के बदले "ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय" नाम से नयी संस्था की स्थापना की। देश में इस समय इसकी लगभग ४० शाखाएँ हैं। इस संस्था की यह विशेषता है कि इसमें प्रधान्य स्त्रियों का विशेषतः युवतियों का ही है और शाखाओं की अध्यक्षता और प्रचारिकाएँ महिलाएँ ही होती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्माकुमारी नाम क्यों ?

इसका नाम "ब्रह्मा कुमारी" क्यों है—इसका उत्तर इस संस्था के "साप्ताहिक पाठ्यक्रम का परिचय भाग" के पृ० २० पर निम्न दिया गया है—

"इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में हम जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह चूंकि प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा प्राप्त होता है, इसलिए इसे धारण करने वाले नर-नारी ब्रह्मा कुमार और ब्रह्मा कुमारी कहाते हैं।" जब वह प्रश्न किया कि इस संस्था का नाम "ब्रह्मा कुमारी ही क्यों है, जब कि इसमें पुरुष भी सम्मिलित हैं, तब इसी पत्रक के पृष्ठ २० पर उत्तर दिया गया है—

> "चूंकि इस ज्ञान को धारण करने वालों में अधिक संख्या माताओं-कन्याओं की है, और वही चूंकि अधिक संख्या में मनुष्यमात्र को इस ज्ञान का लाभ दे रहीं हैं, इसलिये इसका नाम "ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय है।"

वस्तुतः असत्य और पाखण्ड पर सभी मत-सम्प्रदाओं में नारियों की संख्या अधिक होती है क्योंकि वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक श्रद्धालु और भावुक होती हैं। पर इस मत में नारियों को प्रधानता देने का मुख्य हेतु स्त्री-सुलभ आकर्षण और सौन्दर्य से स्वत: लाभ उठाना और मनचले लोगों को अपने घेरे में फँसाना है।

व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध नाम :

इस मत के संस्थापक को भाषा का कितना कम ज्ञान है, यह इस "ब्रह्मा कुमारी" नाम से ही पता चल जाता है। यदि दादा लेखराज का अभिप्राय था कि "ब्रह्मा का कुमार या कुमारी"—तो इसका समास होकर नाम होना चाहिए। "ब्रह्म कुमार" या "ब्रह्म कुमारी।" जैसे राजा का कुमार" भाव प्रकट करने के लिए शुद्ध नाम होता है "राज कुमार", "राजा कुमार" नहीं। इसी प्रकार "ब्रह्मा कुमारी" तो नाम ही अशुद्ध है। जिस व्यक्ति को भाषा के इस सामान्य नियम का ज्ञान नहीं, वह अध्यात्म विद्या के गहन विषयों को कहाँ तक समझने की क्षमता रखता है—यह इसी से स्पष्ट हो जाता है।

प्रजापति ब्रह्मा : प्रतिदिन अवतार रूप में :

इस मत की उपर्युक्त प्रामाणिक पुस्तक "साप्ताहिक पाठ्यक्रम का परिचय" के पृष्ठ २४ पर लिखा है कि "स्वयं भगवान् परमधाम से अवतरित हो प्रजापति ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर ज्ञान देते हैं। ब्रह्मा विष्णु शंकर भी पुरियों में वास करते हैं (पृष्ठ ३८)।

यदि ब्रह्मा का लोक या पुरी पृथक् है तो स्वयं भगवान् उसी पुरी से अवतरित होते होंगे। पृष्ठ ५२ पर परमात्मा को जन्म-मरण से पृथक् कहा है, तब उसका अवतार कैसे सम्भव हो सकता है ? पृष्ठ २६ पर कहा गया हैं—"(आपको) आध घंटे के बाद वह ज्ञान सुनाया जाता है जो कि परमपिता शिव प्रतिदिन प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके देते हैं।" इससे स्पष्ट है कि प्रजापिता ब्रह्मा इसी लोक में रहते हैं और परमपिता शिव इसी लोक में अवतरित होकर उसके तन में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रतिदिन प्रवेश करके साधकों को प्रतिदिन दिये जाने वाले ज्ञान का उपदेश अपने मुख से करते हैं (पृष्ठ २२)। इसका अभिप्राय यह है कि बेचारे परमपिता को प्रतिदिन के अवतार लेने की भाग दौड़ से बचाया नहीं जा सकता था? कितनी परस्पर विरोधी गप्पें हाँकी गई हैं?

पृष्ठ २५ पर परमपिता ब्रह्मा के अनेक जन्मों का निर्देश किया गया है। इन अक्ल के अन्धों से भला कोई पूछे कि प्रजापिता ब्रह्मा जब इस धरातल पर विद्यमान नहीं होता, तब ब्रह्मा कुमारियों को वह ज्ञान कैसे प्राप्त होता है जो उन्हें प्रतिदिन सुनाया जाना आवश्यक होता है। यदि किसी न किसी रूप में अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा इस भूतल पर सदा रहते हैं तो उनका निवास इस पृथ्वी को ही मानना होगा, पृथक् लोक मानने की क्या आवश्यकता है? क्या वे अपने लोक में केवल प्रलयकाल में ही वास करते हैं?

अवतार का माध्यम नारी ही--पुरुष नहीं :

वस्तुतः बात यह है कि दादा लेखराज यह समझते थें कि वह इस पृथ्वी पर सदा अजर-अमर रहेगा और जनता को यह कह कर भरमाता रहेगा कि "मैं जो उपदेश दे रहा हूँ, वह आज या इसी समय परमपिता शिव मेरे रूप में अवतरित हो मुझे दे रहे हैं। प्रश्न यह है कि अब दादा साहब की मृत्यु हो जाने पर यह प्रतिदिन का ज्ञान किसके माध्यम से प्राप्त होता है? क्या ब्रह्मा ने कोई नया अवतार ले लिया है या दादा लेखराज मर कर भी अपने उत्तराधिकारी के तन में प्रवेश करके उपदेश दे रहे हैं? क्या यह उत्तराधिकारी कोई महिला शिष्य ही हो सकती है, पुरुष शिष्य को इस अधिकार से सदा वंचित रखा गया है?

इन परस्पर विरोधी और विसंगतीपूर्ण मान्यताओं का तर्कपूर्ण उत्तर ब्रह्मा कुमारियों के पास कोई नहीं है क्योंकि इनका आधार तो अज्ञान पर आश्रित अन्ध-विश्वास ही हैं।

मन और आत्मा एक ही है :

प्रथम दिन के कार्यक्रम में "आप कौन हैं?" (पृ० ३०-३९) विवरण में मन के सम्बन्ध में लिखा है—

"मन स्वयं आत्मा ही के संकल्प अथवा सुख-दुःख के अनुभव का अथवा इच्छा या कामना का नाम है (पृ० ३२) हम पूछते हैं कि सुख-दुःख का अनुभव क्या ज्ञान से पृथक् है? यदि यह ज्ञान ही है तो यह बुद्धि का विषय है न कि मनका। संकल्प इच्छा या कामना क्रिया है। करने वाली क्रिया का नाम मन कैसे हो सकता है? उधर पृष्ठ ३५ पर संकल्प इच्छा या कामना आत्मा को मन कहा है। यहाँ स्पष्ट परस्पर विरोध है। मन संकल्प इच्छा, कामना क्रिया का नाम है अथवा इन क्रियाओं का नाम है।

लेखराज बाबा की गोद में :

इस संस्था की करौल बाग, दिल्ली, शाखा के प्रमुख अधिकारी श्री जे० आर०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आनन्द अपनी उर्दू पुस्तक मेरे अनुभव के पृष्ठ ८ पर लिखते हैं—

"श्री पिता श्री के तन से बाबा ब्रह्मा और दादा ज्योतिर्लिंगम शिव दोनों से रुहानी मुलाकात हुई। उनकी आँखों में एक अजीब कशश थी। देखते ही देखते प्रेम के सागर परमपिता ने ऐसी खेंच डाली की मेरी आँखों में प्रेम के आँसू आ गये। मैं रुक न सका और लपककर इस रूहानी बाप की गोद में चला गया। मैं इस वक्त अपने आपको एक नन्हा सा बच्चा समझ रहा था। बाबा ने बहुत प्यार किया।"

पुरुषों की तरह स्त्रियाँ भी दादा लेखराज की गोद में बैठती थीं। इस सम्बन्ध में श्री जे० आर० आनन्द कहते हैं—

"इस संस्था में आने वाले प्रत्येक ब्रह्म कुमार व ब्रह्म कुमारियाँ अपने आपको दादा जी की गोद का बच्चा समझती हैं। अपनी मर्जी से ब्रह्मा कुमारियाँ दादा की गोद में नहीं जातीं, वरन् उनके तेज से प्रभावित होकर उनकी गोद में चली जाती हैं। (हिन्दी टाइम्स, साप्ताहिक, दिल्ली, १५ जुलाई ६१ पृष्ठ १४)

आलिंगन से भी :

इतना ही नहीं, ब्रह्मा कुमार भी ब्रह्मा कुमारियों का आलिंगन करते हैं। ब्रह्मा कुमारियों को ही क्यों, यह ब्रह्मा कुमार मातेश्वरी तक को नहीं छोड़ते। श्री आनन्द कहते हैं—

"जब मैंने मातेश्वरी का आलिंगन किया तो मुझे किसी प्रकार का रोमांच नहीं हुआ।"

(हिन्दी टाइम्स, दिल्ली १५ जुलाई १९६१, पृष्ठ १४)

पर पुरुष और पर स्त्री का परस्पर चुम्बन वा आलिंगन भारतीय मर्यादा के सर्वथा विपरीत, घृणित और निन्दनीय है। पर नारी का स्पर्श तक पाप कहा गया है और चुम्बन तो, निश्चय ही, व्यभिचार प्रेरक है। ब्रह्मा कुमार और ब्रह्मा कुमारियों का इस प्रकार का व्यवहार वाममार्ग के भैरवी चक्र का ही रूपान्तर है।

अश्लील ग्रामोफोन रिकार्डों के साथ साधना :

इस संस्था में 'साधना' और 'योग' के नाम पर जनता को फँसाने के लिए जो ढोंग चलता है, वह भी अपने आप में अनोखा है। इस तथा-कथित "योग" का समय प्रतिदिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्त और रात्रि का होता है। जिस समय ये लोग इस "योग" में बैठते हैं, तब ग्रामोफोन पर अश्लील और निम्न स्तर के रिकार्ड बजाये जाते हैं। कमरे में लाल प्रकाश होता है—ब्रह्मा कुमार और ब्रह्मा कुमारियाँ मुख्य प्रचारिका की आँखों से आँख लड़ाते हैं। यह प्रचारिका एक विशेष प्रकार का सुरमा आँखों में लगाती है जो इसकी आकर्षण क्रिया में सहायक होता है। सात दिन की इस "साधना" से ही यह "साधकों" को ब्रह्म साक्षात्कार करा देती है। इतना सरल और सुविधाजनक "ब्रह्म साक्षात्कार" ? भला कहीं अन्यत्र मिल सकता है। योगदर्शन में जो अष्टांग योग का इतना लम्बा मार्ग बताया गया है, वह सब तो ब्रह्मा कुमारी मत के अनुसार व्यर्थ हो जाता है। योग दर्शन के शुष्क मार्ग की तुलना में इस मत में "योग" की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आड़ में "भोग" की अनायास ही प्राप्ति हो जाती है।

वेद शास्त्रों को त्याग दो—लेखराज :

दादा लेखराज अपने आपको साक्षात् परमात्मा ही मानते हैं। अपने को ईश्वर सिद्ध करने के लिए इस ढोंगी ने समस्त वेदशास्त्र और प्राचीन ऋषि-मुनि-महात्माओं का सफाया कर दिया है। इसके शब्द हैं—

"अतः यदि मेरे परमार्थिक ज्ञान को स्पष्ट रीति से समझना चाहते हो तथा मेरे साथ अव्यभिचारी एवं अनन्य योग रखना चाहते हो तो पहली बात यह धारण करो कि इन सभी वेदों, शास्त्रों, गुरुओं, महात्माओं आदि की आसक्ति या उनकी स्मृति का भी संन्यास करके, बुद्धि को मुझ एक सर्वज्ञ परमात्मा की ओर लगाओ, स्वयं मुझ ही से शुद्ध पवित्र ज्ञानामृत लो।"

(सच्ची गीता पृ० २३-२४)

भगवान् सजनी और साजन :

इस सम्प्रदाय की एक प्रामाणिक पुस्तक है "भगवान् आया है।" इसमें भगवान् से मिलने की आड़ में कितने कामोत्तेजक और स्त्री-पुरुष के स्वच्छन्द मिलन की प्रेरणाएँ हैं—कुछ नमूने देखिये—

(१) बिठाकर गोद में हमको बनाते वत्स लेते हैं जरा सी बात॥

(पृष्ठ ५०)

(२) बनाने को हमें सच्चा समर्पण माँग लेते हैं।
हमें स्वीकार कर वे वस्तुतः सम्मान देते हैं॥

(पृष्ठ ५१)

(३) लोक लाज कुल मर्यादा का, डुबा चले हम कुल किनारा।
हमको क्या फिर चाहिए, अगर पा सकें प्यार तुम्हारा॥

(पृष्ठ ६६)

सजनियाँ शिव ही उनका एक दिया है।
जिसको हम ने हाथ दिया है॥
हमने शिव को हाथ दिया है।
हमने तुम को हाथ दिया है॥

(पृष्ठ ६६)

अपना सब कुछ नया निराला खान-पान सम्मान॥
नयी प्रीति की रीति निराली, नया ध्यान नव ज्ञान॥

(पृष्ठ २६)

सभी सजनियों का वह साधन जब आ मिलता भोला-भाला॥

(पृष्ठ ३५)

इस "शिव" को हाथ देने और सजनी बनकर "भोलेभाले" से मिलने की दादा लेखराज की शिक्षा ने हजारों घर उजाड़ दिये और कइयों को पतित तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कामी जीवन के गड्ढे में ढकेल दिया। कई परिवार तो इस पतनोन्मुख शिक्षा से बच गये पर अनेक अभी तक इन ब्रह्मकुमारियों के चंगुल में फँसे हुए हैं। उन्हें भी शीघ्र इस कपटी संस्था के वास्तविक रूप का ज्ञान हो जाएगा—ऐसी हम आशा करते हैं।

मैं ही उत्कृष्ट ज्ञानदाता हूँ—बाबा :

दादा लेखराज अपने को अलौकिक और ज्ञान का भंडार घोषित करने में तनिक भी लज्जा व संकोच अनुभव नहीं करता। कितने अभिमान से वह कहता है—

"स्पष्ट है कि जो ज्ञान मैं देता हूँ, वह ज्ञान अवश्य ही मनुष्य आत्माओं द्वारा दिये गये ज्ञान से अर्थात् शास्त्रों के ज्ञान से न्यारा है, वह ज्ञान अन्य कोई नहीं दे सकता।" (सच्ची गीता पृष्ठ १४२)

कहाँ तो उपनिषदों में तपःपूत आत्मज्ञानी पिप्पलाद सदृश ऋषि प्रश्नकर्त्ता ६ ब्रह्मचारियों को, विनम्रता के साथ, यह कहते हैं कि—

"**यदि ह वै विज्ञास्यामः सर्वं वै वक्ष्याय इति**" अर्थात् यदि हमें तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर आता होगा तो हम निश्चय ही तुमको सब बता देंगे।" इसी प्रकार तैत्तिरीय उपनिषद् में गुरुकुल की शिक्षा समाप्त कर संसार में प्रवेश करने वाले स्नातक को उपदेश देते हुए कहते हैं कि—

हे ब्रह्मचारिन् ! हमारे जो अच्छे कर्म हैं, तुम उन्हीं का अनुकरण करना और हमारे निन्दित कर्मों का कभी अनुकरण न करना।"

प्राचीन भारत की इस आर्य परम्परा के सर्वथा विपरीत दादा लेखराज अपने विषय में सर्वथा अभिमान पूर्ण निम्न वाक्य कहते तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं करते—

"अब क्योंकि मैं ही (१) ज्ञान का सागर (२) सर्वशक्तिमान् (३) सभी गुणों तथा दुखों वा अद्भुत भण्डार और (४) निष्पक्ष तथा सम्पूर्ण अनासक्त तथा (५) सभी मनुष्य आत्माओं रूपी सन्तान के कल्याण की प्रेरणा से युक्त (६) स्वयं त्रिलोकी का नाथ, स्वाधीन हूँ, अतः एक मैं ही सभी का कल्याणकारी हूँ।

"मुझे ही विश्वेश्वर नाथ, चक्रवर्तीश्वर और पार्थेश्वर भी कहते हैं क्योंकि मैं ही सृष्टि का मालिक हूँ और पालन करने वाला, चक्रवर्ती राजाओं का भी ईश्वर अर्थात् राज्य भाग्य देने वाला हूँ।" (सच्ची गीता पृ० ६)

अगर दादा लेखराज "सर्वशक्तिमान् ईश्वर" थे तो लम्बे समय तक बिस्तर पर रोगी पड़े, दुःख और विलाप करते क्यों मरे? क्या वह सुख-शान्ति के साथ मृत्यु भी प्राप्त नहीं कर सकते थे ?

सृष्टि की आयु ५००० वर्ष :

ब्रह्माकुमारी मत का एक मुख्य सिद्धान्त इस सृष्टि की आयु के सम्बन्ध में है। इस मत की प्रामाणिक पुस्तक "सच्ची गीता" के पृ० १३८-१३९ पर लिखा है—

"हर एक युग का समय १२५० वर्ष है और इस प्रकार कल्प की आयु ५००० वर्ष है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"अन्य मत जैसे मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि जो मनुष्यात्मा का ८४ लाख योनियों में पुनर्जन्म नहीं मानते वे कल्प की आयु भी करोड़ों वर्ष नहीं मानते।"

"वत्सा, जो लोग मनुष्य सृष्टि के कल्प की आयु करोड़ों वर्ष मानते हैं उन्हें चुनौती दो कि वह सृष्टिचक्र अथवा कल्पवृक्ष जैसा कि मैंने आपको दिखाये और समझाये हैं बनाकर दिखायें। केवल कहने से क्या? उनके पास करोड़ों वर्ष का इतिहास आदि भी तो होना चाहिये और इतनी लम्बी आयु मानने के कारण तथा हिसाब-किताब का ज्ञान भी तो होना चाहिये।"

यह स्थापना सर्वथा कपोल कल्पित है। ज्योतिष के प्राचीनतम ग्रन्थ सूर्य सिद्धान्त के अनुसार सृष्टि को बने १ अरब ९७ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ७५ वर्ष हुए हैं और सृष्टि की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष है। वैज्ञानिकों ने पर्वतों की चट्टानों, पशु-पक्षी और मानव के कंकालों तथा अन्य उनके प्रकार के अनुसन्धानों के आधार पर सृष्टि की आयु लगभग वही मानी है, जो वैदिक सिद्धान्त मानता है। यदि सृष्टि की आयु ५००० वर्ष ही है तो महाभारत युद्ध को हुए अब तक ५०७३ वर्ष हो चुके हैं। ब्रह्माकुमारी मत के अनुसार इस सृष्टि का अन्त होकर नया कल्प प्रारम्भ हो जाना चाहिये था पर इस सृष्टि का अन्त तो हुआ ही नहीं। दादा साहब के अनुयायी बतायें कि यह कल्प लम्बा क्यों हो गया? क्या यह हिमालय केवल ५ हजार वर्ष का है? क्या संसार के समुद्रों और नदियों का प्रारम्भ केवल ५ वर्ष पूर्व ही हुआ है? इस भूमि पर स्थित विशाल जंगल क्या केवल ५ हजार वर्ष की आयु के हैं? आज प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाला बच्चा भी जानता है कि इस पृथ्वी को स्थूल रूप में हुये करोड़ों वर्ष व्यतीत हो चुके हैं पर एक यह हैं, ब्रह्माकुमारियों के दादा लेखराज जो इतनी विज्ञान विरुद्ध गप्प हाँकने का साहस करते हैं। आप जो चुनौती दे रहे हैं, उसे तो एक प्राइमरी पास विद्यालय का छात्र भी चुटकियों में उडा देगा। लेखराज दादा ने सृष्टिचक्र और कल्पवृक्ष का जो चित्र बनाया है जिसमें आकाश प्रलय के मुख में जाता दिखाया गया है वह, वस्तुतः, इनके अपने दिमाग की ही असंगत और असत्यपूर्ण उपज के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

परमात्मा सर्वज्ञ, पर सर्वव्यापक नहीं :

ब्रह्माकुमारी मत का एक अन्य सिद्धान्त भी बड़ा लचर है। 'सच्ची गीता" पृ० १५५ पर लिखा है—

"मेरा नाम शिव रूप ज्योतिर्लिंग और धाम परलोक है। मैं सृष्टि में व्यापक नहीं हूँ। हाँ, मुझे इस सृष्टि का सैद्धान्तिक ज्ञान अवश्य है।" इस मत की पुस्तक "साप्ताहिक पाठ्यक्रम" के पृष्ठ पर लिखा है कि परमात्मा सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् है पर सर्वव्यापक नहीं है। इसकी पुष्टि में युक्ति यह है—

"ज्ञानवान् और ज्ञेय दोनों का भाव एक जितना होना जरूरी नहीं। उदाहरण के तौर पर—किसी कमरे में क्या-क्या पड़ा है, कौन-कौन बैठे हैं—इस बात को जानने के लिए यह आवश्यक नहीं कि जानने वाला मनुष्य भी कमरे जितना बड़ा हो।" (प्रकृत साप्ताहिक पाठ्यक्रम पृ० ३१)

पर यह दृष्टान्त सर्वथा भ्रमपूर्ण है। ज्ञान का न्यून व अधिक होना जगत् की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दृष्टि से नहीं किन्तु उत्कृष्टता वा न्यूनता की दृष्टि से होता है। जैसे, एक समान लम्बे चौड़े दो वस्त्रों का लाल रंग है पर दोनों में, एक ग्राहक दृष्टि से, अन्तर है। वह कहता है कि यह अधिक लाल है और वह कम लाल है। इसका यह अभिप्राय कभी नहीं होता कि अधिक लाल रंग वाला कम लाल रंग वाले की अपेक्षा अधिक स्थान घेरे हुए हैं। स्थान दोनों ने बराबर घेरा हुआ है, केवल रंग के हलकेपन व गाढ़ेपन का भेद है। एक और उदाहरण लें। दो एक समान गिलासों में बराबर रखा दूध एक अधिक गर्म और दूसरा कम गर्म है। तो क्या अधिक गर्म दूध ने अधिक स्थान घेरा है? नहीं, केवल गर्म होने की न्यूनता-अधिकता है। इसलिए आत्मा परमात्मा को एक देशी कहते हुए सर्वज्ञ भी कहना मूर्खतापूर्ण है। यह सामान्य नियम है कि जिस पदार्थ की सत्ता जितने देशकाल तक सीमित होती है। उसके गुण भी उतने ही देशकाल तक सीमित होते हैं। संसार में एक भी ऐसा पदार्थ नहीं जिसकी सत्ता तो सीमित हो पर उसके गुण असीमित व्यापक हों।

इस सम्बन्ध में कमरे वाला उदाहरण भी भ्रामक है। शरीर की त्वचा उतने ही पदार्थ के शीत-उष्णादि गुणों को जान सकती है जितना अंश किसी पदार्थ का स्वयं को स्पर्श करता है। इसी प्रकार परमात्मा यदि सर्वज्ञ है तो उसका सृष्टि के सब पदार्थों के साथ सम्बद्ध होना, अर्थात् सर्वव्यापक होना आवश्यक है।

जब कोई व्यक्ति एक सिद्धान्त उपस्थित करता है तो उसकी सिद्धि के लिए दृष्टान्त जो दोनों में समन्वय करने वाला हो—उपस्थित करना आवश्यक होता है। इसी प्रकार यदि परमात्मा एक देशी होते हुए भी सर्वज्ञ है तो इसका कोई प्रमाण और दृष्टान्त भी उपस्थित करना चाहिये। पर ऐसा कोई दृष्टान्त नहीं जिसमें कोई सर्वज्ञ हो और वह एकदेशी हो। इसके विपरीत, आत्मा आत्मज्ञ होते हुए एकदेशी है—यह दृष्टान्त स्पष्ट है। इसलिए ब्रह्माकुमारी मत का परमात्मा को एकदेशी मानते हुए 'सर्वज्ञ' और 'सर्वशक्तिमान्' कहना शब्दाडम्बरमात्र है। यदि परमात्मा सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है तो उसे सर्वव्यापक मानना ही होगा—अन्य कोई चारा नहीं है।

क्या ब्रह्म एकदेशी है?

आत्मज्ञ एकदेशी जीव बिना बाह्य साधन के किसी दूसरे पदार्थ को नहीं जान सकता। इसी प्रकार यदि परमात्मा भी एकदेशी है तो उसे सब जीवात्माओं के कर्म और ब्रह्मा को जानने के लिए बाह्य साधन की आवश्यकता होगी। तब परमात्मा सर्वशक्तिमान् कैसे रहा? इसीलिए परमात्मा को एकदेशी मानते हुए ईसाई, मुसलमान और पौराणिकों को ईश्वर के सहायक ईसा, मुहम्मद, देवदूत या अवतारों की कल्पना करनी पड़ती है। ब्रह्माकुमारी मत में भी इसीलिए दादा लेखराज को अवतार मानना पड़ा। परिणामतः परमात्मा एकदेशी स्वीकार करते हुए उसे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् नहीं माना जा सकता।

इसी पुस्तक के पृ० ३९ पर कहा गया है कि परमात्मा को सर्वव्यापक मानने से उसे साँप, बिच्छू, सूअर, उल्लू, धूल, कण, विष्टा आदि में भी मानना होगा। कल्याण करने वाले परमात्मा को इन नीच योनियों में मानना कृतघ्नता है। इसी प्रसंग में पृ० ७७ पर परमात्मा को सर्वव्यापक मानने वालों की दुर्गति दिखाते हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोढ़ी, भार उठाने वाला गधा, कामी स्त्री-पुरुष, कुत्ता, गाय, आदि के रूप में दिखाया गया है।

इन ब्रह्माकुमारी मत वालों को इतना भी ज्ञान नहीं कि स्थूल वस्तु में रहने वाले सूक्ष्म तत्व पर स्थूल वस्तु के गुण दोष का प्रभाव नहीं पड़ता। प्रकाश और अग्नि प्रत्येक पदार्थ में व्यापक हैं। तो क्या वह जिस वस्तु में व्यापक है, उनके गुण-दोषों से भी प्रभावित है। इसलिए वैदिक सिद्धान्त यही है कि प्रभु को कण-कण में सर्वव्यापक जानकर ही भक्त और योगीजन सबसे प्रेम और सभ्यता का व्यवहार करते तथा मन को निर्मल बनाते हैं।

ब्रह्म का परकाया प्रवेश :

ब्रह्माकुमारी मत की प्रामाणिक पुस्तक "प्रकृत पाठ्यक्रम" के पृष्ठ ८८ के अनुसार कलियुग समाप्त हो रहा है, सतयुग के प्रवर्तन के लिए परमात्मा किसी पुरुष के शरीर में प्रविष्ट हो कल्याणमार्ग का उपदेश देंगे। इसलिए इसमें लिखा है—

"परमात्मा के इस प्रकार के जन्म को ही दिव्य जन्म अथवा परकाया प्रवेश कहते हैं। जिस मनुष्य के तन में वह प्रवेश करता है, उसको वह प्रजापिता ब्रह्मा नाम देते हैं। अब वर्तमान समय में परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्म द्वारा वह कर्त्तव्य कर और करा रहे हैं (पृष्ठ ८८-८९) यह प्रजापिता ब्रह्मा इस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक दादा लेखराज हैं—इसका संकेत पृष्ठ १९८ पर इस प्रकार दिया गया है—

ब्रह्म के सन्देश—मुरली :

"प्रजापिता ब्रह्मा के तन में परमपिता परमात्मा शिव प्रवेश करके जो महा-वाक्य कहते हैं, उन्हें वहाँ मुरली कहा जाता है और उसकी लिखित प्रतियाँ यहाँ ... आती हैं।"

इस प्रसंग से स्पष्ट है कि यह सारा प्रपंच दादा लेखराज ने अपने को पुजवाने के लिए रचा है। इसीलिए कलियुग के अन्त और सतयुग के प्रारम्भ होने की कल्पना की गई है। जनता यह समझे कि दादा लेखराज के शरीर में प्रजापति ब्रह्मा प्रवेश कर चुके हैं और उसकी पूजा करने से ही कल्याण हो सकता है।

"संगम युग" की अनोखी कल्पना :

ब्रह्माकुमारी मत में एक "संगम युग" की अनोखी कल्पना की गई है जो कलियुग की समाप्ति और सतयुग के प्रारम्भ के बीच में है। यह संसार चक्र ५००० वर्ष का और प्रत्येक युग १२५० वर्ष का, इस प्रकार ५००० वर्ष पूर्ण होते-होते संगम युग प्रारम्भ होता है। इस सम्बन्ध में "प्रकृत पाठ्यक्रम" में लिखा है—

"यह संगम युग ही वास्तव में अमृत वेला है और ब्राह्ममुहूर्त भी है क्योंकि कलियुग रूपी रात और सतयुग रूपी दिन के इस संगम के समय ही परमात्मा ज्ञानामृत पिलाते तथा आत्माओं को वापिस ब्रह्मलोक में ले जाने (गाइड करने) का कर्त्तव्य करते हैं।"

(पृ० ८९-९०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समीक्षा :

स्पष्ट है कि इस मत का परमपिता शिव ५००० वर्ष के सृष्टिचक्र में केवल एक बार ही ज्ञान का उपदेश इस संगम युग में देता है और आत्माओं को ब्रह्मलोक ले जाता है, शेष ४६०० वर्ष खाली बैठा रहता है। फिर, जब चार युग माने गये, तब "संगम युग" नाम का नया युग कहाँ से आ टपका ? "इसकी अवधि कितनी है—यह भी नहीं बताया गया। अगर इस नये युग की कल्पना करनी ही थी तो चार के बदले पाँच युग ही क्यों न मान लिये ? सच तो यह है भारत की प्राचीन वैज्ञानिक काल गणना के सर्वथा विपरीत यह वेढ़ंगी कल्पना दादा लेखराज के गुरू रूप में आगमन की भूमिका सिद्ध करने के लिए घड़ी गई है। यदि परमात्मा ने ४६०० वर्ष तक मानव को अधर्म की पीड़ा से तड़पाना ही है तो इस से अच्छा तो पौराणिकों का परमात्मा है जो प्रत्येक युग में धर्म क्षय होने पर और बीच में भी अवतार लेता रहता है।

सब साधन दृष्टि शिव में ही लगन

"साप्ताहिक पाठ्यक्रम" पुस्तक के पृष्ठ ११७ पर लिखा है—

"अब जबकि भक्ति, यज्ञ, तप, शास्त्र पाठ, कर्मकांड, हठयोग और लौकिक गुरु करके जन्म जन्मान्तर देख लिये कि हम सतो प्रधान अर्थात् देवता नहीं बन रहे··· आसुरी संस्कारों की जं.ीरों में जकड़ते आये हैं तो अब हमें बुद्धि की लगन इनसे हटाकर एक निराकार ज्योतिस्वरूप परमपिता शिव ही से लगानी चाहिए।"

समीक्षा—ब्रह्माकुमारी मत में भक्ति, यज्ञ, तप, शास्त्रपाठ आदि कर्मों से कोई लाभ नहीं। पर इनसे कोई यह तो पूछे कि वर्तमान में मानव की अधोगति का कारण यह कर्म हैं या इनके मतानुसार कलियुग के प्रभाव के कारण हैं। यदि इन कर्मों के कारण है तो कलियुग का प्रभाव समझना अशुद्ध होगा। और यदि कलियुग का ही प्रभाव माना जाए तो कर्मों का क्या दोष ? कितने ही अच्छे कर्म करो, कलियुग के प्रभाव के कारण वे सब निष्फल ही हैं। फिर, बुद्धि को परमात्मा में लगाने का उपदेश भी व्यर्थ हैं। यदि कहो कि कलियुग समाप्त हो रहा है, सतयुग आ रहा है, यह सन्धिकाल है। इसमें अपने उद्धार का प्रयत्न करना चाहिए। यह कथन भी ब्रह्मा कुमारी मत के विपरीत है। जैसे रात बीतने पर प्रकाश होता है—इसके लिए किसी प्रार्थना व कर्म की आवश्यकता नहीं होती—सभी प्राणी स्वतः अपने कर्म में प्रवृत्त हो जाते हैं, इसी प्रकार सतयुग आने पर सभी मानव स्वतः धर्मात्मा हो जाएंगे। आचरण व श्रेष्ठ कर्म की क्या आवश्यकता ? एक ओर युग के प्रभाव को महत्व देना और दूसरी ओर, ब्रह्माकुमारी मत के अनुसार, शिव भक्ति का उपदेश देना—दोनों परस्पर विरुद्ध है।

सातवें दिन के पाठ में लिखा है इस कलियुगी सृष्टि का वेड़ा डूबते देख वह अपने मन बुद्धि को उससे निकाल कर पहले ही परमपिता परमात्मा की ज्ञान रूपी नाव में अपने को सुरक्षित कर लेता है···इसी स्मृति और स्थिति का नाम योग है। (पृ० १५५)

समीक्षा—क्या इस योग की इसी समय में आवश्यकता है ? यदि ईश्वर की स्मृति और उसमें स्थिति को योग माना जाए। तो इसकी सब युगों में आवश्यकता है केवल कलियुग में ही क्यों ? फिर इनसे पूछो, इस शिव ने द्वापर या कलियुग के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि में शिक्षा क्यों नहीं दी ? क्यों इन आत्माओं को १२००+१२००=२४०० वर्ष दुखी बनाये रखा ? क्या केवल इसलिए कि दादा लेखराज को स्वयं अपने आपको परमपिता कहलाना था ताकि अपने काल का ही महत्व बताया जा सके ?

२१ जन्मों के बाद स्वयं

पृष्ठ १५९ पर लिखा है—"अब यदि मनुष्यात्मा रूपी पुत्र को यह निश्चयात्मक ज्ञान हो कि परमपिता परमात्मा से तो २१ जन्मों के लिए स्वर्ग के सम्पूर्ण सुख शान्तिमय राज्य की प्राप्ति होती है…।"

समीक्षा—इस मत में पहले मनुष्य के ८४ जन्मों की कथा कही गयी। उनमें सतयुग में ८, त्रेता में १२, द्वापर में २१ कलियुग में ४२ जन्म कहे गये (पृष्ठ १२८-१२९) यहाँ २१ जन्मों ने लिए स्वर्गिक राज्य की प्राप्ति मानी है. अर्थात् सतयुग, द्वापर और त्रेता का एक जन्म पर्यन्त। जब यह सम्प्रदाय त्रेता से दु:ख अज्ञान का प्रारम्भ मानता है, तब त्रेता के जन्म स्वर्गिक कैसे होंगे ? फिर यह प्रश्न है कि २१ जन्मों का काल किस युग का स्वीकार किया जाए ? इस सम्प्रदाय की उपर्युक्त गणना के अनुसार १२००÷८=१५० वर्ष का जन्मकाल है सतयुग का, १२००÷१२=१०० वर्ष त्रेता का, १२००÷२१=५० वर्ष २½ मास के लगभग कलियुग का। अब इन विभिन्न युगों का जो जन्मकाल है, उसमें से किस जन्मकाल के बराबर २१ जन्मों का काल स्वर्ग का माना जाए ? लेखक यहाँ बिल्कुल चुप है ? क्या दादा लेखराज ने इस विषय में कोई उपदेश नहीं दिया ?

शिव स्वयं आये हैं

पृष्ठ १३० पर लिखा है—"जब वह यह समझेगा कि अब हमें पवित्र और योग युक्त करने के लिए परमपिता परमात्मा स्वयं आये हैं ?

समीक्षा—यह परमपिता परमात्मा शिव कहाँ से टपक पड़े जो बिन बुलाये आ जाते हैं ? क्या दादा लेखराज ? यदि दादा लेखराज स्वय शिवरूप अवतरित हुए तो अपना आप काम पूरा न करके सतयुग के बीच में ही क्यों मृत्यु को प्राप्त हो गए ? दादा लेखराज ने इस जन्म में जो दु:ख भोगे, वह किसके कर्म फल थे ? परमात्मा को तो दु:ख-सुख सम्बन्ध होता ही नहीं। फिर दादा ने रोगादि पीड़ाएँ और मृत्यु के दु:ख क्यों पाये ?

पृ० १३९ पर लिखा है "अब परमपिता परमात्मा कहते हैं…देखो, मैं अब पवित्र सतयुगी सृष्टि स्थापन करने आया हूँ। आप भी पवित्र रहकर मुझे सहयोग दो तो मैं तुम्हें स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा…।"

समीक्षा—सतयुगी सृष्टि स्थापन करने परमात्मा क्या दादा लेखराज के रूप में आया है ? क्या लेखराज से अधिक शुद्ध, पवित्र, कायविकार से रहित ज्ञानी किसी अन्य पुरुष के रूप में परमात्मा ने अवतार क्यों नहीं लिया ?

ब्रह्माकुमारी मत—परिवार उच्छदेव

ब्रह्माकुमारी मत में एक और दम्भ सिखाया जाता है। वह ब्रह्मचर्य और आहार शुद्धि। गृहस्थ आश्रम में पति-पत्नी ऋतुकालाभिगामी हों—यह तो शास्त्र भी कहते हैं पर इस के अतिरिक्त यदि कठोर ब्रह्मचर्य का पालन किया जाए और सन्तान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
उत्पत्ति के लिए पति-पत्नी का मेल न हो, तब, वह अस्वाभाविक और गृहस्थ धर्म का विनाशक ही होगा। ब्रह्माकुमारियाँ एक ओर तो पति और सन्तान को तिलांजलि देकर ब्रह्मचर्य का ढोंग करती हैं, दूसरी ओर उनमें अनेक ऐसी हैं जो दादा को गोद में बैठाती थीं व ब्रह्माकुमारों के साथ सम्पर्क रखती हैं व रखने के लिए प्रेरित की जाती हैं।

आहार शुद्धि आवश्यक है पर ब्रह्माकुमारी मत में पति-पत्नी भी एक दूसरे के हाथ का भोजन तो नहीं खातीं किन्तु ब्रह्मकुमारों के हाथ से स्वच्छन्द खाती हैं। क्या यह उचित है ?

इस अस्वाभाविक नियन्त्रण और कठोरता का परिणाम यह है कि कई परिवारों का उच्छेद हो गया, गृहस्थ की सुख-शान्ति नष्ट हो गयी, सन्तानों की उपेक्षा हो गयी और दूसरी ओर अनैतिकता को प्रोत्साहन मिला। क्या इसी का नाम शिवदर्शन है ?

"साप्ताहिक पाठ्यक्रम" पुस्तक-जिसके उद्धरण हमने ऊपर दिये हैं, पांडव पवन, माऊन्ट आबू १९३९ से लिये हैं।

इस मत की एक प्रामाणिक पुस्तक—जिसका हम पहले भी संकेत कर चुके हैं—"सच्ची गीता" के पृष्ठ १५५ पर दारा साहब कहते हैं—

दादा को त्रैकालिक ज्ञान

"हाँ, मुझे इस सृष्टि का त्रैकालिक ज्ञान है।"

यह सर्वथा कपोल कल्पित गर्वोक्ति है। यदि आपका त्रैकालिक ज्ञान था तो क्या आप जानते थे कि आपके ब्रह्माकुमारी मत के सम्बन्ध में यह पुस्तक लिखी जाएगी क्या आपको संसार में प्रतिदिन होने वाली भयंकर राजनीतिक घटनाओं, आपके अपने ही शिष्य – शिष्याओं के जीवन की घटनाओं, आपकी अपनी स्वयं की मृत्यु का ज्ञान था ? असत्य आधारित घोषणाएँ करने से कोई लाभ नहीं।

आदिसनातन देवी-देवता धर्म

'सच्ची गीता' के पृष्ठ १५५ पर आप कहते हैं—

"इस धर्म का वास्तविक नाम 'आदि सनातन देवी-देवता धर्म है : श्री सीता, श्री राम. श्री राधे, श्री कृष्ण जी इसी धर्म के थे। इस धर्म की स्थापना मैंने स्वयं ही कल्प (५००० वर्ष) पहले ब्रह्मा द्वारा कराई थी ."

समीक्षा—इस सन्दर्भ की प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्द मिथ्या इतिहास विरुद्ध और सर्वमान्य सिद्धान्तों के विरुद्ध है। भारत के इतिहास की किसी प्राचीन पुस्तक में 'आदि सनातन देवी-देवता धर्म' का उल्लेख नहीं है। हाँ, वैदिक धर्म वेदोक्त धर्म और वेद का अवश्य वर्णन है। फिर श्री सीता और श्री राम से पहले कौन सा धर्म था ? श्री सीता और श्री राम जी वेद धर्म के अनुयायी थे और सन्ध्या यज्ञ करते थे (देखो वाल्मीकिरामायण, बाल कांड)। महाभारत के अनुसार श्रीकृष्ण जी इस वेद धर्म पालक और गृहस्थ में भी संयमी थे। 'राधा' का नाम महाभारत में कहीं नहीं हैं। यह ब्रह्मा कुमारी मत की कपोल कल्पित नारी है।

हम पहले सिद्ध कर चुके हैं कि इस सृष्टि को बने १ अरब ९७ करोड़ से अधिक वर्ष हो चुके हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभी तक कोई मनुष्य मुक्त नहीं हुआ

"निर्वाणधाम में निवास ही मुक्ति है। मुक्तिकल्प के अन्त में होती है। अभी तक कोई भी मनुष्य मुक्त नहीं हुआ।"

(सच्ची गीता पृष्ठ १५५)

समीक्षा—मुक्ति का अर्थ है सब बन्धनों से छूटना। यदि इस संसार से किसी दूसरे धाम में जाकर निवास ही करना है तो वह मुक्ति कैसे हुई? वह तो केवल एक मकान से निकलकर दूसरे मकान में जाने के सदृश है। आपका यह निर्वाण धाम कहाँ है? मुक्ति कल्प के अन्त में होती है—अगर यह यह बात मान ली जाए तो इस अवधि में आपके ही कथनानुसार जो राम, कृष्ण, सीता आदि देवी-देवता हुए हैं क्या वे अभी तक वे 'वेटिंग लिस्ट' में ही पड़े हुए हैं और मुक्ति के अधिकारी नहीं बने? यदि मनुष्य मनुष्य को मुक्ति नहीं दे सकता, तो आप अपने ब्रह्म कुमारियों-कुमारों को अपने जाल में फंसा प्रजापति ब्रह्म के दर्शन कराने का दम्भ क्यों करते हैं?

"परन्तु मैं तो अशरीरी हूँ। मैं मनुष्यात्माओं की तरह जन्म मरण के चक्कर में नहीं आता।" (सच्ची गीता ६७)

समीक्षा—आप तो अपने को अवतार कहते हैं पर जो अशरीरी है उसका अवतार कैसा? यहाँ अपने को अजन्मा कह रहे हैं पर अन्य स्थानों पर आप अपने को अवतार धारण की विशेषता कहते नहीं थकते।

"मुझे ही विश्वेश्वरनाथ चक्रवर्तीश्वर और पार्थेश्वर भी कहते हैं क्योंकि मैं ही सृष्टि का मालिक हूँ और पालन करने वाला, चक्रवर्ती राजाओं का भी ईश्वर अर्थात् राज्यभाग्य देने वाला हूँ।" (सच्ची गीता ६-७)

समीक्षा—यदि आप सचमुच इतने अलौकिक और विश्वव्यापी गुणों के भण्डार हैं तो आपको आबू पहाड़ पर ही एक कोठी मोल लेकर वहीं अपना दरबार लगाने की क्या आवश्यकता थी? क्या सर्व व्यापक को एक कोठी की जरूरत होती है? आप तो वस्तुतः ढोंगेश्वर ही थे।

कोई बच्चा रोता नहीं था।

"उस युग में कोई बच्चा पैदा होने पर रोता नहीं था?"

(सच्ची गीता ६३०)

समीक्षा—यह सर्वथा सृष्टि नियम विरुद्ध है। हाँ, मरा हुआ बच्चा पैदा होने पर नहीं रोता। क्या इस समय सब मृत बच्चे पैदा हुए थे?

कलियुग के अन्त में, अन्तिम जन्म में, सभी मनुष्यात्माएँ तमोप्रधानं दुःखी, अशान्त, अपवित्र, आसुरी धर्मभ्रष्ट, कर्मभ्रष्ट, योगभ्रष्ट और हिंसक होती हैं। वर्तमान समय सभी मनुष्यों की यही स्थिति है।'" (सच्ची गीता ६३८)

समीक्षा—इस मान्यता के अनुसार, आपने जिस वृद्ध शरीर में प्रवेश किया, वह भी उपर्युक्त सब दुर्गुणों का भण्डार था। तब आप दूसरों को मार्ग क्या दिखा सकते हैं, जब आप स्वयं ही ऐसे कुत्सित हैं।

इस प्रकार अनेक उलूल-जलूल और वेसिर पैर की बातें इस पुस्तक में तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर्वोक्त पुस्तक 'साप्ताहिक पाठ्यक्रय' में भरी पड़ी हैं। हमने 'स्थाली पुलाक' न्याय के अनुसार इस मत के कुछ प्रमुख मन्तव्यों की ही समीक्षा की है। अधिक लिखने से तो एक बड़ा पोथा बन जाएगा। इस समीक्षा और विवेचन से ही इस मत के सम्बन्ध में पर्याप्त परिचय मिल जाएगा।

योगसाधना की आड़ में अनैतिकता

आर्य हिन्दू जाति का यह दुर्भाग्य है कि आज इसे पथ भ्रष्ट करने के लिए ढोंगी अवतारों ईश्वरों, गुरुओं और बिना हींग-फटकरी के सीधा मोक्ष दिलाने वालों बाढ़ आई हुई है। यह ढोंगी गुरु स्वयं तो शिष्य-शिष्याओं का उद्धार करने के लिए जेट-हवाई जहाजों में देश-विदेश की सैर करते बढ़िया से बढ़िया रंगीन व श्वेत वस्त्र पहने, शानदार होटलों में ठहरते और सांसारिक रंगरेलियों में आकण्ठ निमग्न जीवन यापन करते हैं और अपने देशी-विदेशी चेले-चेलियों से भेंट, उपहार, चरण सेवा या मठ-मन्दिर निर्माण की आड़ में लाखों रुपया ऐंठते हैं। योग साधना और एकान्त-आवास के नाम पर अनैतिकता और इन्द्रियलोलुपता का प्रच्छन्न प्रचार करते हैं।

ब्रह्माकुमारी मत भी इसी श्रेणी का है। स्वच्छ श्वेतवसना, सुरमा सज्जित नयना, युवतियों का ही यहां प्राधान्य है। इनके छल-कपट और आकर्षक रूप-रंग पर मुग्ध अनेक युवक पथभ्रष्ट हो गये हैं और अनेक सुखी परिवार विच्छिन्न और विदीर्ण हो चुके हैं। शिक्षा-ज्ञान और स्वतंत्र चिन्तन का यह सम्प्रदाय कट्टर शत्रु है। बस, केवल दादा पर ऐकान्तिक विश्वास को ही जीवन की सब समस्याओं और उलझनों की रामबाण ओषधि कहते और प्रचारते हैं।

आर्यो ! ऋषि ऋण उतारो

ऐसे अन्धकार और पाखण्ड प्रसारक काल में दिव्य देव दयानन्द का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' ही अचूक, एकमात्र और अनोखा प्रचार तिमिर विध्वंसक है। ऋषिवर के उपदेश ही आज की संतप्त और संत्रस्त मानवता का उद्धार कर सकता है जहां पर ज्योति स्तम्भ पहुँचेगा, वहाँ इन मत मतान्तरों के टिमटिमाते दीपकों का सर्वथा लोप हो जाएगा।

पर यह काम कौन करेगा ? ऋषि दयानन्द के शिष्य और उत्तराधिकारी आर्य समाज पर ही इसका एकमात्र दायित्व है। आर्य पुरुषो ! उठो ! ऋषि की पाखण्ड खन्डिनी पताका हाथों में ले वीरता से आगे बढ़ते हुए इन जाति नाशक और राष्ट्र विध्वंसक मत-मतान्तरों को अहिंसा, सेवा, प्रचार-प्रसार और लगन के साधनों से धराशायी कर दो।

जन-ज्ञान के प्रत्येक सदस्य के परिवार में

वेद भाष्य होना ही चाहिए।

अतः १२४) के स्थान पर जन-ज्ञान के सदस्य केवल १०१)

भेजकर सदस्य बनें !

एक सदस्य केवल एक ही सैट मँगा सकते हैं--शीघ्रता करें--

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवाद की नयी भेंट

शराब……शराब अर्थात्

मौत का पैगाम

दिल्ली दिल है हिन्दुस्तान का। यहाँ अमीरों के आलीशान महल हैं तो एक-एक झोंपड़ी दस-दस जीवित लाशों को भी अपने आंचल में समेटे है। खुले फुटपाथ पर 'नीलेगगन के तले दिल मेरा जले' गाकर रात काटने वाले भी यहाँ हजारों में हैं। देश के अन्य बड़े शहरों के समान ही पीना पिलाना भी दिल्ली वालों की महमानवाजी का अविभाज्य अंग बनता जा रहा है। बिरादरीवाद से जकड़े इस समाज में पीने वालों की भी वर्णाश्रम व्यवस्था के ढंग पर दिल्ली में बिरादरियाँ हैं।

हम तो ठहरे यायावर चारों ही बिरादरियों के लोगों के गाहे बगाहे दर्शन भी हो ही जाते हैं। ये बात अलग है कि इन चारों के दर्शनार्थ अलग-अलग श्रेणी के ठिकानों पर दस्तक देना अनिवार्य है।

इन पियक्कड़ों में सबसे ऊँची जात के लोग वे हैं जो **स्काच व्हिस्की, शैरो पार्ट** और अन्य आयातित शराबों की चुस्कियाँ लेते हैं। इस बिरादरी के लोग रात को पांच स्टार होटलों की गगन चुम्बी अट्टालिकाओं में शीतताप नियन्त्रित कक्षों में इकट्ठे होकर अपनी रात रंगीन करते हैं। इनमें से कई समाज में नेता कहे जाते हैं तो कई बड़े दानी मानी और धर्मात्मा गिने जाते हैं।

शराब की चुस्कियां लेने वालों का दूसरा तबका दिल्ली के कनॉट प्लेस, साउथ एक्सटेन्शन, मॉडल टाउन आदि में सायंकाल विचरता हुआ दृष्टिगोचर हो सकता है। गरीब की हर साँझ भी दोपहरी होती है तो इनमें से अनेक की दोपहरी भी सुनहरी साँझ। दिन भर की थकान को यह दूसरा तबका घूंट की सिहरन में गुजारता है। यह देश में बनी होने के बावजूद भी विलायती कही जाने वाली शराब से अपनी तपन बुझाता है। इस तबके के लोग **व्हिस्की, रम या जिन** की बोतलों को लिफाफों में लपेटे स्कूटरों या कारों में फटाफट सवार होकर सायंकाल अपने-अपने तफरीगाहों की ओर प्रस्थान करते नजर आते हैं। कई क्लबों और होटलों की दुनिया इसी तबके की बदौलत रात को जलवागर होती है। इसमें कई पुराने बिगड़े दिल रईस शामिल हैं तो कई वे लोग भी कि जो काले धंधों से तन बदन पर सफेदी चढ़ाकर अपने ऊंचे रुतबे (स्टेटस) का दिग्दर्शन कराते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
तीसरा तबका है उन पीने वालों का जो सायंकाल देशी शराब की बिक्री करने वाली मधुशालाओं के समक्ष उसी तरह लम्बी कतारें लगाते हैं जैसे कि बस का इन्तजार या दिल्ली दुग्ध योजना के दुग्ध की बोतल लेने या राशन प्राप्त करने के लिए लालायित लोग। यह **कन्ट्री लिकर या वैध देशी शराब** के प्रेमी हैं। इनकी अपनी पार्टियाँ जमती हैं। किसी बड़े क्लब या होटल में नहीं अपितु किसी ढाबे या 'शुद्ध आहार ग्रहं' अथवा भोजन भंडार में भी इस तबके के लोगों का दीदार हो जाता है।

और चौथा तवका दिल्ली में बसता है उन पियक्कड़ों का जो स्पिरिट से बनी शराब पीते हैं। जिस शराब को यह वर्ग पीता है उसे पीना या उसके घूंट भर कर अपने गम गलत करना तो भले ही कानून की पकड़ में न आ पाता हो किन्तु इसका बनाना और बेचना दोनों ही गैर कानूनी हैं।

कुछ वर्ष पूर्व ऐसे ही ठर्रे की बदौलत इसी अप्रैल मास में कई लोग अचानक ही 'रब को प्यारे' हो गए थे तो, कई लोग अपने नेत्रों की ज्योति खो बैठे थे ऐसी अवैध शराब की तैयारी अथवा प्राप्ति के अड्डों पर पुलिस यदा कदा छापे मारती रहती है। १९६० से पुलिस द्वारा अवैध शराब के पकड़े जाने के मामलों में ७५ प्रतिशत की वृद्धि दिखाई गई थी। इसी वर्ष पुलिस ने अवैध शराब की १,८७५५३ बोतलें पकड़ी थीं। पुलिस का अवैध शराब के पकड़ने का क्रम जितना तेजी से चलता है, उसी रफ्तार से अवैध शराब के निर्माताओं का हस्त कौशल भी तेज हो जाता है।

अब भी यह धंधा जमुनापार की कई बस्तियों में चलता है तो राजधानी की पोश कालोनियों के साथ बसी मजदूरों की बस्तियों में भी यह सिलसिला जारी है। इस धंधे में पुरुष ही नहीं कई महिलाएं भी शामिल रहती हैं। कच्ची शराब या अवैध शराब का धंधा श्रमिकों या मध्यमवर्गीय लोगों की बस्तियों की अंधेरी गलियों के कई तंग मकानों में धड़ल्ले से होता है। दिल्ली की कई बस्तियों में सस्ती शराब की चाह को दिल में बसाए पियक्कड़ कच्ची-पक्की राहों पर सांझ के धुंधलके में चहलकदमी करते हुए देखे जा सकते हैं।

यह अवैध शराब संतरा, केला या अन्नानास की शराब की नकल पर लाइन को उबालकर खींची जाती है या बाजार से जहरीली स्पिरिट अथवा वार्निश किसी न किसी तिकड़म से प्राप्त करके उससे बनाई जाती है। इस अवैध शराब के हिन्दी में अनेक नाम हैं—ठर्रा, स्पिरिट की शराब या मटका शराब आदि किन्तु अंग्रेजी भाषा में इसके लिए केवल एक ही शब्द है **'हूच'**।

देशी वैध और अवैध शराब में थोड़ा सा अन्तर क्वालिटी, स्वाद, गंध या दुर्गन्ध का ही है। रासायनिक दृष्टि से सब शराबों में नशीला तत्व होता है इथाइल अलकोहल। इथाइल अलकोहल आर्गनिक (वनस्पति जीव जन्य रसायन) रसायनों की एक लम्बी श्रृंखला का दूसरा पदार्थ है। पहला मिथाइल अल्कोहल है, जो जहरीला ही नहीं होता अपितु इससे पीने वाला अंधा और बहरा भी हो सकता है।

दिल्ली में आबकारी कानून के अन्तर्गत बिकने वाली देशी शराब जिस प्रक्रिया से बनती है, उसी का अवैध शराब बनाने वाले भी सहारा लेते हैं। किन्तु उन्हें इसे जल्दी से और चोरी छिपे बनाना होता है अतः बनाने वालों को न इसकी क्वालिटी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की चिन्ता होती है और न ही स्वाद अथवा शुद्धता की उन्हें रेक्टीफाइड स्पिरिट तो मिलनी दुर्लभ है अतएव वे मिथाइल जहर मिली स्पिरिट शोरा-क्लोरेट डालकर उसमें से मिथाइल की मात्रा कम कर देते हैं। फिर भी यदा-कदा विष अधिक ही रह जाता है और फिर यह पीने वालों की नेत्र ज्योति कम करके या श्रवण शक्ति घटाकर अपना चमत्कार दिखाती है।

राजधानी में अवैध शराब की भट्टियाँ चलाना तो तनिक दुष्कर कार्य है, अतः यहाँ इस धंधे में लगे हुए लोग प्रायः वार्निश थिनर आदि का ही उपयोग करते हैं। क्योंकि ये भी स्पिरिट से ही बनते हैं अतः अवैध धंधे में निपुण लोग उनमें से भी इथाइल आल्कोहल को पृथक् करने व इससे विष की मात्रा घटाने का प्रयास करते हैं और उसे भी बेच देते हैं।

देशी अवैध शराब की बिक्री का यह धंधा कालका जी, करौल बाग, बदरपुर के आस-पास के क्षेत्रों एवं यमुना पार की बस्तियों में आज भी चोरी छिपे चल रहा बताया जाता है।

★

★ गुजराती लोक-कथा

ज्यादा बोलने की सजा

□ सां० ज० पटेल

एक शिकारी एक बार जंगल में गया, वहां उसने एक बूढ़े आदमी का कटा हुआ सिर देखा, शिकारी ने पूछा, "हे सिर, बताओ, तुम्हारी ऐसी दशा कैसे हुई।"

सिर ने कहा, "हद से ज्यादा बोलने से मेरी यह दशा हुई।"

शिकारी वहाँ से भागता-भागता राजा के पास आया और कहा, महाराज, महाराज, जंगल में आज एक आदमी का सिर देखा। उसने मुझसे कहा कि महाराज को पूछ देखना मेरे माता-पिता मजे में हैं न!"

राजा ने आश्चर्यचकित होकर कहा, "मरे हुए आदमी का सिर भी बोल सकता है, ऐसी बात तो मैंने आज तक कभी नहीं सुनी।"

और फिर राजा ने अपने मंत्रियों को बुलाकर पूछा कि आपने कभी ऐसी घटना सुनी है?

सबने आश्चर्यपूर्वक अपने सिर हिलाकर इंकार किया।

राजा ने एक आदमी को शिकारी के साथ जंगल भेजकर, यह घटना सही है या गलत, इसकी जांच करने का निश्चय किया।

शिकारी यदि झूठा हो, तो उसे वहीं का वहीं मार डालना, ऐसा हुक्म देकर, राजा ने एक आदमी को शिकारी के साथ भेजा।

दोनों जने सिर के पास आये। शिकारी ने सिर को संबोधित कर कहा, "हे सिर, बताओ, तुम्हारी यह दशा कैसे हुई?"

परन्तु सिर कुछ बोला नहीं पूरे दिन शिकारी ने सिर से बोलने की चिरौरियां कीं, परन्तु सिर तो बोलता ही न था। राजा की आज्ञा के अनुसार शाम को शिकारी का सिर काटकर साथवाला आदमी चला गया। इसके बाद उस सिर ने अपना मुंह खोला और शिकारी के सिर से पूछा, "हे सिर, बताओ, तुम्हारी यह दशा कैसे हुई है?"

शिकारी के सिर ने कहा, "हद से ज्यादा बोलने से मेरी यह दशा हुई है।"

इसलिए कम बोलो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी एक रात की....

—तारकेश्वरी सिन्हा

दिल्ली,वम्बई, कलकत्ता, मद्रास के धनी-मानी परिवारों में कीमती शराब का पीना सभ्यता की निशानी समझा जाने लगा है। कई ऐसी जगह जाने का मौका मिला है, जहाँ बारह-बारह, एक-एक बजे रात तक हाथ में गिलास ले कर जो खाली होते ही कीमती शराब से भर दिये जाते हैं—समाजवाद, क्रांति सभ्यता मर्यादा, ईमानदारी और नैतिकता के 'घोषणापत्र' तैयार किये जाते हैं। ऐसी ही एक पार्टी वह भी थी। जैसे ही मैं उनके मकान के ड्राँइग रूम में दाखिल हुई, धनी मानी सम्मानित बुद्धिजीवियों का वर्ग मेरे आस-पास इकट्ठा हो गया और न जाने कितने क्राँतिकारी तर्क और प्रश्नोत्तर शुरू हो गये। ऐसा मालूम होता था कि देश में क्रांति हो न हो, व्हिस्की के गिलासों में क्रांति अवश्य हो रही है।

किसी ने कहा—देखिए न, कितना भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, हम हिन्दुस्तान के लोग जात-पांत, पक्षपात, भ्रष्टाचार, मिलावट की जिंदगी में पड़ कर इतने अनैतिक हो गये हैं कि इस देश में क्रांति तो होगी ही। दूसरे ने कहा कि हम क्यों अनैतिक होने लगे। अनैतिक तो हमें देश के शासन ने बना दिया है. एक हाथ से रुपया दो, दूसरे हाथ से काम कराओ। राजनीतिक दलों को चुनाव के लिए रुपया चाहिए। उम्मीदवारों को अपने-अपने दलों से पैसा चाहिये। तो फिर रुपया देकर काम कराने में हर्ज ही क्या है किसी और ने कहा हम तो समाजवाद की दाद देते हैं. भगवान करे, पब्लिक सेक्टर (सार्वजनिक क्षेत्र) और बढ़े। हमें घाटा ही क्या है ? हम तो पब्लिक सेक्टर के माल सप्लाई के ठेकेदार हो गये हैं और जितना मुनाफा कभी नहीं कमाया था, आज कमा रहे हैं। आखिर हमारे पास संगठन है। पब्लिक सेक्टर आसमान से लाकर इन्तजाम तो करेगा नहीं, उसे काम तो हमारे माध्यम से ही करना पड़ेगा। तब तक एक बहुत ऊँचे सरकारी अफसर बगल के कमरे से निकलकर झूमते हुए आये। शराब के नशे में धुत्त मुँह से ठीक से बोली भी नहीं निकल रही थी, मेरे पास आ कर खड़े हो गये और लड़खड़ाती जुबान में कहा कि आपकी पार्टी बिलकुल ही रिएक्शनरी है, प्रोगेसिव पार्टियों के साथ मिलजुल कर काम करना चाहिए। किन बूढ़ों के चक्कर में पड़ी हैं—हालाँकि उनके बालों में भी कोई काला बाल मुश्किल से ही देखने को मिल रहा था।

प्रोग्रेसिव शब्द का ग्राकर्षण

प्रोग्रेसिव शब्द कुछ लोगों के लिए जिज्ञासा, कुछ के लिए फैशन, कुछ के लिए सत्ता के नजदीक रहने का उपक्रम और बहुत थोड़े से लोगों के लिए निष्ठा है। उस ड्राइंग रूम के कोने में कीमती पशमीने के सूट में लैस एक नेता भी, सोफे पर बैठे कुछ लोगों से गपशप कर रहे थे। जब मैं आयी थी, तो उन्होंने मेरी तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया था। शायद जान-बूझ कर ही। कुर्सी के सत्कार की भाषा कुछ और होती है और बिना कुर्सी के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोगों के लिए सत्कार की भाषा कुछ और। फिर भला वह मँहगे शब्द क्यों खर्च करते। पर 'प्रोगेसिव' शब्द की चर्चा सुनते ही एकदम अपनी जगह छोड़ कर हमारे मजमे में आकर खड़े हो गये और बड़ी मासूमियत से पूछा कि तारकेश्वरीजी आप कब आयीं ?

मैंने भी उतने ही भोलेपन से जवाब दिया, आपकी कृपादृष्टि जब से हुई है, तभी से। उनके पहुँचते ही बातचीत में बड़ी गर्मी आ गयी। प्रगतिवाद और समाजवाद के मार्मिक वर्णन करने का उनका एक खास स्टाइल था और उस स्टाइल का मुझ गरीब पर सबसे ज्यादा उपयोग होने लगा था। साथ-साथ मेरे कान में यह भी कहने से नहीं चूके कि वे बड़े-जी जान से कोशिश कर रहे हैं कि मेरा श्रीमती गांधी से समझौता हो जाये। उनके बड़प्पन में इस बात की अधिक कोशिश थी कि लोग जानें कि श्रीमती गांधी और उनके विश्वासपात्र लोगों के कितने नजदीक हैं। सामने टेबुल पर रखी भुने हुए पिस्ते की प्लेट पर वहाँ की सारी भीड़ रह-रह कर बेचैनी से टूट पड़ती थी। दिल्ली के बाजार में भुने हुए ईरानी पिस्ते की कीमत ११० रुपये किलो थी, इस बात की चर्चा हमारे मेजबान बार-बार करने में बहुत गर्व अनुभव कर रहे थे और बहुत स्नेह से अपने ही हाथों प्लेट उठाकर अतिथियों को खिला रहे थे। देखा, कि प्रगतिवादी नेता का ध्यान जब कभी श्रीमती गांधी से हटता, तो सीधे पिस्ते की प्लेट की तरफ दौड़ जाता था। प्रगतिवाद और समाजवाद का स्थान उसके बाद आता था।

मैं चुपचाप उनकी बौछार झेलती रही वैसे मेरा स्वभाव भी चुप बैठने का है नहीं। पर उस दिन चुप ही रही। सिर्फ एक बार दबी हुई जुबान में कहा, "भाई साहब, श्रीमती गांधी से मेरा निजी झगड़ा तो है नहीं, जो आप सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। राजनीतिक उद्देश्यों को लेकर जो झगड़ा होता है, उसका समझौता उद्देश्य की पूर्ति के लक्ष्य को सामने रख कर होता है। श्रीमती गांधी से मेरा कोई भी समझौता होगा, तो राजनीतिक संदर्भ में होगा और शायद उसमें पैरवी की जरूरत नहीं पड़ेगी।" इसके बाद उन्होंने श्रीमती गांधी की चर्चा बंद कर दी और प्रतिक्रियावादियों के लक्षण का बखान करने लगे। उनके दोनों तरफ दो बड़े व्यापारी एक लोहे के और दूसरे गल्ले के खड़े थे। ऐसे समाजवादी कंधों पर हाथ रख देश की मर्यादा और समाजवाद की निष्ठा का वर्णन कुछ अजीब-सा लगा।

करीब साढ़े ग्यारह बजे तक व्हिस्की का दौर चलता रहा। चूंकि मैं अपने बच्चों के साथ गयी थी और वे नींद के मारे जम्हाइयां लेने लगे थे, मैंने अपने मेजबान से कहा, "अब जल्दी खाना लगवाइए, जिससे कि हम घर जा सकें, क्योंकि कल बच्चों का स्कूल है।"

उन्होंने कहा, "बस, अभी चलते हैं।"

"कहां चलना है ? क्या बाहर खाना खाना है ?"

वे बड़े आदर से बोले, "हां, सभी की राय हुई है कि इंटरकांटिनेंटल होटल में चलकर खाया जाये।"

मैं हैरान हो गयी कि चालीस-पचास आदमियों की जमात को इंटरकांटिनेंटल में खिलाने का मतलब था, हजारों का बिल अब तक हजारों रुपयों की व्हिस्की गिलासोंमें उंड़ेली जा चुकी थी सोचा, दिल्ली का यह खर्चीला जीवन, जिसके उपभोक्ता हैं हमारे और हमारे मित्र जैसे राजनीतिज्ञ, बड़े-बड़े

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अफसर, बड़े उद्योगपति और व्यापारी लोग, यह कैसा समाजवाद है ?

और सबसे अधिक आश्चर्य तो हुआ यह देख कर कि हमारे मेजवान का दस साल का लड़का आगंतुक अतिथियों के ग्लास में घूम-घूम कर बोतल से व्हिस्की डाल रहा था और बगलवाले कमरे में कुछ बड़े बच्चे, जो १५ और २० वर्ष के बीच के थे, छिप कर कोकोकोला में व्हिस्की मिला कर पी रहे थे। तभी मेरी बड़ी लड़की ने कान में आकर कहा, "अम्मां, ये सब कोकाकोला और पाइनऐपल जूस के साथ व्हिस्की पी रहे हैं। और मुझे भी जबरदस्ती पिलाने की कोशिश कर रहे थे। पर जब मैंने इनकार कर दिया, तो सब मेरा मजाक उड़ा रहे हैं।" उसकी रोनी-सी सूरत देख कर ऐसा लगा, जैसे वह मुझसे कह रही हो कि कहां ले आयी हैं मुझे ? शायद उससे उन बच्चों ने उदासीनता बरती होगी इसीलिए शिकायत करने आयी थी। मैं सोचने लगी कि वर्तमान समाज के समृद्ध और संपन्न परिवारों के जीवन की मर्यादा का क्या यही रूप है ?

जिस देश की तीस करोड़ जनता गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन कर रही हो, उस देश के संपन्न जीवन का क्या यही मूल्य होना चाहिए ? आये दिन देखने में आता है कि शासन का उच्च वर्ग और राजनीतिक नेतृत्व दिन-पर-दिन स्वार्थी होता जा रहा है। राजनीतिक-जीवन में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार आम चर्चा का विषय बन गया है और इसका असर समाज के हर वर्ग पर पड़ा है। खास कर वह वर्ग, जो परिस्थितियों का दास नहीं, वरन उससे फायदा उठाना सीख चुका है, उसकी तो आज चांदी-ही-चांदी है।

"वेद-मन्दिर"

'वेद-मन्दिर' में चलो, हो रही आराधना।
वेद मंत्रों की करो ध्वनि, और कर लो साधना ।।वेद०।।

'यज्ञशाला' में पहुँचकर, यज्ञ सब मिलकर करें।
'वेद-मंदिर' है सिखाता, ज्ञान, कर्म, उपासना ।।वेद०

वेद ईश्वर-ज्ञान है, मन्दिर जिसे बिखरा रहा।
'ओ३म्' इसमें सार है, हो पूर्ण जिससे कामना ।।वेद०

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, सार जीवन का फले।
वैदिक सुकृत्यों की यहाँ, शुद्ध कर लो भावना। वेद०।।

दयानन्द की श्रद्धांजलि में, 'वेद-मंदिर' है बना।
सत्संग इसमें कर लो, श्रेष्ठ इससे धाम ना ।।वेद०।।

—ओम्प्रकाश आर्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंत्री जी की वचनपूर्ति

एक मंत्री चुनाव-प्रचार को निकला। जनता के सामने जहां-तहां अपने भाषण में उसने कहा, "मुझे वोट दीजिए। मेरी पार्टी आप लोगों की खुशहाली के लिए हर उपाय करेगी।"

एक सभा में कुछ लोगों ने उठ कर सवाल किया, "आपकी पार्टी ने हम लोगों के लिए अब तक कुछ भी नहीं किया। अरे, आप लोग जो सुख पाते हैं, उसका आधा हमें मिल जाये तो हम निहाल हो जायें।" इस पर मंत्री ने कहा कि आप लोग विश्वास करिए, मैं यदि चुनाव जीत गया, तो मुझे जो कुछ मिलेगा, उसके आधे हिस्से पर आप लोगों का अधिकार होगा।

मंत्री चुनाव जीत गया। एक दिन उसकी पार्टी ने उसे समाजवादी थैली पकड़ा दी। मंत्री उस थैली को यह समझ कर अपने घर ले गया कि उसमें पैसे होंगें। लेकिन उसमें पैसों की जगह निकले छुहारे और बादाम। यह देख मंत्री को अपना वह वचन याद आया, जो उसने जनता को दिया था। कैसे न आता! अच्छे मंत्री अपना वचन कभी नहीं भूलते। उसने बादाम फोड़े। उसके बीज अपने पास रख लिये और छिलके थैली में डाल दिये। फिर छुहारों का ऊपरी हिस्सा छीलकर अपने पास रख लिया और गुठलियाँ थैली में डाल दीं।

उस थैली को ले जा कर उसने जनता के सामने रख दिया और कहा, "लो भाइयों, यह थैली लो। यह समाजवाद की थैली है। आप लोगों के लिए लाया हूँ। मैंने आप लोगों को वचन दिया था, जो कुछ भी मैं पाऊंगा उसका आधा हिस्सा आपको दूँगा। इस थैली में जो दो चीजें हैं, उनके आधे-आधे हिस्से आप लोगों के लिए ले आया हूं। मैंने अपने लिए एक अंदुरुनी और दूसरे का बाहरी हिस्सा रख लिया है। ऐसा मैंने इसलिए किया है कि आप लोग मुझे यह दोष न दें कि मैंने आपके साथ कोई अन्याय किया है!"

—शंकर

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएँ

आर्य युवक परिषद् दिल्ली (पंजी०) के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में होने वाली सत्यार्थ रत्न, भूषण, विशारद एवं शास्त्री परीक्षाएँ इस वर्ष भी रविवार १ सितम्बर १९७४ को सारे देश में सम्पन्न होंगी। परीक्षाओं में बैठने के इच्छुक परीक्षा पाठ विधि, आवेदन पत्र तथा अन्य सभी प्रकार की जानकारी के लिए परीक्षा मन्त्री ला० चमनलाल एम०, ए० परीक्षा कार्यालय एच--६४ अशोक विहार दिल्ली ५२ से पत्र व्यवहार करें।

देवव्रत : धर्मेन्द्रु
आर्योपदेशक
प्रधान

ओ३म् प्रकाश
एम०, एस०, सी०
मंत्री

आर्य युवक परिषद्, दिल्ली ६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

दयानन्द-संस्थान

[पंजीकृत—न्यास]

द्वारा प्रकाशित

वैदिक धर्म प्रचारार्थ

पुस्तकों-ट्रैक्टों आदि

का

सूची-पत्र

सभी आदेशों के साथ चौथाई धन अवश्य भेजें

अपने निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम लिखें

कमीशन नियमानुसार २५ से १०० रु० तक के साहित्य पर २० प्रतिशत

१०० से अधिक के साहित्य पर २५ प्रतिशत

सैंकड़े के रेट निश्चित : उन पर -कमीशन नहीं

★

दूरभाष : ५६६६३६ प्रबन्धक—

जन - ज्ञान - प्रकाशन

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग करौलबाग

(३१ नाई वाला) नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक हिन्दी साहित्य

१—**वैदिक सत्संग पद्धति** (हिन्दी) नया संस्करण (केवल हिन्दी में) प्रत्येक मंत्र के साथ, उनका अर्थ दिया गया है। २८ पौंड बढ़िया कागज, तिरंगा बढ़िया आवरण, चुने हुए भजन। मूल्य ६० पैसे ५०) सैकड़ा

२—**गीत मंजरी**—नया तीसरा बड़ा संस्करण मूल्य १)४०।

ईश्वर भक्ति के गीत और प्रभु से प्रार्थना करते हुए यदि आप सचमुच अपने आपको भुलाना चाहते हैं तो "गीत-मंजरी" का सहारा लीजिए।

३—**वैदिक सिद्धान्त** मूल्य २)

वैदिक सिद्धान्त अकाट्य हैं। यह स्वयंसिद्ध बात ग्रन्थ पढ़कर हृदयंगम हो जाती है। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रद्धेय पं० यशःपाल सिद्धान्तालंकार की विद्वत्ता प्रतिभा का चमत्कार देख आप मुग्ध हो जायेंगे। प्रत्येक दृष्टि से अनुपम।

४—**आर्यसमाज के नियम**— मूल्य ८० पैसे

ज्ञान की अनुपम खोज महर्षि के शिष्य पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या द्वारा लिखित पहला संस्करण १८९७ में छपा था। आर्यसमाज को जानने समझने का अपूर्व साधन है।

५—**वैदिक विचारधारा** मूल्य २५ पैसे

६—**सत्यार्थप्रकाश**—राज संस्करण सजिल्द मूल्य ५) : ४००) सैकड़ा

७—**सत्यार्थप्रकाश**—उपहार संस्करण कपड़े की जिल्द-मूल्य ६)। ५०० सैकड़ा

८—**स्वामी श्रद्धानन्द**—जीवन चरित्र मूल्य ५० पैसे

९—**स्वामी दयानन्द**—जीवन चरित्र १) ४० पैसे

सिद्धान्त : जीवन : श्रद्धाजलियां। दर्जनों चित्र। ४ रंगों में छपा आकर्षक आवरण १००) सैकड़ा।

१०—**विश्व को आर्य समाज का सन्देश**—भारतेन्द्रनाथ २५) सैकड़ा

११—**वैदिक अर्थनीति**—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर मूल्य ४० पैसे

१२—**बृहस्पति राजधर्मसूत्र**—पं० शिवदयालु मूल्य १)

१३—**योगेश्वर श्रीकृष्ण** मूल्य ५० पैसे

१४—**वैदिक अर्थ शास्त्र परिचय**—भारतेन्द्रनाथ मूल्य ८० पैसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज स्थापना शताब्दी के उपलक्ष्य में

नए अपूर्व महान् प्रकाशन

—शतपथ ब्राह्मण (प्रथम कांड)

शतपथ ब्राह्मण का यह अपूर्व भाष्य स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज की जीवन भर की साधना का सुपरिणाम है। ४०० से अधिक पृष्ठों का यह ग्रंथ अपनी उपमा आप ही है। बढ़िया कपड़े की जिल्द के इस ग्रंथ का मूल्य है—१५)।

२—यजुर्वेद-सामवेद भाष्य

यजुर्वेद का भाष्य महर्षि दयानन्द कृत और सामवेद भाष्य आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री कृत, एक ही सुनहरी जिल्द में प्रकाशित किया गया है। लागत मूल्य ५१)।

३—ऋग्वेद (६ मण्डल)

महर्षि दयानन्द कृत भाष्य मूल्य—५१)

४—यजुर्वेद भाष्य

गत्ते की जिल्द १४)। कपड़े की सुनहरी जिल्द १८)

५—वेदोंका यथार्थ स्वरूप

पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की एक सशक्त रचना, जिसे पढ़ कर 'वेद' के प्रति श्रद्धा उभरनी आवश्यक है। सभी संशयों का प्रभावपूर्ण समाधान। सजिल्द मूल्य ८)

६—संक्षिप्त महाभारत

महाभारत का यह लघु संस्करण स्व० महात्मा हंसराज जी ने प्रकाशित कराया था। अब पुनः प्रस्तुत है कपड़े की बढ़िया जिल्द में। मूल्य ६)

७—ज्योति—स्तम्भ

१२ शीर्षस्थ आर्यसमाज के नेताओं के जीवन चरित्र। १२ आर्ट पेपर पर चित्रों सहित। मूल्य ३)

८—बोध-रात्रि (महाकाव्य)

ऋषि दयानन्द का यह अनुपम काव्यमय जीवन चरित्र वर्मा में लिखा गया था। अपने ढंग का अनूठा ग्रन्थ है। मूल्य ३)

९—आर्य क्रांतिकारी

आर्य समाज के क्रांतिकारी वीरों के ज्वलंत जीवन चरित्र। मूल्य ३)

१०-अथर्ववेद परिचय

पं० विश्वनाथ जी विद्याभार्तण्ड मूल्य ३)

११-अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र

विद्यामार्तण्ड स्वा० ब्रह्ममुनि जी मूल्य ६)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आकर्षक अंग्रेजी साहित्य

1. Light of Truth.

अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश—महर्षि दयानन्द के महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का मास्टर दुर्गाप्रसाद कृत यह अनुवाद प्रत्येक दृष्टि से अनुपम है। छपाई, कागज, जिल्द सभी दृष्टि से अत्यन्त आकर्षक यह ग्रन्थ लागत मात्र पर दिया जा रहा है। पृष्ठ ५७८। साइज डिमाई आठवां। कपड़े की वढ़िया जिल्द—मूल्य १५)

2. An Introduction to the Commentary on the Vedas.

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का पं० घासीराम कृत अंग्रेजी अनुवाद मूल्य ६) सजिल्द कपड़े की जिल्द ८)

3. Teachings of Swami Dayananda. Re. 1.00

महर्षि दयानन्द की विचार धारा और शिक्षाओं से सभी को परिचित कराने के लिए अनुपम पुस्तक।

4. Ten Commandments

आर्यसमाज के १० नियमों की अभूतपूर्व व्याख्या: स्व० पं० चमूपति जी की लेखनी से मूल्य १)

5. Message of the Arya Samaj to the Universe

भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार लिखित—आर्य समाज का संदेश फैलाने हेतु प्रभावशाली पुस्तिका—जिसका ८ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।—मूल्य ५० पैसे

6. Vedic-Prayer— संध्या, प्रार्थना मंत्र, हवन, स्वस्तिवाचन, शांतिप्रकरण, ईशोपनिषद् आदि सभी की पूर्ण व्याख्या हिन्दी अंग्रेजी में एक साथ—और चुने हुए भजन, भेंट के लिए अत्युत्तम। मूल्य ३)

7. Dayananda The Great (तीसरा नया संस्करण) मूल्य २० पैसे

8. An Introduction to the Arya Samaj मूल्य २० पैसे

(चतुर्थ संस्करण) आर्यसमाज से सभी को परिचित करने के लिए प्रभावशाली ट्रैक्ट। १५) सैकड़ा

9. The Great Gayatri Re. 00·25

10, The Vedic Fundamentals Rs. 2.50

11. Vedic Life Rs. 2 50

12. What is Yoga ? योग के सम्बन्ध में मार्गदर्शन —मूल्य २० पैसे

13. The man and His Religion

स्वामी सत्यप्रकाश जी लिखित एक ऐसा ग्रंथ जो अपूर्व है— मूल्य १)२५

14. Life of Swami Dayanand—D.N. Vasudevaa Re. 1.00

15. Christianity and the Veads

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड लिखित मूल्य १.५०

18. Essence of the Vedic Religion Re. 00.15

19. The Fundamentals of the Arya Samaj Re. 00.15

20. The Yoga of Patanjali Re. 00.50

21. Ramayanı (Abridged) Rs. 3.00

22. Agnihotra—Dr. Satya Prakash Saraswati Rs. 5.00

23. Whose wealth ?—Mahatma Ananda Swami Rs. 8.00

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चारों वेदों का संपूर्ण भाष्य आप १२४)
में सुरक्षित करा सकते हैं।

१२) सैकड़ा के उपयोगी प्रचार ट्रैक्ट

१–आर्यसमाज क्या मानता है ?	—मदनमोहन विद्यासागर
२–विश्व को वेद का सन्देश—	—भारतेन्द्र नाथ
३–महर्षि दयानन्द की विशेषतायें	—महात्मा नारायण स्वामी
४–आर्यसमाज की विचारधारा	—गंगाप्रसाद उपाध्याय
५–आर्य समाज की मान्यताएं	—पं० रामचन्द्र देहलवी
६–निमन्त्रण आर्यसमाज का	—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय
७–आर्यसमाज के दस नियम	—रघुनाथ प्रसाद पाठक
८–आर्य कौन ?	—पं० हरिशरण
९–मूर्ति पूजा की हानियाँ	—महर्षि दयानन्द सरस्वती
१०–सुख का मार्ग	—भारतेन्द्र नाथ
११–अंडा मनुष्य का भोजन नहीं !	—आचार्य जगदीश विद्यार्थी
१२–साम्यवाद क्यों नहीं—?	महात्मा नारायण स्वामी

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी रचनात्मक रूप से मनाने के लिए

अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक

प्रचार-पोस्टर लगवाइए

अभी चार पोस्टर तैयार हैं। २०×३० इंच साइज में

१ सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में—	२५)	सैकड़ा, पत्ती लगा	४०) सै०
आर्यसमाज के १० नियमों का तिरंगा—	२५)	" "	४०) सै०
३ स्वामी जी के चित्र वाला (चार रंगों में)	४०)	" "	४०) सै०
४ गायत्री मंत्र अर्थ सहित		" सादा	२५) सै०
(३ रंगों में) पत्ती लगा आर्ट पेपर पर	३५)	"	१५×२० साइज में

पोस्टर बड़े साइज में अत्यन्त बढ़िया कागज पर छापे गए हैं। व्यय बहुत पड़ता है पर प्रचार के लिए हम लागत से भी कम मूल्य पर दे रहे हैं।

आर्यसमाजों का नाम लिखने के लिए भी स्थान छोड़ा गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९७५ की आकर्षक वैदिकडायरी

सजिल्द २२५) सैकड़ा। अजिल्द १५०) सैकड़ा अपनी प्रतयाँ तुरन्त सुरक्षित कराएँ।

अत्यन्त-उपयोगी साहित्य

१. **क्या वेद में मास भक्षण का विधान है?**
"सरिता" में प्रकाशित भ्रमपूर्ण लेखों का प्रसिद्ध वैदिक अन्वेषक श्री शिवपूजन सिंह जी एम. ए. द्वारा दिया हुआ प्रामाणिक मुंहतोड़ उत्तर। मूल्य : १)

२. **ऋषि दयानन्द ने कहा था..............**
महर्षि दयानन्द की अमर सूक्तियों का प्रचार के लिए अनुपम संग्रह। मूल्य : ४० पैसे

३. **वेद और बाइबिल--**
वेद मंत्र और बाइबिल के वचन दाएं बाएं पृष्ठों पर साथ-साथ दिये गए हैं। जिन्हें पढ़कर बिना किसी टिप्पणी के भी आप दोनों की तुलना करने में समर्थ हो सकते हैं। वेद की महत्ता प्रगट करने के लिए अनुपम ग्रंथ। पं० दीनानाथजी के श्रम का परिणाम। मूल्य : १)

४. **धर्म ग्रन्थावलोकन--** मूल्य : १)५०
संसार के सभी मतों के संबंध में प्रामाणिक जानकारी। धर्म की वास्तविमता जानने के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ।

ईसाईयत सम्बन्धी साहित्य

१. पोप की सेना का भारत पर हमला-- १५) सैकड़
२. बाइबिल को चुनौती-- २०) सैकड़ा
३. Challenge to the Christian Faith— ५) सैकड़ा
4. Bible in the Balance-Charles Smith मूल्य २५ पैसे, २०) सैकड़ा

१९७५ का शताब्दी कलैंडर
आर्यसमाज के १०० वर्ष का परिचय सहित
केवल ६५) सैकड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक आध्यात्मिक साहित्य

१—**गायत्री शतक**—१०० गायत्री मन्त्रों की प्रभावपूर्ण आध्यात्मिक व्याख्या—१)

२—**उपनिषद्—वचनामृत। पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार**—मूल्य ६० पैसे
उपनिषदों का सार पुस्तक में प्रभावशाली ढंग से अंकित है।

३—**ईश्वरभक्ति**—स्वामी सर्वदानन्द जी द्वारा लिखित अनमोल रचना।
जिसे पढ़कर प्रभु के चरणों में मस्तक झुक जाता है। प्रभु से मिलने का मार्ग दर्शन। —मूल्य १)

४—**मोक्ष का वैदिक मार्ग**—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री व योगीराज पथिक का मोक्ष के सम्बन्ध में अनुपम मार्ग दर्शन। मूल्य ६० पैसे

५—**ईशोपनिषद्** मूल्य ६० पैसे
श्री हरिशरणजी सिद्धान्तालंकार लिखित उपनिषद् की अनुपम आध्यात्मिक व्याख्या

६—**शतक-त्रयी**—वेद के ३०० आध्यात्मिक मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह—मूल्य १)

७—**प्रार्थना सुमन**— मूल्य ६० पैसे
पं० चन्द्रभानु लिखित हिन्दी अंग्रेजी में वेद मन्त्रों की प्रेरक भावपूर्ण व्याख्या।

८—**मां गायत्री**— तीसरा संस्करण—मूल्य १)
इसमें महर्षि दयानन्द, महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी, स्व० प्रभुआश्रित जी स्वामी समर्पणानन्द जी के अनुपम विचार।

९—**उपनिषद् कथामाला**— मूल्य ८० पैसे
महात्मा नारायण स्वामी की प्रभावपूर्ण सरल रचना। जो हृदय में प्रभु से मिलने की उत्कट भावना उत्पन्न करती है।

१०—**धर्म का मार्ग**—पं० सुरेशचन्द्र विद्यालंकार— मूल्य ६० पैसे
धर्म क्या है, इसे जानने के लिए सरल प्रेरक मार्ग दर्शन।

११—**उपनिषद् त्रयो**—पं० शिवदयालुकृत—यजुर्वेद के तीन अध्यायों की हिन्दी व अंग्रेजी में प्रेरक आध्यात्मिक व्याख्या। मूल्य ८० पैसे

१२—**अमृत-पथ**—जीवन को सुन्दर आनन्दमय बनाने का मार्ग दर्शन। ग्रंथ को बार-बार पढ़ने पर भी मन नहीं भरता। मूल्य सजिल्द ३)

१३—नारायण अध्यात्म सुधा —महात्मा नारायण स्वामी : ८० पैसे

१४—**अध्यात्म योग**—पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार मूल्य ५)

१५—**कल्याण मार्ग**—जगन्नाथ पथिक मूल्य २५ पैसे

१६—**योग की राह पर**—जगन्नाथ पथिक मूल्य २५ पैसे

१७— दि ज्ञान—सुधा मूल्य १)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद भाष्य प्रकाशन के पवित्र यज्ञ में
अधिक से अधिक
आहुति भेंट करें।

५०१) देने वालों के नाम

१००१) देने वालों के चित्र

और ५००१) देने वालों का बड़ा रंगीन चित्र

वेद भाष्य में धन्यवाद सहित छापा जायेगा।

दयानन्द-संस्थान

के सदस्य बनिये

(पंजीकृत ट्रस्ट)

१००१)	प्रति वर्ष	देकर	"संरक्षक-सदस्य"
५०१)	,,	,,	"पोषक-सदस्य"
२५१)	,,	,,	"प्रेषक-सदस्य"
१०१)	,,	,,	"संचालक-सदस्य"
५१)	,,	,,	"दाता-सदस्य"
२५)	,,	,,	"सहायक-सदस्य"
११)	,,	,,	"प्रचारक-सदस्य"

आप का सहयोग ही हमारी शक्ति है।

विनीत— अध्यक्ष

दूरभाष : ५६६६३९ **दयानन्द संस्थान,**

नई दिल्ली-५

संस्थान वैदिक धर्म प्रचार के लिए हिन्दी और अंग्रेजी में अलग-अलग जन-ज्ञान [मासिक-पत्र] प्रकाशित करता है। जिसका नमूना पत्र लिखकर आप बिना मूल्य मँगा सकते हैं।

वार्षिक शुल्क १५) प्रबन्धक—जन-ज्ञान(मासिक) नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

वैदिक
अर्थशास्त्र परिचय

★

—लेखक :
—भारतेन्द्रनाथ

★

भूमिका लेखक :
सुप्रसिद्ध लेखक व उपन्यासकार
श्रीगुरुदत्त

★

प्रकाशक :
जन - ज्ञान - प्रकाशन
नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान-प्रकाशन का १२५वाँ पुष्प

दूरभाष : ५६६६३९

प्रकाशक—
पंडिता राकेशरानी
मंत्री
दयानन्द संस्थान,
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

मूल्य : ८० पैसे

मई १९७४ आषाढ़ २०३१

संसार में सत्य-धर्म-ज्ञान का संदेश
फैलाने के लिए

दयानन्द-संस्थान द्वारा प्रकाशित

हिन्दी व अंग्रेजी में अलग-अलग

"जन-ज्ञान" (मासिक) के सदस्य बनिए !

वार्षिक मूल्य १५) आजीवन २५१)

संपादक

जन-ज्ञान (मासिक) नई दिल्ली-५

मुद्रक :
भाटिया प्रेस, गाँधीनगर, दिल्ली-११००३१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी ओर से

कुछ दिनों से समय के प्रभाव से प्रभावित हो वेद और आर्य-समाज के नाम पर एक ऐसी विचारधारा उपस्थित की जा रही थी जिस का दूर का भी सम्बन्ध, हमारी दृष्टि में वैदिक सिद्धान्तों से नहीं था।

वर्ग संघर्ष की पृष्ठभूमि पर मनुष्य जाति का वर्गीकरण और कमेरा-लुटेरा का नारा हमारी विनम्र सम्मत्ति में 'वेद' के उदात्त, मन्तव्यों के अनुकूल नहीं है।

हमारी इच्छा थी कि इस विषय पर कोई विद्वान् आगे आकर वेद भक्त जनता का मार्ग दर्शन करें किन्तु अनेक कारणों से ऐसा कोई ग्रन्थ अभी तक तैयार नहीं किया जा सका।

जन मानस में जिज्ञासा जागृत हो गयी थी और सभी यह जानने को अत्यन्त उत्सुक थे कि 'अर्थ' के सम्बन्ध में 'वेद' और ऋषि दयानन्द क्या कहते हैं ? वर्तमान सन्दर्भ में वेद का अर्थ शास्त्र क्या हो सकता है ?

इन प्रश्नों का विस्तार पूर्वक उत्तर समय और साधनों की अपेक्षा रखता है। किन्तु हमने अपनी अल्प बुद्धि अनुसार १-२ दिन के अल्पकाल में ही यह लघु पुस्तिका परिचय मात्र की दृष्टि से उपस्थित की है। यह कहना अभी उचित न होगा कि हम इसमें अपनी बात उपस्थित करने में कहाँ तक सफल हुए हैं। फिर भी हम यह विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि 'वेद' वाणी की कल्याणी वीणा के स्वरों की झंकृतियों की छाया को हमने सीधे और सरल ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

हम अपने प्रयत्नों में कहाँ तक सफल हुए हैं इसका निर्णय तो विज्ञ पाठक ही कर सकेंगे। इतना आग्रह अवश्य है कि सभी इसे पक्षपात छोड़ कर पढ़ें और अपने सुझाव हमें भेजें। यदि कहीं कोई त्रुटि भी प्रतीत हो तो हमारा मार्ग दर्शन विज्ञ जन करें, हम उनके आभारी होंगे।

धरती के आँगन से अभाव मिटाने का कार्य 'वेद' के अनुयायी करें। हमारी दृष्टि से आधुनिक नारों व रक्तपात की नीतियों से मानव को मुक्ति प्रदान करने का कार्य 'वेद' की राह पर चलकर ही किया जा सकता है।

प्रभु कृपा करें कि हम सब वेदानुयायी सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करते हुए 'वेद' के प्रकाश से अपना और धरती का अन्धकार मिटाने में समर्थ हों मंगल कामनाओं के साथ—

अध्यक्ष —भारतेन्द्रनाथ

दयानन्द संस्थान

नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद और ऋषि वचन

ऋग्वेद--मं० ४-६६-१

जैसे उत्तम प्रकार शिक्षित और अनुरक्त सेना से वीरजन विजय को प्राप्त होते हैं। वैसे ही कृषि खेती कर्म में चतुर जन ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं।

ऋग्वेद—४-६७-५

खेती करने वाले जन प्रथम खेती करने की विद्या को ग्रहण करने के पश्चात् यथायोग्य खेती कर धन और धान्य से सदा युक्त हों।

यजु०—१०-१२

जो राजपुरुष राजनीति के साथ वैश्यों की उन्नति करें वे ही लक्ष्मी को प्राप्त होवें।

यजु०—१२-७१

किसान लोगों को उचित है कि मोटी मट्टी अन्न आदि की उत्पत्ति से रक्षा करने हारी पृथिवी की अच्छी प्रकार परीक्षा करके हल आदि साधनों से एक सार कर सुन्दर संस्कार किए बीज के उत्तम धान्य उत्पन्न करके भोगें।

— ऋषिदयानन्द

व्यापार करने वाले शिल्पी को सुवर्ण और चाँदी का जितना लाभ हो उसमें से पचासवाँ भाग, चावल आदि अन्नों में छठा, आठवाँ व बारहवाँ भाग (राजा) लिया करे, और जो धन लेवे भी तो भी उस प्रकार से लेवे कि जिससे किसान आदि धन से रहित होकर दुःख न पावें—

महर्षि का यह आदेश स्वतः सिद्ध कर रहा है कि व्यक्ति "धन" कमाने में स्वतन्त्र है। सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण और स्वामित्व राज्य का मानना वेद और ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के सर्वथा विरुद्ध है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूमिका

वेदों में समाजवाद नहीं है। फिर भी कुछ लोग वेदानुयाइयों के मन में समाजवाद की महिमा बैठा रहे हैं—उस समाजवाद की जो आजकल प्रचलित हो रहा है। जो कुछ वेदों में वर्णन किया गया है, वह समाजवाद नहीं है। क्योंकि समाजवाद जिन अर्थों में यह समझा जाता है, वह इस प्रकार है।

समाजवाद के अर्थ

अशोक मेहता भारत के एक विख्यात समाजवादी नेता अपनी पुस्तक 'Democratic Socialism' 'लोकतन्त्री समाजवाद' के पृष्ठ ४१-४२ पर इस प्रकार लिखते हैं :—

"Is it possible to have a definition that covers the entire gamut of its meaning ? The Encyclopaedia of the labour movement gives us a satisfactory, i.e. comprehensive definition—

Socialism is a working class doctrine and movement aiming through the class war at the collective control of society, by the capture of the state machine by the workers and establishment of self government in industry (Vol. III P. 154)

Different schools emerge through their varying emphasis on any one of the five clauses that make up the above defiunition.

(Democratic Socialism-Ashok Mehta P. 41, 42)

इसका अर्थ यह बनता है—

'क्या यह सम्भव है कि इस (समाजवाद) के सब स्वरों का एक व्यापक लक्षण किया जा सके ? मजदूर आन्दोलन का विश्व कोष एक ऐसा सन्तोषजनक एवं व्यापक लक्षण देता है। वह इस प्रकार है।

"समाजवाद एक मजदूर वर्ग का सिद्धान्त है। यह अपने उद्देश्यपूर्ति के लिये वर्ग संघर्ष के द्वारा कार्य करता है। उद्देश्य है समाज पर सामूहिक अधिकार। उपाय है मजदूरों द्वारा राज्य पर अधिकार कर लेना और उद्योग में स्वायत्त स्थापित करना। (खण्ड III, पृष्ठ-१५४)

समाजवाद के भिन्न-भिन्न सिद्धान्त इसी (लक्षण) के पाँच अंगों में एक अथवा दूसरे पर बल देने से उत्पन्न हुए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा मत है कि वेदों में यह समाजवाद नहीं है। यह भारत के कुछ पन्थों के ठेकेदार जनता को मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं।

समाजवाद शब्द के अर्थों की व्याख्या :

समाजवाद के पूर्वोक्त लक्षण में पहली बात है कि यह एक आन्दोलन (movement) है। वह आन्दोलन यह है कि संसार में एक श्रेणी है जिसे श्रमिक (वर्ग) कहते हैं। प्रत्येक समाज में एक वर्ग चिन्तक (विचारक) होता है। समाजवाद चिन्तक वर्ग को अपने में पनपने नहीं देता। जब कोई विचारक उन विख्यात सिद्धान्तों को न मान कर उस पर टीका-टिप्पणी करता है, तो वह अमान्य होगा। वह श्रमिक श्रेणी में नहीं आ सकता। अभिप्राय यह कि विचारक श्रमिक नहीं हो सकता।

श्रमिक का एक लक्षण यह भी है—

The class of wage labourers, who having no means of production of their own, are reduced to selling their labour power in order to live are called proletariate (laboures).

अर्थात्—वेतन पर मजदूरी करने वाले, जिनके पास मजदूरी के अतिरिक्त अन्य जीविकोपार्जन का साधन नहीं और जो जीवन चलाने के लिये अपना श्रम वेचने पर वाध्य होते हैं 'प्रोलिटेरिएट' (श्रमिक) कहलाते हैं।

इन लोगों के आन्दोलन को समाजवाद कहते हैं।

समाजवादी समाज में केवल दो वर्ग मानते हैं। एक श्रमिक वर्ग। इनके विषय में हम लिख चुके हैं। वे एक दूसरा वर्ग मानते हैं। इस वर्ग को वे 'बुर्जुआ' (bourgeosic) (पूँजीपति) कहते हैं। इनका लक्षण वे इस प्रकार करते हैं।

By bourgeosic is meant the class of modern capitalist owners of the means of social production and employes of wage labour.

(१) बुर्जुआ का अर्थ उस वर्ग के मनुष्यों से है जो आजकल पूँजीपति कहे जाते हैं और जो उद्योग-धन्धों के मालिक हैं तथा वेतन पर दूसरों को नौकर रखते हैं।

इसमें यह नहीं लिखा कि कितनी पूँजीं का मालिक अथवा कितने वेतनधारियों को नौकर रखने वाला। अभिप्राय यह है कि जो अपने मकान का एक कमरा भी किराये पर देता है अथवा जो चौका-वासन के लिये कुछ समय के लिये भी किसी को नौकर रखता है, वह पूँजीपति है।

इस प्रकार समाजवादी पूर्ण मानव समाज को दो वर्गों में विभक्त करते हैं। उनकी दृष्टि में तीसरा वर्ग नहीं। इनको वे (classes) मानव श्रेणियाँ कहते हैं।

(२) इन दो श्रेणियों में झगड़ा कराने के सिद्धान्त को मानने वाला समाजवादी है। यहाँ यह भी समझ लेना चाहिये कि किसी ने मकान जिसके एक कमरे के भाड़े पर दिया है, वह सरमायेदार (capitalist) है, परन्तु वह मकान उसने कैसे बनवाया है—इसका विचार नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक व्यक्ति अपने मेहनत-मजदूरी में मितव्ययता से रहता हुआ दस-बीस वर्ष में वेतन में से बचत कर मकान बनवाता है। परन्तु ज्योंही वह उसके एक भी कमरे को भाड़े पर देता है तो वह पूँजीपति हो जाता है और उसका किरायेदार से झगड़ा होना चाहिये। इसी प्रकार यदि कोई अपने वेतन में से पैसा-पैसा जमा कर कुछ धन एकत्रित कर लेता है और उसमें से अपनी वृद्धावस्था में एक सेवक वेतन पर रखता है तो वह बुर्जुआ (पूँजीपति) कहा जा सकता है।

इस प्रकार इन दो वर्गों में संघर्ष (झगड़ा) कराने वाला सिद्धान्त समाजवाद है। एक वेद का विद्वान दिन भर वेदाध्ययन और उस पर चिन्तन करता है। यदि वह अपने भोजन के लिए किसी पाचक को नौकर रखता है तो वह श्रमिक नहीं कहा जा सकता। वह पूँजीपति हो जायेगा।

यदि कोई चिन्तक अपने चिन्तन से अपने को इन दो वर्गों से पृथक् समझता है तो वह श्रमिक नहीं रह सकता और समाजवाद में उसका कोई स्थान नहीं।

मालिक मकान और किरायेदार में, भोजन खाने वाले और पाचक में, दुकानदार और दुकान पर बिक्री करने वाले (salesman) में, स्कूल मास्टर और चपरासी में, अभिप्राय यह है कि घर घर में और दुकान-दुकान पर कारखानों, दफ्तरों में अफसर अधीनस्थों में, मुसाफिर और कुलियों में, टैक्सी, रिक्शा में सवार और चलाने वालों में—एतदर्थ जीवन के प्रत्येक व्यवहार में जहाँ दो का सम्पर्क होता है, झगड़ा कराना समाजवाद है। इसे वह वर्ग संघर्ष का नाम देते हैं।

(३) जो श्रमिक (प्रोलिटेरिएट) है, उनका राज्य होना चाहिये। देश की सरकार श्रमिकों के हाथ में होनी चाहिये, विद्वानों के नहीं। हमने ऊपर बताया है कि चिन्तक एवं विद्वान श्रमिक हो ही नहीं सकते।

(४) ऐसी सरकार की सहायता से समाजवाद चलाया जायेगा और राज्य चलाया जायेगा ?

(५) श्रमिकों की सरकार का समाज पर (पूर्ण) अधिकार और उद्योग-धन्धों में श्रमिकों को स्वतन्त्रता होनी चाहिये।

हमारा यही कहना है कि जितनी प्रकार के भी समाजवाद आज की दुनियाँ में प्रचलित हैं, वे इन पाँचों अंग वाले लक्षण में समा जाते हैं।

वैदिक समाजवादी अल्प शिक्षित लोग ही हैं। हमारा कहना है कि वेदों में उक्त लक्षणों वाला वाद कहीं भी नहीं। उन लोगों को जो समझते हैं कि वेद में समाजवाद है, चाहिये कि वे बतायें कि इन पाँच बातों में कौनसी बात वैदिक समाजवाद में है ? यदि नहीं है तो समाजवाद शब्द का प्रयोग उन्होंने किसलिये किया है ?

वैदिक समाज शास्त्र :

समाज की व्यवस्था वेदों में वर्णन की गई है। यह प्रचलित समाजवाद की नहीं है। वैदिक समाज की व्यवस्था है वर्णाश्रम धर्म।

(१) वर्ण चार हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वेदादि शास्त्रों में इनको जन्म से नहीं माना। गुण, कर्म और स्वभाव से कहा गया है। उदाहरण के रूप में भगवद्गीता में कहा है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥

(भ० गी० १८।४१)

अर्थात्—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के कर्म और स्वभाव से उत्पन्न गुणों को करके (वर्ण) विभक्त किये गये हैं। वेद में भी कहा है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रो अजायत ॥

(यजु० ३१-११)

जैसे शरीर के अंग, सिर, बाहें, पेट और पाँव भिन्न-भिन्न कार्य करने के लिये होते हैं वैसे ही मनुष्य समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं।

हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य समाज में वैदिक व्यवस्था है वर्ण व्यवस्था। मनुष्य जीवन में व्यवस्था आश्रमों के विचार से है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम जीवन के चार विभाग हैं। अभिप्राय यह कि वैदिक समाज व्यवस्था तो वह नहीं जो प्रचलित समाज में है।

सबसे मुख्य अन्तर समाजवाद और वैदिक समाज व्यवस्था में यह है कि मनुष्य के कुछ व्यक्तिगत कर्त्तव्य हैं। उन कर्त्तव्यों में मनुष्य स्वतन्त्र है। उनमें वह किसी के भी अधीन नहीं। राज्य तो बहुत छोटी सत्ता है। वैदिक शास्त्रानुसार मनुष्य उन व्यक्तिगत कर्मों में परमात्मा के भी अधीन नहीं है। परमात्मा वेदों में मनुष्य को कुछ कर्म करने की प्रेरणा देता है, आदेश नहीं।

हाँ, कर्मों का फल कर्मानुसार मिलता है।

मनुष्य के सब कर्म दो भागों में बाँटे जा सकते हैं एक वे कर्म हैं जो दूसरों से व्यवहार के हैं और वे कर्म हैं जो करने वाले के अपने साथ ही सम्बन्ध रखते हैं। इनको सामाजिक कर्म और व्यक्तिगत कर्म कहते हैं।

उदाहरण के रूप में चोरी करना, झूठ बोलना इत्यादि कर्म ऐसे हैं जो सीधे दूसरों के साथ सम्बन्ध रखते हैं। इसके विपरीत मुसीबत के समय धैर्य रखना, प्रलोभन में अपने मन को काबू में रखना। इसे संस्कृत में दम, धर्म स्मरण किया जाता है। ये मनुष्य के अपने साथ ही सम्बन्ध रखते हैं।

यहां इतना समझ लेना चाहिये कि दम और इंन्द्रिय-निग्रह में अन्तर है। उदाहरण के रूप में किसी को एक सोने की डली पड़ी दिखाई देती है। कोई व्यक्ति मन से उस सोने की डली को उठाये बिना किसी के देख जेब में डाल लेने की इच्छा करता है। यह दम धर्म का भंग करना है। इसका फल मनुष्य के अपने मन पर ही होता है। चोरी तब होती है जब डली उठा कर अपनी जेब में डाल ली जाती है। चोरी सामाजिक कर्म है और दम व्यक्तिगत कर्म है।

मुख्य बात व्यक्तितगत कर्मों की है। समाजिक कर्म राज्य दण्ड का विषय है।

व्यक्तिगत और समष्टिगत कर्म

व्यक्तिगत कर्म वे कहलाते हैं जिनको करने से किसी दूसरे पर सीधा प्रभाव न हो। हमने शब्द 'सीधा' कहा है। इसमें कारण यह है कि आज के काल में कुछ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे कार्यों को भी सामाजिक कर्म समझा जाता है जो सामाजिक नहीं हैं।

कुछ व्यक्तियों ने व्यक्तिगत कार्यों को अपने काल्पनिक कारणों से सामाजिक कार्य घोषित कर रखा है। इस कारण हमने यह कहा है कि व्यक्तिगत कर्म उनको कहते हैं जिनका सीधा प्रभाव कर्म करने वाले के अतिरिक्त किसी पर न पड़े।

कर्म घृति, दम, घी: और विद्या व्यक्तिगत हैं। ये चार वैदिक जीवन मीमांसा के दस घर्मों में से हैं। ये सर्वथा व्यक्तिगत हैं। इन पर कार्य करने से किसी दूसरे पर प्रभाव नहीं पड़ता।

उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति विद्या घर्म का पालन करता हुआ कुरान पढ़ता है और उसे उसमें कुछ अयुक्तिसंगत बात समझ आती है। वह उसे एक पुस्तक में छपवाता है। प्रश्न उपस्थित होगा कि क्या यह व्यक्तिगत काम है अथवा समष्टिगत ?

ज्ञान वर्धन व्यक्तिगत कार्य है। अपना भी और अपने साथियों का भी। इस पर यदि कोई मुसलमान कहे कि कुरान पर आलोचना सुनकर उसे दु:ख हुआ है। इस कारण इस पुस्तक को जब्त कर लेना चाहिये और लेखक को कारावास का दण्ड देना चाहिये। इसमें कौन समष्टिगत कर्म कर रहा है ? पुस्तक लिखने वाला अथवा पुस्तक लिखने वाले को दण्ड की मांग करने वाला ? यह प्रश्न है। लिखी पुस्तक पढ़ने के लिये किसी को वाध्य नहीं किया जा सकता है। जिसे पढ़ने से दु:ख होता है, वह उसे न पढ़े। वह अपने साथियों को कहे कि इस पुस्तक को न पढ़ें। परन्तु लिखने वाले ने तो ज्ञानवर्धन के लिये अध्ययन किया और उसी निमित्त उसका प्रकाशन कराया है। यह तो सर्वथा घर्मानुकूल है।

कोई पढ़कर उसे दु:ख अनुभव करता है अथवा सुख, यह लेखक का काम नहीं। यह पढ़ने वाले का काम है कि वह पुस्तक न पढ़े। आलोचना करने के लिये स्वतन्त्र है। तब भी यदि वह मुसलमान, लेखक को कारावास का दण्ड दिये जाने का आग्रह करता है तो वास्तव में वह सामाजिक घर्म का भंग करता है और दण्डनीय है।

इस प्रकार से घर्म को विकृत करने को तानाशाही का नाम दिया जाता है। आज कोई कुरान पर आलोचना से दु:ख अनुभव करता है तो कल कोई राम की महिमा गाने पर भी दु:ख अनुभव करने लगेगा। किसी के अनुभव करने से कोई कार्य घर्म अथवा अघर्म नहीं हो जाता।

अतएव वैदिक जीवन मीमांसा का समाजवाद से जहाँ वर्णाश्रम घर्मों में भेद है वहाँ व्यक्तिगत और समष्टिगत कर्मों के विषय में भी भेद है। यही कारण है कि आज रूसी समाज के कर्णधार समाजवाद पर आलोचना करने वाले को अपराधी मानते हैं।

वैदिक समाज शास्त्र में व्यक्तिगत और समष्टिगत कर्मों में एक स्पष्ट रेखा है। व्यक्तिगत कर्मों में मनुष्य स्वतन्त्र है। समष्टिगत कर्मों में मनुष्य सामाजिक नियमों के अघीन है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनुभव करना "दम" धर्म की भांति व्यक्तिगत कर्म है। सामाजिक कर्मों पर राज्य-नियम काम करते हैं और व्यक्तिगत कर्मों पर राज्य नियमों का अधिकार नहीं है।

कभी-कभी व्यक्तिगत कर्म सामाजिक कर्म हो जाते हैं। वही सोने की डली वाला उदाहरण लिया जा सकता है। सामने रखी सोने की डली को पा जाने की इच्छा "दम" धर्म का उल्लंघन मात्र है। यह व्यक्तिगत धर्म है। यह राज्य नियम का विषय नहीं। परन्तु जब इस इच्छा को कर्म में परिणित किया जाता है अर्थात् मनुष्य सोने की डली को प्राप्त करने की इच्छा के लिये बल अथवा छल का प्रयोग करने लगता है तब यह सामाजिक धर्म का उल्लंघन करना हो जाता है। तब यह राज्य नियम का विषय बन जाता है।

समाजवाद में व्यक्तिगत धर्म और समष्टिगत धर्म दोनों को राज्य नियम के अधीन लाने का यत्न किया जाता है।

इस कारण भी हम समाजवाद को वैदिक धर्म के विपरीत मानते हैं। समाजवाद में मनुष्य के सब क्रिया-कलाप राज्याधीन हो जाते हैं।

अर्थ व्यवस्था

मानव कर्मों को चार वर्गों में बांटा गया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। कर्म के एक प्रकार से वर्गीकरण हमने ऊपर बताये हैं। एक तो वर्णाश्रम कर्मों में बांटा है और दूसरे ढंग से कर्म को व्यक्तिगत और सामाजिक कर्मों में विभक्त किया है।

यह भी हमने बताया है कि सामाजिक कर्मों पर ही राज्य नियम चलते हैं। व्यक्तिगत धर्म विद्वान लोगों की प्रेरणा के अनुसार पालन किये जाते हैं।

अब कर्मों का एक अन्य ढंग से वर्गीकरण किया बता रहे हैं। धर्म में तो सब प्रकार के कल्याणकारी कर्म आते हैं। अपने कल्याण के कर्म और दूसरों के कल्याण करने वाले कर्म, सब धर्म हैं। अकल्याण करने वाले अधर्म कहलाते हैं।

कुछ कर्म ऐसे हैं जो अर्थ की प्राप्ति के लिये किये जाते हैं। इनको अर्थ की श्रेणी में कहा जा सकता है। कुछ कर्म हैं जो भोग तथा कामनाओं की पूर्ति के लिये किये जाते हैं, इनके अतिरिक्त कुछ कर्म हैं जो मोक्ष प्राप्ति के लिये किये जाते हैं।

अर्थ, काम और मोक्ष के लिये भी जो कर्म किये जाते हैं, वे सब धर्म और अधर्म की श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं।

अर्थ को प्राप्त करने में किये जाने वाले धर्म युक्त कर्म ही उपयुक्त हैं। इसी प्रकार कामनाओं के भोग में भी धर्म युक्त कर्म ही वांच्छनीय हैं। कहा जाता है कि मोक्ष प्राप्ति तो धर्म युक्त कर्मों से ही सम्भव है।

यहाँ हम अर्थ के विषय में लिख रहे हैं। "अर्थ" वह है जिससे इच्छित पदार्थ प्राप्त किये जा सकें।

मनुष्य की सबसे आवश्यक इच्छित वस्तु उसका जीवन है। जीवन को चलाने के लिये वायु, जल और अन्न आवश्यक हैं। इन तीनों से उतर कर मनुष्य की आवश्यकता है मकान और वस्त्र। इन सब वस्तुओं को "अर्थ" का नाम दिया जाता है। वायु, जल, अन्न, मकान और वस्त्र। ये अर्थ हैं। इनके मूल पदार्थ परमात्मा ने मनुष्य को दिये हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वायु और जल तो बहुत बड़ी मात्रा में पृथिवी पर उपलब्ध हैं। इस पर भी इनको हम सब स्थान पर समान रूप में प्राप्त नहीं कर सकते। अन्न कई स्थानों पर तो फल, मूलकन्द के रूप में उपस्थित होते हैं, परन्तु अन्य स्थानों पर और पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना पड़ता है।

इसका अभिप्राय यह है कि यद्यपि प्रकृत्ति ने सब पदार्थ पृथिवी पर दिये है, परन्तु इनको प्राप्त करने के लिये अथवा उस रूप और मात्रा में उपलब्ध करने के लिये जिससे जीवन चल सके, यत्न करना पड़ता है।

इसी कारण अर्थ से अभिप्राय वायु, जल, अन्न मकान और वस्त्र तो है ही; साथ ही इनको उपयोगी रूप में प्राप्त करने के लिये यत्न भी अर्थ ही कहलाता है।

अतः अर्थ मानव परिश्रम है। इस कारण कि परिश्रम से ही जीवनोपयोगी पदार्थ प्राप्त किये जाते हैं अथवा उनको प्राकृतिक रूप से उपयोगी रूप में बनाया जा सकता है। जीवन चलाने के लिये आवश्यक पदार्थ "अर्थ" हैं। उनको उपयोगी रूप में प्राप्त करने में किया गया परिश्रम भी "अर्थ" कहा जा सकता है। रुपया-पैसा इत्यादि के सिक्के अथवा नोट मानव परिश्रम को विनिमय करने के साधन मात्र हैं।

उदाहरण के रूप में हम राजस्थान के रेगिस्तान में जीवन चलाना चाहते हैं। जल वहाँ उपलब्ध नहीं। इसके लिये बहुत गहरे कूप खोदे जाते हैं और उनमें से जल कठोर प्रयत्न से प्राप्त किया जाता है। कुएं से निकाल प्रयोग के स्थान पर जल लाने में परिश्रम करना पड़ता है। यह परिश्रम ही जल का मूल्य हो जाता है। कभी इस मूल्य को भी अर्थ कह देते हैं। वास्तव में जल का तो कुछ भी मूल्य नहीं। यह तो प्रकृति कहें अथवा परमात्मा कहें, ने बिना दाम लिये दिया है. इस पर भी जल का मूल्य उस परिश्रम के अनुसार हो जाता है जो उसे कुएं से निकाल प्रयोग के स्थान पर ले जाने में होता है।

इसी प्रकार अन्य आवश्यकताओं के उपलब्ध करने अथवा उनको उपयोगी स्थान पर उपयोगी रूप में देने के लिये व्यय किये परिश्रम के अनुसार ही उसका मूल्य होता है। यही बात वस्त्र, मकान, अन्न इत्यादि की भी है।

अभी तक हमने यह बताया है कि परिश्रम ही अर्थ है। मूल पदार्थ प्रकृति अथवा परमात्मा के दिये हुए हैं। उन मूल पदार्थों को उपयोगी रूप देने में परिश्रम करना पड़ता है। इस कारण परिश्रम ही "अर्थ" है।

यह परिश्रम अर्थात् कार्य करने की सामर्थ्य कहाँ से आती है? यह अन्न से प्राप्त होती है। अन्न भी परमात्मा की देन है।

अन्न में तीन पदार्थ जीवन उपयोगी हैं। कार्बोहाइड्रेट्स (Carbohydrates) ये शरीर में सामर्थ्य देते हैं। दूसरी प्रकार के पदार्थ को प्रोटीन (protein) कहते हैं। ये शरीर निर्माण में भाग लेते हैं। तीसरी प्रकार के पदार्थ साल्ट्स (salts) हैं। ये भी शरीर निर्माण में भाग लेते हैं।

अन्न में ये पदार्थ प्रकृति से ही उपलब्ध होते हैं। इनके मूल पदार्थ कार्बन, हाईड्रोजन, आक्सीजन, नाइट्रोजन, कैलशियम इत्यादि सब प्रकृति अमूल्य ही देती है। इनको प्राप्त करने तथा इनके उपयोगी रूप देने में जो परिश्रम लगाना पड़ता है हीव इनका मूल्य है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक शब्द में परिश्रम ही अर्थ है। पदार्थ का मूल्य इनको मानवोपयोगी रूप देने में व्यय किया परिश्रम इसका मूल्य है। मूल्य का दृश्यमान रूप धन है।

परिश्रम का रूप

जल ही का उदाहरण ले सकते हैं। कुएं में जल है। कुएं के बाहर प्यासा मनुष्य खड़ा है। प्यास भी है और जल भी है, परन्तु जब तक लोटा, डोरी न हो, जल उपलब्ध नहीं हो सकता।

राजस्थान में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ वर्षा का जल ही उपलब्ध है। कुएं खोदने पर भी जल नहीं मिलता। वहाँ मनुष्य जल को तालावों में, कुण्डों में एकत्रित कर रखता है। वर्षा ऋतु में एकत्रित किया जल वर्ष भर प्रयोग होता है। जल को संचित रखने के लिये तालाब, कुण्ड इत्यादि बनाने पड़ते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि जल तो है, परन्तु जल के प्रयोग के स्थान पर और आवश्यकता के समय प्राप्त करने के लिये कुछ साधन चाहियें।

इसी प्रकार अन्य प्राकृतिक वस्तुओं को प्रयोग के योग्य बनाने के लिये तथा प्रयोग के समय और स्थान पर पहुँचाने के लियें परिश्रम की आवश्यकता होती है। परिश्रम बिना साधनों के कार्य नहीं करता।

खेत में अन्न उत्पन्न होता है। इस पर भी बिना परिश्रम के और बिना साधनों के अन्न प्राप्त नहीं होता। बीज, भूमि, जल, खाद और परिश्रम के साथ खेती-वाड़ी का ज्ञान होना आवश्यक है।

कहने का अभिप्राय यह है कि साधनों के बिना परिश्रम भी फल नहीं देता।

अब एक मकान का उदाहरण लिया जा सकता है। मकान के लिये सीमेंट, ईंट, रेत, लोहा और निर्माण के लिये परिश्रम तथा मकान बनाने की विद्या, ये सब साधन हों तो मकान जो अर्थ का एक रूप है, मिल सकता है।

अतएव किसी भी उपयोगी वस्तु को निर्माण करने के लिये निम्नलिखित चार प्रकार के साधन चाहियें।

(१) कच्चा माल (raw material) (२) परिश्रम (labour) (३) ज्ञान (knowbdge) (४) इन सबको एकत्रित करने के लिये नियुक्तक (administration) करने की योग्यता होनी चाहिये। इसे प्रबन्ध (management) कहते हैं।

इनमें प्रवन्ध और परिश्रम को एक में ही गिना जा सकता है। परन्तु कच्चा माल और ज्ञान को एक स्थान पर एकत्रित करने के लिये धन जिसे पूँजी कहते हैं, उसकी आवश्यकता रहती है।

ज्ञान से हमारा अभिप्राय ज्ञानवानों के बनाये उपकरणों से है। इसी में मशीनें इत्यादि ली जाती हैं। कच्चा माल और उपकरण तथा मशीनों को कार्य के स्थान पर उपलब्ध करने के लिये धन (पूँजी) की आवश्यकता रहती है।

विश्लेषण करने पर पता चलेगा कि उपयोगी कार्य के लिये मुख्य रूप में दो साधन अत्यावश्यक है—पूँजी और परिश्रम।

अतः अर्थ उपयोगी पदार्थ का नाम है। उपयोगी पदार्थ बने बनाये प्रकृति में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रयोग के स्थान पर नहीं होते । साधन और परिश्रम को एक स्थान पर प्राप्त करने की आवश्यकता रहती है । इस पर व्यय किये धन को पूंजी कहते हैं ।

पूँजी और परिश्रम का सम्बन्ध

पूंजी और परिश्रम अन्योन्य आश्रित हैं । दोनों का परस्पर सहयोग हो तो कार्य चल सकता है ।

इसमें एक साधारण सा उदाहरण लिया जा सकता है ।

दर्जी हाथ से कमीज सीता है तब भी इसे सुई और धागे की आवश्यकता रहती है । कपड़ा भी चाहिये । तभी कमीज तैयार हो सकती है । कपड़ा, सुई और धागे इत्यादि के लिये पूंजी आवश्यक है । अतः उत्पादन में पूंजी अत्यावश्यक अंग है । बिना इसके परिश्रम से कुछ नहीं कर सकता ।

• जबसे बढ़िया प्रकार की मशीनों का आविष्कार हुआ है तबसे पूंजी की महिमा और भी अधिक बढ़ गयी है ।

प्रश्न उपस्थित होता है कि पूंजी का स्रोत कहां है ? पूंजी वास्तव में किसी एक व्यक्ति अथवा बहुत से व्यक्तियों के परिश्रम का फल होता है ।

मनुष्य शरीर भी एक मशीन है । यह कार्य करती है—यदि इसको अन्न-अनाज और अन्य आवश्यक पदार्थ उपलब्ध कराये जायें । अभिप्राय यह कि शरीर काम करता है और इसको काम करने के योग्य बनाने के लिये इस पर व्यय करना पड़ता है । इस पर भी देखा गया है कि शरीर को चालू रखने के लिये जितना व्यय किया जाता है, उससे अधिक उत्पादन यह करता है । अर्थात् शरीर पर व्यय से शरीर की आय अधिक होती है । यह प्रत्येक व्यक्ति की बचत कहलाती है । यह बचत ज्ञान युक्त कर्म करनें से बढ़ जाती है । यह बचत ही पूंजी बन जाती है ।

उदाहरण से बात समझ में आ जायेगी । हाथ से सीने पर दर्जी दिन भर में दो कमीज सी सकता है । दो की सिलाई आठ रुपये बन जायेगी । छः रुपये उसके परिवार में व्यय हो जाते हैं । वह दो रुपये नित्य बचाता है । छः महीने में वह साढ़े तीन सौ रुपये की कपड़े सीने की मशीन खरीद लेता है । यह परिश्रम को पूंजी में परिवर्तन करने का उदाहरण है ।

कुछ लोग अपने बचत के धन को पूंजी में परिवर्तन करने की योग्यता नहीं रखते । इस पर भी वह अपनी पूंजी का लाभ उसे बैंक में जमा कराकर प्राप्त करते हैं ।

एक अर्थ का सदुपयोग जानने वाला बैंक से रुपया लेकर किसी उद्योग में पूंजी के रूप में लगाकर उससे लाभ उठा लेता है ।

इस सबसे हमारा अभिप्राय यह है कि परिश्रम ही पूंजी है । दोनों का रूप भिन्न-भिन्न हैं । परिश्रम कच्चे माल को निर्मित्त माल में परिवर्तित करता है । इस प्रकार कच्चे माल का मूल्य बढ़ाकर परिश्रम का फल पाता है । परन्तु जब परिश्रम को संचित कर उससे ऐसे उपकरण प्राप्त किये जाते हैं जिनसे परिश्रम का फल बढ़ जाये तो वह संचित परिश्रम पूंजी कहलाती है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़े-बड़े उद्योगों में कई-कई लोगों का संचित परिश्रम, पूंजी के रूप में प्रयोग होता है। यह है अर्थ तन्त्र।

समाजवाद और पूंजी

यह हमने देखा है कि पूंजी जब परिश्रम से संयुक्त हो जाती है तब फल अधिक होता है। समाजवादियों का कहना है कि पूंजी से लाभ प्राप्त किया जाता है। उनका कहना है कि परिश्रम को लाभ का अधिक भाग मिलना चाहिये। पूंजीपति धोखा-धड़ी कर श्रमिकों को छल लेता है और आप अधिक प्राप्त कर लेता है।

समाजवादी यह भी कहता है कि एक बार जो पूंजीपति बन जाये वह अधिक और अधिक धनवान होता जाता है और श्रमिक तो निर्धन का निर्धन ही रहता है।

वह यह भी कहता है कि पूंजीपति किसी उद्योग अथवा व्यवसाय में पूंजी के बल पर एकाधिकार बना लेता है। इस कारण पूंजीपति नहीं रहने चाहियें।

यह लांच्छन सब उद्योगपतियों पर न लग सके तो भी एक बहुत बड़ी सीमा तक सत्य हैं। परन्तु यह दोष तो मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के कारण उत्पन्न होते हैं। इसका पूंजी के साथ सम्बन्ध वैसे ही है जैसे कि उद्योग में उत्पादन पूंजी के आश्रय बढ़ जाता है वैसे ही धन प्राप्त होने के साथ धनी के मन में पाँच विकार भी बढ़ जाते हैं।

उद्योग की आय तो बिना पूँजी के भी होती है, यद्यपि बहुत कम। यह आय परिश्रम में निहित है। इसी प्रकार मनुष्य में काम, लोभ, मोह इत्यादि दुर्गुण तो पूंजी के अतिरिक्त भी हैं। ये मन के विकार हैं। धन से ये विकार बढ़ जाते हैं।

इनके दूर करने का उपाय पूंजी छीन लेना नहीं। यह मनुष्य के मन में विवेक उत्पन्न करने से दूर हो सकते हैं।

पूंजी विहीन विवेकी कल्याण करेगा बहुत कम। पूंजी रखने वाला उद्योगपति यदि विवेकी होगा तो वह कल्याण कार्य भी अधिक करेगा। इस कारण पूंजी में दोष नहीं। यह दोष है देशवासियों में अविवेक का होना।

समाजवादी कहते हैं कि पूँजी सरकार के हाथ में हो जाये तो पूँजी केअवगुण नहीं रहेंगे। हमारा कहना है कि यदि देश में अविवेक व्यापक होगा तो पूँजी सरकार के हाथ में जाने से भी काम, क्रोध, लोभ और मोह उन कर्मचारियों में हो जायेंगे जो सरकार की ओर से पूँजी को चालना देंगे।

भारत में ही नहीं, वरंच उन सब देशों में पूँजी का दुरुपयोग हो रहा है जहाँ लोगों में विवेक का अभाव है।

समाजवाद न्यूनाधिक भूमण्डल के सब देशों में स्वीकार किया गया है। यही कारण है कि सब देशों की अर्थ व्यवस्था विगड़ रही है। इस विगड़ी अर्थ व्यवस्था का परिणाम यह हो रहा है।

(१) महंगाई बढ़ रही है। (२) बेकारी बढ़ रही है। (३) चरित्र-हीनता बढ़ रही है, (४) हत्या काण्ड, गर्भ पात और दुराचार वृद्धि पर है। (५) वेतन बढ़ रहे हैं, परन्तु कीमतें उससे भी अधिक बढ़ रही हैं। (६) प्रायः सब देशों में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्न-अनाज का अभाव हो रहा है।

ये सब दुर्गुण उतने ही अधिक वहाँ देखे जाते हैं जहाँ जितना समाजवाद अधिक हो गया है।

समाजवाद के दोष :

आज मशीन युग में पूँजी तो उद्योग का अनिवार्य अंग है। अन्तर समाजवादी व्यवस्था और व्यक्तिवादी व्यवस्था में यह है कि समाजवाद में सरकार जो पूँजी निर्माण करने वाली नहीं होती, वह पूँजीपति बन जाती है। पूँजी तो श्रमिकों की होती है, परन्तु प्रबन्ध अपने राजनीतिक प्रभाव के कारण सत्ताधीश लोग पूँजी का प्रयोग करने लगते हैं। उद्योग में लाभ तथा हानि से सरकार की स्थिति में अन्तर नहीं पड़ता। हानि उनको होती है जिनके गाढ़े पसीने की कमाई बैंकों में जमा होती है।

भारत का उदाहरण लिया जा सकता है। सरकारी उद्योगों में लाभ नगण्य है और सरकार उसमें जनता का धन अथवा जनता के नाम पर उधार लिया धन लगा रही है। निरन्तर घाटा होने के कारण रुपये की कीमत कम हो रही है।

(१) विचार करिये कि एक श्रमिक का पांच हजार रुपया सन् १६५४ में सेविंग बैंक में जमा था। दो सौ रुपया व्याज तो वह प्रतिवर्ष ले लेता है। बीस वर्ष के उपरान्त सन १६७४ में उसे व्याज दो सौ के स्थान ढाई सौ मिलने लगे हैं, परन्तु जो मकान वह सन् १६५४ में पांच हजार में खरीद सकता था, वह आज अस्सी हजार में भी कठिनाई से मिल सकता है। कहने का अभिप्राय यह कि उसके रुपये का मूल्य छः पैसे रह गया है।

इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि समाजवाद से सरकार का दिवाला निकल गया है और एकदिवालिये की भाँति उसके लेनदारों को आज रुपये के छः पैसे मिल रहे हैं।

पेट्रोल के राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग होने से पहले जापान, ताईवान और पश्चिमी जर्मनी भूमण्डल के अर्थ दृष्टि से उन्नत देश थे। कारण यह था कि इन देशों में समाजवाद का प्रभाव सबसे कम था।

पेट्रोल पर रोक लग जाने से उन देशों को सबसे अधिक हानि हुई है जहां पेट्रोल नहीं है। इस कठिनाई का सम्बन्ध समाजवाद से नहीं है।

(२) समाजवाद में श्रमिक और मालिक में झगड़ा अनिवार्य है। यह झगड़ा रूस जैसे देश में भी है। यही कारण है कि वहाँ क्रान्ति हुये साठ वर्ष होने जा रहे हैं और अब भी वहां साइबेरिया में लेबर कैम्प्स कैदियों से भर रहे हैं।

(३) समाजवादी व्यवस्था में हानि-लाभ का उत्तरदायित्व किसी पर नहीं होता। घाटा सदा श्रमिकों को रहता है। उनकी सम्पत्ति का मूल्य कम होता जाता है।

(४) समाजवादी देश में जीवन का आदर्श अर्थ (money) हो जाने से चरित्रहीनता अनिवार्य रूप से पनपती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(५) समाजवादी देश में बेकारी व्यापक रहती है। इसका कारण यह है कि देश में एक ही (सरकार) पूँजीपति होने से बड़े-बड़े उद्योग और बड़ी-बड़ी मशीनें लगाती जाती है। परिणाम यह होता है कि ऐसे देशों में मानव परिश्रम की आवश्यकता कम हो जाती है। मनुष्य बेकार होते जाते हैं।

(६) मनुष्य अपने सब कामों के लिये सरकार पर निर्भर करने से एक पालतू पशु की भाँति होता जाता है और उसकी बुद्धि और व्यवहार पशुओं का सा होने लगता है।

होना क्या चाहिए ?

मनुष्य अपने कर्मों में स्वतन्त्र है। वह कर्म करे अथवा न करे। कार्य दिल लगा कर करे अथवा आधे दिल से करे और कार्य उत्पादन युक्त करे अथवा मनोरंजन का करे? मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है।

इसकी शारीरिक आवश्यकतायें ही उसको दिल लगा कर आठ घंटे नित्य काम करने पर विवश कर सकती हैं। इस कारण यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपने कर्म करे और उससे उत्पन्न होने वाले फल का स्वयं उत्तरदायी हो।

यह तब ही हो सकता है जो स्वतन्त्र व्यवसाय करने की छूट हो और उसके साथ कार्य करने के हानि-लाभ का उत्तरदायित्व कर्म करने वाले पर हो।

जब प्रत्येक व्यक्ति पर उत्तरदायित्व पड़ेगा तो वह बुद्धि का प्रयोग करेगा और अपनी कामनाओं को नियन्त्रण में रखेगा।

जो विषमता मशीन युग से उत्पन्न हो गई है उसका निवारण राज्य अपनी न्याय व्यवस्था और शासनपद्धति को समयानुसार बना कर करे जिससे पूँजी और श्रम में उपज का बंटवारा ठीक प्रकार से हो सके।

आवश्यकता है राज्य व्यवस्था में सुधार करने की; न कि अर्थ व्यवस्था को विकृत करने की।

हमारा यह निश्चित मत है कि मनुष्य का आत्मा कर्म करने में स्वतन्त्र रहने के लिए बना है और इसे स्वतन्त्रता पूर्वक काम करना चाहिये।

'कर्मण्येवाधिकारस्ते'। यह गीता का कथन है।

पंजाबीबाग,
दिल्ली।

—गुरुदत्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विषय प्रवेश

आज के युग का सर्वाधिक चर्चित विषय "अर्थ" का है। युग के मनोषियों ने इस पर इतना बल दिया व चिन्तन किया है कि संसार के अधिकांश व्यक्तियों ने 'अर्थ' की समस्या को ही जीवन की प्रमुखतम समस्या मान लिया है। उनकी दृष्टि में रोटी-कपड़ा और मकान की समस्या का समाधान ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना दिया गया है।

युग प्रवाह के वशीभूत वेदानुयायी या धर्म परम्परा के किसी भी व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि क्या संसार के सब से प्राचीन ग्रन्थ 'वेद' के अनुसार भी इस समस्या का कोई समाधान है? क्या 'वेद' के आधार पर कोई ऐसी अर्थनीति उपस्थित की जा सकती है जो युग के ज्वलंत प्रश्नों के उत्तर दे सके एवम् उलझी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सके।

इस गंभीर प्रश्न पर ग्रन्थ रचना तो कोई अर्थ-शास्त्री ही कर सकता है। हम तो संप्रति कुछ प्रश्नों पर विचार कर कतिपय सूत्रमात्र प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। पाठक या विद्वत् जन इन पर मनन करें और यदि हमारे चिन्तन में कहीं त्रुटि हो तो हमें अवगत कराएं। हमारा दृष्टिकोण 'वेद' की ऋचाओं पर आधारित है, और हम इस दिशा में विद्वानों के सुझावों का स्वागत करेंगे।

अर्थनीति का आधार

प्रत्येक चिन्तन का प्रेरक कोई आधार होता है। आज के अर्थ-शास्त्र का आधार है "शरीर"। शारीरिक अर्थात् भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन जुटाने से संबद्ध शास्त्र ही है अर्थ-शास्त्र। पाश्चात्य आधुनिक अर्थशास्त्री यह मानते हैं कि मनुष्य की कुछ आवश्यकताएं हैं और इन्हीं की पूर्ति के लिए उन्होंने मार्ग दर्शन किया है। किन्तु वैदिक विचारधारा में मनुष्य की भौतिक आवश्यकताएँ धर्म और मोक्ष से निर्देशित होकर चलती हैं, वैदिक ऋषि यह मानते हैं कि भौतिक जगत् में 'अर्थ' रेख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काम जीवन संचालनार्थ आवश्यक साधन हैं किन्तु वे अर्थ और काम को साधनमात्र ही मानते हैं—साध्य कोटि में "धर्म" और "मोक्ष" ही रहता है। इसी बात को और भी स्पष्ट करना हो तो इस प्रकार किया जा सकता है कि आज का अर्थ-शास्त्र केवल भौतिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है और उसका चिन्तन सूत्र शारीरिक आवश्यकताओं तक ही सीमित है किन्तु इसकी तुलना में वैदिक व्यवस्था में 'शरीर' और 'आत्मा' दोनों की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। पाश्चात्य अर्थ व्यवस्था स्थिति जन्य वायुमंडल की प्रतिक्रियाओं का ही परिणाम है। उसका जन्म भी अन्य पाश्चात्य दर्शनों के ही तुल्य कुतुहल बुद्धि एवम् तद् जनित प्रश्नों और ज्ञान पिपासा की शान्ति के प्रयासों का परिणाम है। यह भी सत्य है कि आज पाश्चात्य अर्थ व्यवस्था के साम्यवाद एबम् समाजवाद सरीखे दर्शनों का प्रादुर्भाव बहुत बड़ी सीमा तक व्याख्याताओं व उद्गाताओं ने राज-नीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी किया था और आज भी यह क्रम जारी ही है। क्योंकि साम्यवाद के मूल व्याख्याकार काल मार्क्स के दर्शन की व्यवस्थाएँ भी विभिन्न देशों के साम्यवादी कर्णधार अपने ढंग से कर रहे हैं। इसीलिए आज जहां मार्क्स दर्शन की चर्चा आर्थिक सिद्धान्तों के संदर्भ में की जाती है, वहाँ माओवाद की भी चर्चा है।

संक्षेप में कहा जाए तो यहा कहा जा सकता है कि पाश्चात्य आर्थिक दर्शन का उद्देश्य जहाँ केवल भौतिक आवश्यकताओं व समस्याओं का समाधान मात्र हा है, वहा वैदिक दर्शन धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारों का साधक है अथवा यों भी कह लीजिए कि जहाँ पाश्चात्य आर्थिक दर्शन भौतिक दुःखों का शमन करने के उपायों के वर्णन तक सीमित है वहाँ वैदिक दर्शन का अन्तिम उद्द श्य है दुःख निवृत्ति, मृत्यु पर विजय अर्थात् मोक्ष प्राप्ति। हाँ अवान्तर उद्देश्य अर्थ-काम व धर्मार्जन भी है। **वैदिक अर्थ शास्त्र शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति शरीर के लाभ और आत्मा के विकास को साथ साथ लेकर करता है।**

'शरीर' वाहन है 'आत्मा' का। 'शरीर' का काम 'आत्मा' के विकास के विज्ञान में सहायक का है। शारीरिक उन्नति आवश्यक है, इसलिए कि आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो। आत्म ज्ञान के साथ साथ जिस अर्थ शास्त्र का विकास होगा, उसका आधार 'धर्म' होगा। उसका लक्ष्य 'मोक्ष' होगा, और उसका काम शरीर का पोषण, संवर्धन होगा।

'अर्थ' का तात्पर्य है शारीरिक आवश्यकता पूर्ति के साधन। ये साधन क्या हों? कितने हों, कैसे जुटाए जाएं? यह सभी कुछ अर्थ-शास्त्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का विषय है, धर्म और मोक्ष का लक्ष्य रखने पर आवश्यकताएँ सीमित रहती हैं। शरीर की आवश्यकताएँ तो गिनी चुनी हैं, समस्या तब खड़ी होती हैं जब आवश्यकता वासना बन जाती है। शरीर जब भौतिक पदार्थों का उपयोग अपने विकास और संरक्षण के लिए करता है तब उसे जिसे वस्तु की कामना होती है, वह उसकी आवश्यकता होती है। किन्तु जब 'शरीर' किसी वस्तु में आनन्द की खोज करने लग जाता है, और उस वस्तु की प्राप्ति में अधिकाधिक सुख का अनुभव करता हैं और शरीर तक की लाभ हानि की बात भूल जाता है तब वह वासना की कोटि में आ जाता है।

वैदिक अर्थ व्यवस्था में शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का मार्ग तो प्रस्तुतहै ही, उन आवश्यकताओं को कम-से-कम रखने का मार्ग दर्शन भी दिया गया है। जबकि पाश्चात्य अर्थ शास्त्र आवश्यकताओं को बढ़ा कर उन्हीं की पूर्ति को जीवन का लक्ष्य मानता है।

महात्मा कबीर ने इसी भाव को दोहे में व्यक्त करते हुए कितना सुन्दर कहा है।

गोधन-गजधन-वाजिधन, और रतनधन खान,
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।

धन क्या है ?

आधुनिक अर्थ-शास्त्र उन सभी वस्तुओं को 'धन' मानता है, जिनका क्रय विक्रय हो सके। किन्तु वेद के अनुसार

१—ब्राह्मण का धन "ज्ञान" (Knowledge) है।
२—क्षत्रिय का धन "शौर्य" (Heroism) है।
३—वैश्य का धन "व्यापार" (Commerce and money) है।
४—शूद्र का धन "श्रम" (Lobour) है।

पाश्चात्य आर्थिक चिन्तकों में से साम्यवादी और समाजवादी वर्ग विहीन समाज की स्थापना में विश्वास रखता है किन्तु (वेद) जन्म से व्यक्तियों में किसी भी प्रकार का भेद न मानते हुए कर्मों के अनुसार मनुष्य जाति को चार वर्णों में विभाजित करता है। समाज शास्त्र का यह मौलिक अन्तर अर्थ शास्त्र पर व्यक्तिगत प्रभाव डालता है।

एक ओर व्यक्ति की आवश्यकता रोटी-कपड़ा और मकान तक सीमित कर दी जाती है। सभी का उद्देश्य इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित रह जाता है किन्तु वैदिक दर्शन में ब्राह्मण—जो सब से अधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाज में सम्मान और आदर का पात्र है, उसका धन "ज्ञान" है। अपने ज्ञान से वह समाज का मार्ग दर्शन करता है। उसका जीवन "ज्ञान" के चरणों में अर्पित है। फूंस की कुटिया और मिट्टी के बर्तनों वाले ब्राह्मण के चरण में सम्राट व धनपति का सिर झुक जाता है। ब्राह्मण इसलिए ऊँचा और महान् है कि उस के पास "ज्ञान" रूपी धन है। वह भौतिक सम्पदा के पीछे नहीं भागता। उसका लक्ष्य "ज्ञान" है। उसका "ज्ञान" उसे ऊपर उठाता है।

क्षत्रिय समाज की रक्षा करता है। उसे आततायियों से बचाता है। शरीर का बलिदान देकर भी वह समाज की रक्षा करता है। उसका धन "शौर्य है" वह समाज का प्रहरी है। शक्ति संचय द्वारा वह अपने को जितना शूरवीर और राष्ट्र रक्षा में समर्थ बनाता है, वह उतना ही ऐश्वर्य संपन्न समझा जाता रहा है।

'वैश्य' व्यापार करता है। भौतिक पदार्थों का उत्पादन करता है। अपने ज्ञान और विज्ञान से समाज के लिए समस्त भौतिक साधन संग्रह के पीछे उसका उद्देश्य समाज का सुख है। अन्न, गौ, पशुधन, एवम् वस्त्र, मकान, सामान आदि भौतिक पदार्थों की, स्वर्ण, रत्न, भण्डारों की वृद्धि करना "वैश्य" का काम है।

आज की भाषा में जिसे अर्थ-शास्त्र कहा जाता है वह वस्तुतः केवल वैश्य का शास्त्र है। वैश्य व्यापार करता है, धन संग्रह भी करता है। वह अपार संपत्ति का स्वामी भी होता है, किन्तु इस पर भी एक अंकुश है—

धर्म का अंकुश, मोक्ष का अंकुश

यह अंकुश उस के मानस में निरंतर एक ध्वनि गुंजाता है। 'इदन्न मम्' यह सब मेरा नहीं है। मैंने इसे कमाया है, पर यह मेरा नहीं है।'

प्रश्न गूंजता है कि फिर यह सब किसका है..................धर्म उत्तर देता है यह धन उसका है जिसे इसकी आवश्यकता है! और यदि कोई झूठी आवश्यकता बताए तो........................कौन निर्णय करे........... कि आवश्यकता किसे है ?—राजा, प्रजापालक राजा निर्णय करे कि धन किसको कितना चाहिए!

धन का कैसा प्रयोग हो, इस के लिए यज्ञ का मार्ग वैदिक अर्थनीति का दिशा सूचक निर्देशक है।

वैदिक दृष्टि से "धन" नाम है संग्रह का, जीवन साधन धन नहीं हैं। संग्रहीत साधन ही धन हैं और संग्रह का अधिकार केवल वैश्य को है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दैनिक यज्ञ में हम प्रार्थना करते हैं कि—

प्रसुव यज्ञं

हे प्रभो ! हमें यज्ञ की प्रेरणा करो। क्योंकि "यज्ञ" नाम है उस शास्त्र का, जो श्रेष्ठतम कर्म का निर्देश करता है। (Science of Holy action)।' मंत्र आगे कहता है—

प्रसुव यज्ञपतिं--

यज्ञ के पालन करता को यज्ञ मार्ग पर चलने की प्रेरणा करो। प्रश्न उठता है—क्यों ?

वेद कहता है—"**भगाय**"।
ऐश्वर्य के लिए; धन के लिए।
उन्नति (Prosperity) धन है !
अभ्युदय (Dignity) धन है !
यश (Glory) धन है !
सौन्दर्य (Beauty) धन है !
प्रेम (Love) धन है !
प्रयत्न-पुरुषार्थ (Exertion) धन है !
स्वतन्त्रता (Freedom) धन है !
इच्छाशक्ति (Desire) धन है !
शरीर का पोषण करने वाले पदार्थ (Wealth) धन है !
ज्ञान (Knowledge) धन है !
शक्ति (Power) धन है !
श्रम (Labow) धन है !
इन धनों को हम यज्ञ से, यज्ञ के लिए प्राप्त करें।

शब्दों पर ध्यान दीजिए। धन यज्ञ मार्ग से प्राप्त करें, और यज्ञ के लिए, सभी के कल्याण के लिए प्राप्त करें।

उपरोक्त विवेचन स्पष्ट करता है कि वैदिक अर्थनीति का आधार—

१—शरीर और आत्मा का कल्याण है।
२—वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार सभी वर्णों का धन पृथक-पृथक है।
३—धन का संग्रह और उद्देश्य सभी का कल्याण है।
४—धर्म और मोक्ष, अर्थ और काम के नियंत्रक हैं।
५—धन मनुष्य की आवश्यकता है। वह लक्ष्य नहीं है।
६—"यज्ञ" वैदिक अर्थनीति का निर्देशक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक अर्थनीति में सबसे बड़ा धनी वह है जो किसी पर भी निर्भर नहीं है। जो किसी की भी सहायता की अपेक्षा नहीं रखता जिसका प्रत्येक पदार्थ दूसरों के लिए है। आज के अर्थशास्त्र में और वैदिक अर्थ-शास्त्र में जो मौलिक अन्तर हैं उनकी पृष्ठभूमि समझे बिना वैदिक अर्थ-शास्त्र पर विचार चिन्तन संभव नहीं। क्योंकि प्रत्येक दर्शन के कुछ प्रेरक तत्व होते हैं। आधुनिक चिन्तन में 'शरीर' ही लक्ष्य है, और वैदिक दर्शन में "शरीर" "और" 'आत्मा" को एक साथ रख कर 'आत्मा' के विकास को ही लक्ष्य माना गया है।

वैदिक चिन्तन के अनुसार धन यज्ञ के लिए है और सब प्रजापालक या प्रजापति का है। जब यह कहा जाता है कि यज्ञ के लिए ही धन है तो उसका तात्पर्य यह भी है कि उसका उपयोग प्रजा के पालन के लिए हो। क्योंकि यज्ञ का अर्थ है ऐसा कर्म जिससे श्रेष्ठों का संस्कार होता हैं, संगति करण अर्थात् प्रजा का संगठन होता है और असहायों को आवश्यकतानुसार सहायता प्राप्त होती हैं। संक्षेप में सत्कार 'संगति' दानात्मक कर्म ही यज्ञ है और सब धन यज्ञ के लिए है, इसका तात्पर्य है कि धन का प्रजा के हित व कल्याण के लिए ही उपयोग हो।

वैदिक दर्शन् का निष्कर्ष है कि जीवन सत्य है। किन्तु 'आत्म' तत्व के बिना जीवन 'मृत्यु' में परिवर्तित हो जाता है। जो 'आत्मा' को नहीं जानता वह शास्त्र अधूरा और एकांगी है। एकांकी चिन्तन किसी समस्या के हल तक नहीं पहुँचा सकता। अतः आधुनिक पर्यावरण में जीवन की समस्या का निदान आवश्यकतानुसार "शरीर" और "आत्मा" को साथ साथ रखकर करना परमावश्यक है।

'वेद' अर्थ को शरीर के विकास का साधन मानता है। आधुनिक चिंतक अर्थ को शरीर का लक्ष्य स्वीकार कर शरीर को अर्थ के लिये लगाने की भावना प्रेरित करता है। "धन" चाहिए इसलिए कि 'शरीर" का रथ "आत्मा" को मंजिल तक पहुँचा सके। इसी दृष्टि से वैदिक अर्थशास्त्र सभी भौतिक समस्याओं पर चिंतन करता है।

हमारा विश्वास है कि मनुष्य 'अथ' का प्रयोग जीवन के सुख-आनंद और शांति के लिए करे!

"अर्थ" को अपना साधन समझे,
"अर्थ" का दास न बनें।
—अर्थ के 'स्वामी' हम बनें यह वैदिक अर्थनीति है।
—'अर्थ' हमारा स्वामी बने यह आधुनिक चिन्तन है।

इस मौलिक भेद को समझ कर ही हम समस्या का समाधान खोज सकेंग।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन की आवश्यकता

वैदिक धर्म, में 'अर्थ' और 'काम' को जीवन का आवश्यक अंग स्वीकार किया गया है। क्योंकि दोनों शरीर रूपी गाड़ी को चलाने वाले पहिये हैं। जिन के सहारे शरीर लक्ष्य की ओर बढ़ता है। 'अर्थ' जीवन निर्वाह के लिए परमावश्यक है और इस के अभाव में कोई भी व्यक्ति संसार में रहकर अपने को सुखी अनुभव नहीं कर सकता। अर्थ की महत्ता धर्म के तुरन्त पश्चात पुरूषार्थ चतुष्टय में अर्थ की गणना से ही स्पष्ट हो जाती है।

धन संग्रह का मार्ग

धन संग्रह हेतु मनुष्य मात्र के लिए पाँच स्वर्णिम नियम वैदिक अर्थ शास्त्र के आधार हैं—

१—हमारे अर्थ संग्रह से किसी भी प्राणी को कष्ट न हो। अर्थात् पर उत्पोड़न द्वारा धनोपार्जन की अनुमति नहीं है।

२—अर्थ संग्रह से हमारे शरीर को भी हानि न पहुँचे।

३—अपने पुरुषार्थ से ही अर्थ संग्रह किया जाए। किसी अन्य की सहायता से नहीं।

४—अर्थ संग्रह के साधन भी पवित्र हों। और इस कार्य में कोई गर्हित कर्म न किया गया हो।

५—अर्थोपार्जन के कारण-हमारे स्वाध्याय में, आत्मचिन्तन में कोई बाधा न पड़े।

अर्थ संग्रह का जो मार्ग इन पाँच सूत्रों के आधार पर बनाया जाएगा, उस से 'व्यक्ति' समाज या राष्ट्र को कोई हानि किसी भी स्थिति में न होगी। आर्य धर्म में प्रत्येक व्यक्ति अर्थ संग्रह करते हुए किसी भी क्षण यह विस्मृत नहीं करता कि कहीं उस के किसी कर्म से मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग में बाधा न आ जाए। वह 'धर्म' पथ से एक पग भी विचलित न हो जाए।

अर्थ संग्रह के चार वर्ग

प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह कहीं का हो, कुछ भी विचार रखता हो, उसका अर्थ संग्रह चार कार्यों के लिए ही होता है!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१—**भोजन**—मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है। व्यक्ति के पास जो भी साधन उपलब्ध हों, उन से वह सर्व प्रथम भोजन का प्रबन्ध करता है। भूखे रहकर कोई न चिन्तन कर सकता है, न कोई सद्कार्य। भोजन सब से अधिक आवश्यक है और धन द्वारा सब से प्रथम प्रबंध–भोजन का ही किया जाता है।

भोजन का अर्थ है वह पदार्थ, जिन से शरीर स्वस्थ और पुष्ट हो। मनुष्य को खुलकर भूख लगे और वह अपने श्रम से उत्तम अर्थात् स्वास्थ्य कर भोजन जुटा सके, यह अर्थोपार्जन का प्रथम लक्ष्य है।

२—**वस्त्र**—भोजन के पश्चात् दूसरी आवश्यक्ता है सभ्य व्यक्ति को वस्त्र की! वस्त्र का उद्देश्य है शरीर को सर्दी, गरमी से बचाना और लज्जा का आवरण। अर्थ से जो वस्त्र प्राप्त हों वह ऐसे हों जिन से शरीर को लाभ हो।

किन्तु जब शरीर के लाभ के स्थान पर शरीर को सजाना वस्त्रों का उद्देश्य बन जाता है तो 'वेद' का मार्ग विस्मृत हो जाता है। असमानता और विग्रह का कारण शरीर को सजाने की यह वासना ही है।

३—**अर्थ** प्राप्ति का तीसरा उद्देश्य है **घर**। ऐसा घर जहाँ सर्दी—गर्मी—बरसात में व्यक्ति शरीर की रक्षा कर सके। सुन्दर, सादा कलात्मक फूलों की बेलों से घिरा घर 'अर्थ' संग्रह का लक्ष्य है।

किन्तु ऊँची-ऊँची भव्य अट्टालिकाएँ व्यक्ति के विकास की साधक नहीं, उस की वासना और बहिर्मुखी प्रवृत्ति की प्रदर्शकबन कर महल और कुटिया के भेद का कारण बन गयी हैं। आवश्यकता के स्थान पर वैभव प्रदर्शन के लिए बनी इन अट्टालिकाओं के परिणामस्वरूप भी आज के समाज में एक दूसरे के प्रति वैमनस्य भाव जागा है।

४—अर्थ संग्रह का चतुर्थ लक्ष्य है, **गृहस्थी अर्थात परिवार**! सुन्दर सा छोटा सा, परिवार संसार की लघुतम ईकाई! छोटे-छोटे परिवारों के सुखद निर्माण का आधार है अर्थ, परिवार के विकास का आधार है अर्थ, यह परिवार वेद की भाषा में उस संसार का आधार बन निर्माण करता है जो इस वाक्य में वर्णित है।

यत्र विश्वं भवत्येक नीड़

संसार एक घोंसला बन जाए! व्यक्ति ऐसे परिवार बनाएं जो परस्पर सुख बांट लें, दुःख बांट लें ताकि फिर कहीं दुःख न रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोजन—वस्त्र—घर और गृहस्थी इन को आनन्द पूर्वक आवश्यकता नुसार प्राप्त करने के लिए व्यक्ति 'अर्थ' प्राप्त करता है। अर्थ प्राप्ति के वैदिक साधन हम इसी अध्याय में पहले बता चुके हैं। इस प्रकार यह स्वतः सिद्ध है कि वैदिक अर्थ शास्त्र का उद्देश्य है—

१--धन का धर्म से संग्रह
२--संग्रहीत धन का धर्म से प्रयोग
३--प्रयोग से सभी का कल्याण
४--कल्याण से आत्म सन्तोष की अनुभूति
५--और आत्म सन्तोष से आनन्द प्राप्ति।

वैदिक अर्थ शास्त्र—

आवश्यकताएँ सीमित रखते हुए शरीर के विकास और आनन्द के साधन जुटाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

—सभी के सुख में अपना सुख समझने की भावना से 'अर्थ' का प्रयोग करता है।

—संसार की आर्थिक असमानता को प्यार; ममत्व और अपनत्व की भावना से समाप्त करते हुए 'अर्थ' को जीवन की आवश्यकता समझता है। जीवन को 'अर्थ' के लिए भेंट नहीं चढ़ाता। इस व्यवस्था में इसी सत्य को अंगीकार किया जाता है कि मनुष्य का पेट तो होता है किन्तु मानव जीवन का उद्देश्य पेट भरना मात्र ही नहीं है।

मनुष्य और पशु में अन्तर केवल यही है कि वह "अर्थ" "काम" के साथ "धर्म" और "मोक्ष" को भी अपनाता है। और अर्थ काम में तो पशु मनुष्य से आगे हैं किन्तु धर्म मोक्ष का चिन्तन उनके पास नहीं है। मनुष्य मननशील सामाजिक प्राणी है। वह समाज के अर्थात् सभी के कल्याण की दृष्टि से चिन्तन करता है। धर्म की राह पर चलते हुए व्यक्ति धन संग्रह और अर्थोपार्जन में पूर्ण स्वतंत्र है। किन्तु जब वह धर्म की राह छोड़कर अधर्म द्वारा धन संग्रह करना चाहता है तब राज्य दंड द्वारा व्यक्ति को रोकता है। क्योंकि वेद की यह मान्यता है कि व्यक्ति अस्थायी है और समाज स्थायी! –अतः व्यक्तिगत रूप से धन संचय करने के उपक्रम में समाज के हित की अवहेलना अक्षम्य है। राज्य की स्थापना ही धर्म की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्षा और अधर्म की समाप्ति के लिए होती है।

जीवन के सर्वतोमुखी विकास के लिए "अर्थ" की आवश्यकता है। व्यक्ति उस अर्थ से अपना, अपने परिवार का, 'ग्राम' नगर और विश्व का विकास करे,जो व्यक्ति अपने बुद्धि चातुर्य से अधिकाधिक धन उपार्जितकर उसे समाज व बड़े--से बड़े भाग के लिए प्रयुक्त करे वह उतना ही महान् और यशस्वी हो, क्योंकि वैदिक व्यवस्था में यह भी स्पष्ट निर्देश है कि राजा का भी अन्तिम और महान् दायित्व है प्रजापालन। व्यक्ति धन संग्रह और उपार्जन में धर्म का मार्ग अपनाए। व्यय और वितरण में धर्म से प्रेरणा प्राप्त करे। आवश्यकताएँ अपनी—परिवार—ग्राम—और राष्ट्र विश्व की पूर्ण करने में अधिकाधिक सहयोग देना वैदिक अर्थ शास्त्र का निर्देशक सिद्धान्त है।

"धन" नाम है उस संग्रह का जो व्यक्ति आवश्यकताएं पूर्ण करने के पश्चात् संग्रह करता है । संग्रह का अधीकार केवल "वैश्य" का है अन्य वर्णों का नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीयकरण
या
विकेन्द्रीयकरण

आधुनिक अर्थ व्यवस्था के दो प्रमुख वादों की ही आज चतुर्दिक चर्चा सुनाई पड़ती है। इनमें से एक है समाजवाद या साम्यवाद तथा दूसरा पूंजीवाद——

जहां तक पूंजीवादी व्यवस्था का प्रश्न है उसकी परिभाषा इस प्रकार की जाती है।

पूंजीवाद ऐसी अर्थ व्यवस्था को माना जाता है जिसमें भूमि, श्रम, पूंजी, व्यवस्था, साहस आदि उत्पत्ति के समस्त साधनों पर निजो नियंत्रण व अधिकार होता है और लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से ही उत्पादन किया जाता है। समस्त भूमि, खानें, मिल, कारखाने, यातायात के साधन तथा अन्य सब प्रकार के साधन व स्रोत निजी नियन्त्रण व अधिकार में होते हैं और इनके स्वामी इन सब का प्रयोग पूर्ण स्वतन्त्रता से लाभ प्राप्ति के लिए इच्छानुसार करते हैं। वास्तव में लाभ प्राप्ति-का उद्देश्य पूंजीवाद में एक बहुत महत्वपूर्ण और आधारभूत उद्देश्य माना जाता है और इससे समस्त आर्थिक क्रियाओं का संचालन होता है।

इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि इस व्यवस्था में जहां आर्थिक क्रियाओं में पूर्ण स्वतन्त्रता की व्यवस्था है वहां धन सम्पदा के केन्द्रीयकरण की भी।

अर्थ व्यवस्था का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त है समाजवाद। इसकी परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में की जा सकती है।

"समाजवाद आर्थिक संगठन का वह रूप है, जिसमें उत्पादन के समस्त साधनों पर राज्य का स्वामित्व होता है और उत्पत्ति के साधनों का उपयोग करने की भी उसे ही पूर्ण छूट है।

इसकी व्याख्या इस प्रकार भी की जा सकती है कि 'धनोत्पत्ति के साधनों पर किसी एक व्यक्ति का स्वामित्व नहीं होता, अपितु देश के उत्पत्ति के समस्त साधनों का राष्ट्रीयकरण हो जाता है और उनका

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामित्व व नियन्त्रण समाज अथवा सरकार के अधीन होता है। भूमि खानें, वन, मिल, कारखाने, यातायात के साधन, बैंक, व्यापार आदि सभी का पूर्णतः राष्ट्रीयकरण हो जाता है।

इस प्रकार पूंजीवाद में जहाँ व्यक्ति के हाथ में सम्पदा का निरंकुश केन्द्रीयकरण होता है वहाँ राष्ट्रीयकरण ही समाजवाद की आधार शिला है। वस्तुतः ये दोनों ही आर्थिक व्यवस्थाएँ एकांगी और अपूर्ण हैं। आज स्वदेश में पूंजीवाद से धनी तो पनप रहा है किन्तु आधुनिक अर्थ व्यवस्था का एक मोहक नारा बन गया है "राष्ट्रीयकरण"। राष्ट्रीयकरण का अर्थ है कि अर्थ उत्पादन के साधनों की प्रबंध व्यवस्था व्यक्तियों के हाथ में न रह कर शासन के हाथ में रहे।

शासन किसी अलौकिक वस्तु का नाम नहीं। शासन भी व्यक्तियों द्वारा ही प्रबंध कराता है। किन्तु अन्तर इतना आ जाता है कि वैदिक व्यवस्था में लाभ हानि की चिन्ता व्यक्ति करता है किन्तु राष्ट्रीयकरण की स्थति में हानि लाभ की चिन्ता करने वाला कोई भी नहीं रहता।

राष्ट्रीयकरण के समर्थक यह सर्वथा विस्मृत कर देते हैं कि व्यक्ति से राष्ट्र बनता है। राष्ट्र व्यक्ति के बिना शून्य की स्थिति रखता है,समष्टि का निर्माता भी व्यक्ति है और व्यक्ति ही वह सब से छोटी ईकाई है जिस से समाज और राष्ट्र बनता है।

वैदिक अर्थ व्यवस्था व्यक्ति को केन्द्र बना कर चलती है। व्यक्ति ईमानदार हो, कर्तव्य पारायण हो, बुद्धिमान हो और परिश्रमी हो। ऐसा व्यक्ति जिस कार्य को भी करेगा, उस में सफल होगा। अर्थोपार्जन या वस्तु निर्माण की प्रक्रिया व्यक्ति करता है। व्यक्ति की योग्यता वस्तु को अच्छा और अयोग्यता खराब बनाती है।

वैदिक धर्म में धन उत्पादन और संग्रह का अधिकारी व्यक्ति है। व्यक्ति जब तक धर्म पूर्वक धन कमाता और काम करता है तब तक राज्य को उस में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं। राज्य केवल अपना भाग ले सकता है, धर्म का अंकुश व्यक्ति पर रहता है और उसी से वह धन कमाता है, खर्च करता है। संग्रह कर उस का उचित प्रयोग करता है।

वेद का एक मंत्र भाग इस संबंध में हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है।
शत हस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर।
अथर्व-३-२४-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु मनुष्यों को आदेश दे रहा है कि तुम १०० हाथों से धन कमाओ और हजार हाथों से बखेर दो। इस मंत्र भाग को हम वैदिक अर्थ व्यवस्था का घोषणा पत्र कह सकते हैं।

व्यक्ति अपने पूरे बल से,
अपने संपूर्ण सामर्थ्य से,
बुद्धि और चातुर्य से,
धन कमाए और संग्रह करे--

किन्तु साथ ही 'वेद' यह भी आदेश देता है कि उस कमाए हुए धन को हजारों हाथों से अर्थात् धन कमाने से भी दस गुना अधिक शक्ति से बखेर दे, फैला दे, वितरित कर दे। **धन का उत्पादन, व्यक्ति करे, उत्पादन पर उस का अधिकार रहे, उत्पादन उस का हो--पर वह उस अपने धन को बखेर दे या बांट दे।**

अर्थ व्यवस्था का यह स्वर्णिम सिद्धान्त युग के वर्ग संघर्ष की समाप्ति का एक मात्र हल है। यह भी स्पष्ट है कि निरकुश पूंजीवाद और समाजवाद दोनों ही आर्थिक पद्धतियाँ वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देती हैं। वैदिक अर्थ व्यवस्था इस वर्ग संघर्ष की समाप्ति का क्या समाधान प्रस्तुत करती है। यही स्पष्ट करने का प्रयास हम कर रहे हैं।

एक पिता अपनी पूरी शक्ति से धन कमाता है अपना खून पसीना बहाकर कार्यालय आदि में काम करता है। एक मास की समाप्ति पर उसे धन मिलता है। उस धन से वह अपने परिवार के लिए सामान क्रय करता है। घर पर सभी के लिए सामान लेकर प्रसन्न प्रसन्न आता है, पत्नी को साड़ी देता है । पिता को पगड़ी देता है। मां को कोई और भेंट देता है। बच्चों को खिलौने देता है। सभी आनन्द में मग्न हो जाते हैं। और धन के स्वामी का मन हर्ष से परिपूर्ण हो जाता है।

—धन किसने कमाया ?

गृहपति ने।

—धन किस का था ?

गृहपति का।

—धन को व्यय करने का अधिकार किसे था ?

गृहपति को !

किन्तु गृहपति ने उस अपने धन को अपने ऊपर व्यय न कर बांट दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—किस में ?

अपनों में।

—उसे क्या मिला ?

आनन्द- प्रसन्नता और सुख।

क्यों ?

क्योंकि गृहपति जिनको प्यार करता था उनके लिए उसने स्वेच्छया अपने धन का व्यय कर दिया।

किन्तु ऐसा न हो कर यदि ऐसा होता कि गृहपति को जो धन मिला, उसमें नियम होता है कि—

१/८ पत्नी को, १/८ लड़के को, १/८ मां को, [illegible] पिता को, १/८ लड़की को और १/८ बहन को देना ही पड़ेगा। तब क्या स्थिति होती ? तब गृहपति भी धन छिपाता, परिवार में भी संघर्ष रहता और सब उसी धन के लिए पागल रहते !

मानसिक दृष्टि से धन के प्रयोग के प्रकार में अंतर होने से धन विष बन जाता है। धन वस्तुतः एक ऐसी शक्ति है जिस से सभी परिचालित होते हैं। प्राचीन वैदिक संस्कृति में धर्म नाम था उन नियमों का, उस विधान का जो प्यार, स्नेह और एकता के पवित्र ढंग से ऋषि मनीषियों ने बनाए थे।

संसार की सारी व्यवस्था को प्रेम के मंत्र से चलाने के लिए बनाए गए नियमों का नाम धर्म है।

यही प्रेम परिवार में धन के बाँटने पर व्यक्ति के अन्तर में हर्ष की गंगा बहाता है और प्रेम की यही परिधि बड़ी बन कर समाज, राष्ट्र और विश्व की विशाल धरती तक फैल जाती है और व्यक्ति अधिकाधिक धन कमा कर अधिकाधिक व्यक्तियों तक उसे बखेर कर अधिकाधिक आनन्द अनुभव करता जाता है।

वैदिक अर्थ नीति का आधार है विकेन्द्रीयकरण—धन जितना अधिक बिखरेगा, उतना संसार आगे बढ़ेगा। और धन संग्रह की प्रवृत्ति जहां भी जन्म लेगी वहां युद्ध, ईर्ष्या, द्वेष, वर्ग संघर्ष उत्पन्न होंगे।

व्यक्ति के हाथ में रहा हुआ धन जब धर्म के नियमों से प्रेरित हो फैलता है तब धरती स्वर्ग बन जाती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और जब राज्य व्यक्ति के स्वामित्व को समाप्त कर सब कुछ अपना बनाना चाहता है तो व्यक्ति का विकास, उत्कर्ष, स्वतन्त्रता, प्रसन्नता सभी कुछ समाप्त हो जाती है। तब व्यक्ति मनुष्य न रह कर **मशीन** बन जाता है केवल मशीन ।

वेद कहता है— मा गृधः

धन का लालच मत कर। जहां धन पर मन ललचाया, समझो सब कुछ बिगड़ा । यह लालच ही जहर है। यही संग्रह केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति को जन्म देता है! अतः धन कमाओ और बखेरो, आनन्द मिलेगा।

धन का संग्रह कर ललचाओगे
दुःख बढ़ेंगे, कष्ट मिलेगा ।

इस तथ्य को हम जितना शीघ्र समझ लें उतना ही कल्याण है !

वैदिक अर्थ शास्त्र के अनुसार धन को कहीं पर भी एकत्रित नहीं रहना चाहिए, न व्यक्ति की तिजोरी में, न राजा के भन्डार में। सब उसे बाँटते रहें। सभी के प्रयोग के लिए धन गंगा की धारा की भांति बहता रहे ! जहां जिसे उस की जितनी आवश्यकता हो वह उसका प्रयोग कर ले। पर साथ ही एक प्रेरणा धर्म की ओर—

अपनी आवश्यकताएं कम करो ! जो आपके शरीर के विकास मस्तिष्क-मन के उत्कर्ष के लिए आवश्यक है वही आपकी आवश्यकता होनी चाहिए।

वेद कहता है—

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा। यजु—४०-१

धन को त्याग से भोगो ! संग्रह की वृत्ति मत बनाओ।

धन का भोग शरीर के लिए करो !
शरीर का भोग धन के लिए न करो !!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक अर्थ शास्त्र का यह स्वर्णिम सिद्धान्त अर्थ शास्त्र का वह दिशा निर्देश है जिस पर चिन्तन कर सभी पक्ष आर्थिक जटिलताओं से मुक्त हो सकते हैं।

तनिक कल्पना कीजिए कि यदि सभी के पास जो संग्रह है वह वितरण की स्थिति में आ जाए तो अभाव कहाँ रहेगा ? वस्तुतः धन का उद्देश्य है अभाव की समाप्ति ! जहाँ जिस वस्तु की आवश्यकता हो वहाँ वह वस्तु पहुँचे ! धर्म की भावनासे सभी अभाव की पूर्ति करें।

राज्य और अर्थ

धर्म की रक्षा के लिए राज्य की स्थापना होती है। धर्म की रक्षा ही एक मात्र राज्य का उद्देश्य है। यहां हम यह भी स्मरण रखें कि धर्म नाम हैं उस विधान का, जिस पर चल कर मनुष्य मनुष्य बनता है। [**व्यक्ति धर्म मार्ग पर चले, यह व्यक्ति का कर्त्तव्य है। व्यक्ति धर्म से भटके तो व्यक्ति को धर्म मार्ग पर चलाना राज्य का अधिकार है।**

धन व्यक्ति का है।

व्यक्ति धन का स्वामी है।

व्यक्ति धन का भोक्ता है !

व्यक्ति का कार्य धन से अभाव की समाप्ति है।

व्यक्ति का कार्य धन का धर्म पूर्वक वितरण है।

व्यक्ति धन को बांटता रहे।

व्यक्ति धन को कमाता रहे। पर संग्रह कभी न करे।

व्यक्ति वसुधैव कुटम्बकं की उदात्त भावना से—संसार को परिवार समझे और जैसे अपने धन का वितरण परिवार में कर आनन्द अनुभव करता है वैसे ही उस धन का वितरण राष्ट्र-विश्व में कर आनन्द अनुभव करे।

सैकड़ों हाथों से धन का उपार्जन कर सहस्रों हाथों से उसे बांटनें की प्रक्रिया का उदात्त रूप ही प्राचीन काल में होने वाले सर्वमेध यज्ञ में व्यक्त होता था। उस यज्ञ में अपना समग्र-धन जन हितार्थ समर्पित कर देनें का विधान हैं ! उस यज्ञ को संपन्न करने वाला सम्राट भी दूसरे दिन मिट्टी के पात्र बर्तने लग जाता था। इस यज्ञ का एक मात्र उद्देश्य था धन का वितरण। अतः यह स्पष्ट है कि आज भी वैदिक अर्थ व्यवस्था ही व्यष्टि को समष्टि तक के लिए सुख और शांति का सुपथ प्रशस्त कर सकती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवाद या यज्ञ मार्ग

आज अपने देश में एक ऐसी स्थिति विद्यमान है कि जिससे हर समस्या के निवारण की समाजवाद को अचूक औषधि समझ कर उसकी स्थापना ही देश का लक्ष्य घोषित किया जा रहा है। समाजवाद लाने के सुनहले स्वप्न ऐसे दिखाए जा रहे हैं मानो समाजवाद के आते ही सारी परेशानियाँ समाप्त हो जाएंगी, किन्तु पिछले १०-१५ वर्ष का अनुभव बता रहा है कि **"मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।"** १९५७ से १९७४ तक के १७ वर्षों में समाजवाद ने देश को यदि कुछ दिया है, तो—

गरीबी,

बेकारी,

भ्रष्टाचार,

रिश्वत और अराजकता।

१९५७ से पहले जब शासन का यह घोषित उद्देश्य नहीं था तब तो देश में कुछ कथित क्रांतिकारी पग उठाए गये थे। जमींदारी प्रथा की समाप्ति और पंचायत पद्धति की स्थापना १९५२ से पूर्व की देन हैं। इस नारे ने देश की जो दुर्दशा कर दी है उसका परिचय भारत के प्रत्येक नागरिक को है। हम इस स्थिति का विश्लेषण न करते हुए समाजवाद की आधारभूत हानियों का विचार प्रस्तुत करना ही उचित समझते हैं।

१—समाजवाद का आधार वर्ग संघर्ष है। समाजवादी मनुष्य मात्र को केवल दो वर्गों में बाँटता है। कमेरा और लुटेरा, शोषित और शोषक।

वर्ग संघर्ष का यह सिद्धान्त वस्तुतः असंतुलित मस्तिष्क की उपज है। समाज को इन दो वर्गों में बाँटना व्यावहारिक रूप से उचित नहीं है, न ही इससे संसार की समस्याएँ हल हो सकती हैं।

एक गरीब व्यक्ति अपने श्रम और अध्यवसाय से उन्नति करता हुआ संम्पन्न व्यक्ति बन सकता है। ऐसे अनेकों उदाहरण हम प्रायः देखते हैं। यदि स्थायी रूप से वर्ग संघर्ष की स्थिति स्वीकार कर ली जाए तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यक्ति की उन्नति और विकास के अवसर समाप्त हो जाते हैं। इस से मनुष्य की उन्नति करने की स्वाभाविक इच्छा पर अंकुश लगता है जिसे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता।

वैदिक अर्थ व्यवस्था में व्यक्ति को जन्म से समान माना जाता है। उसमें किसी भी प्रकार का कोई भेद या वर्ग नहीं माना जाता। हां कर्मों के अनुसार व्यक्ति को चार वर्णों में बांटा जाता है, और प्रत्येक व्यक्ति का वर्ण समय-समय पर बदलता रहता है। ब्राह्मण पतित होकर शूद्र भी बन सकता है। और शूद्र उन्नति कर ब्राह्मण बन सकता है। कर्मों के अनु-सार वर्ण वरण करने की भावना व्यक्ति को उन्नति के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है।

२—मनुष्य की एकता और समानता के उदात्त सिद्धान्त को स्वीकार करती है।

३—समाज को सुखी-संपन्न बनाने के लिए परस्पर सहयोग और ताल-मेल की भावना स प्रयत्न करने की प्रेरणा करती हैं।

इसके विपरीत समाजवाद—

१—वर्ग संघर्ष के आधार पर समाज को दो भागों में बाँटता है।

२—दोनों वर्गों में प्रेम के स्थान पर घृणा फैलाता है।

२—व्यक्ति को विकास का अवसर प्रदान नहीं करता है।

४—समाज में हिंसा द्वेष का स्थायी स्थान बनाता है।

प्रत्येक विचारशील व्यक्ति सोचे कि जो समाजवाद मजदूर और किसानों के हाथ में ही राज्य का प्रबन्ध देना अपना लक्ष्य मानता है उस समाजवाद में,

१—दर्शन का उदात्त स्वरूप कैसे निखरेगा ?

२—बुद्धि और मन के विकास का पथ प्रदर्शन कौन करेगा ?

वर्ग संघर्ष से समाज पर और उत्पादन के समस्त साधनों पर मजदूर-किसानों का एकाधिकार—समाजवाद का लक्ष्य है। पर ऐसी स्थिति में व्यक्ति की स्वतन्त्रता कहाँ स्थिर रहेगी ? मजदूर और किसान श्रमजीवी होते हैं। वे अपने एकाधिकार के लिए जिस ढंग से अपने से विचार भेद रखने वालों का रक्त भी बहाते हैं और जिस प्रकार विचार स्वातन्त्र्य का गला घोंटते हैं इसका उदाहरण रूस और उस जैसे देशों की पिछले २५-३० वर्षों की घटनाओं से प्रत्यक्ष है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म राज्य की व्यवस्था में व्यक्ति निजी रूप से स्वतन्त्र और सामाजिक सर्वहितकारी कार्यों में परतन्त्र है। समाजवादी व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतन्त्रता सर्वथा समाप्त हो जाती है और यही इस का सब से बड़ा दोष है।

समाजवादी व्यवस्था के स्थान पर वैदिक व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें सभी व्यक्ति जहाँ समाजिक सर्वहितकारी नियमों के पालने में स्वतन्त्र रहता है वहाँ प्रत्येक हितकारी नियम का पालन करने में सभी परतन्त्र रहते हैं।

समाजवादी अर्थ व्यवस्था में समग्रसत्ता अन्ततः कुछ व्यक्तियों के एक समूह के ही हाथों में केन्द्रित हो जाती है। राज्य का कार्य है प्रजा का पालन, किन्तु समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सत्तारूढ़ होने वाले व्यक्तियों में भी निहित स्वार्थ जागता है और फिर वे सत्ता का निरंकुश उपयोग करते हैं। अतएव ऐसी सत्ता में प्रजा पालन या रंजन नहीं हो पाता अपितु जिस शोषण को मिटाने के नाम पर समाजवादी सत्तारूढ़ होते हैं वही शोषण उनका सत्तारूढ़ रहने का हथियार बन जाता है। इसके विपरीत वैदिक व्यवस्था का आधार यज्ञ है। और यज्ञ का अर्थ है—

इदन्न मम

सब कुछ मेरे पास है, पर यह मेरा नहीं है।

इतिहास का विश्लेषण बताता है कि समाजवाद पश्चिम के उस वर्ग की देन है जो ज्ञान और विज्ञान की दृष्टि से सर्वथा पिछड़ा हुआ था। जिस ने धर्म को केवल ईसाइयत के रूप में ही देखा था और ईसाइयत के खोखलेपन को देख कर जिसने धर्म शब्द के ही विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। कार्ल-मार्क्स ने तो यहां तक कह दिया था कि धर्म मानव मस्तिष्क के लिए अफीम के तुल्य है। किन्तु वेद का उदात्त धर्म मनुष्य मात्र के के जिन स्वर्ण सिद्धान्तों को उपस्थित करता है उनके रहते हुए भी जो व्यक्ति समाजवाद को अमृत समझते हैं तो यह उनके एकाँगी दृष्टिकोण का ही परिणाम है। अतएव गंभीरता व निष्पक्ष भाव से यज्ञ के शब्द और भावों पर चिन्तन किया जाना अपेक्षित है। यज्ञ पर आधारित अर्थ व्यवस्था को समझने का यत्न किया जाना चाहिये। हमारा विश्वास है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि ऐसा होने पर समाजवाद का समर्थन कोई भूल कर भी नहीं करेगा। क्योंकि यज्ञ की अर्थ व्यवस्था प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण है। जब कि समाजवाद का दर्शन व चिन्तन और मनन अपूर्ण तथा अधिकचरा है। यहाँ हम संक्षेप से 'यज्ञ' व्यवस्था को सूत्र रूप में उपस्थित करते हैं।

वेद आदेश देता है

प्रसुव यज्ञं

यज्ञ की प्रेरणा करो।

प्रश्न उठता है--यज्ञ क्या है ?

अत्यन्त उच्च कर्म का नाम यज्ञ है। यज्ञ को यदि तप (Science of Holy action) श्रेष्ठ मार्ग का विज्ञान कहें,तो इसका सही भाव हम हृदयंगम कर सकेंगे। इस विज्ञान के दस सूत्र हैं।

१—उत्तम कर्म में किसी भी प्रकार की बाधा को न मानना।

२—अच्छा कार्य करने के लिए कष्ट सहने को तैयार रहना।

३—आत्म नियंत्रण रखना।

४—चोरी से किसी भी वस्तु को प्राप्त करने का यत्न न करना।

५—बिना श्रम के धन प्राप्त न करना।

६—बुद्धि-मन के प्रयोग से सब के लाभ के लिए अधिकाधिक उत्पादन करना !

७—धन के लिए सत्य का त्याग न करना।

८—धन संग्रह करते हुए भी किसी को किसी भी स्थिति में हानि न पहुंचाना।

९—धन की हानि से क्रोध या निराशा मन में न लाना।

१० ऐसे धन का उत्पादन करना जो सभी के लिए कल्याण कारी हो।

यज्ञ वैदिक अर्थ शास्त्र का दूसरा नाम है। यज्ञ व्यवस्था के अन्तर्गत इन १० नियमों के आधार पर धन संचय व्यक्ति करे।

ऋ० १०-२९-५ का मंत्र आता है...

गिरश्च ये ते तुविजातपूर्वीर्नर इन्द्र प्रतिशिक्षिन्त्यन्नैः।

हे (तुविजात नर इन्द्र) बलवान अग्रणी प्रभू ! (ये) जो लोक (अन्नैः) अन्नों के द्वारा लोकों को सहाय्य करते हैं, तथा जो (ते पूर्वी गिरः) तेरा पूर्ण अथवा प्राचीन उपदेश हरेक को सिखाते हैं–उन्हें प्रेरय अर्थं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन के लिए प्रेरणा करो

वेद कहता है—

प्रसुव यज्ञपतिं भगाय

जो व्यक्ति यज्ञ मार्ग पर चल रहा है उसे ऐश्वर्य प्राप्ति की निरंतर प्रेरणा करो ! यज्ञ मार्ग पर चलते हुए व्यक्ति ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए यत्न-शील रहता है।

वस्तुतः यज्ञ एक तपस्या है, वह एक मार्ग है जिस पर चलकर व्यक्ति अभाव को समाप्त करता है।

यज्ञ शत्रु हैं अभाव का
अभाव शत्रु है मनुष्य का
इस लिए यज्ञ मित्र है मनुष्य का

समाजवाद का उद्देश्य अमीरों को मिटाना है।

यज्ञ का उद्देश्य गरीबी और अभावों को मिटाना है।

प्रत्येक बुद्धिजीवी स्वयं विचारे कि क्या ठीक है और क्या नहीं !

घन का विभाग वेद इस प्रकार बताता है।

विभक्तारम हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः।

सवितारं नृचक्षसम ।। यजु—३०-४

मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए धन के उत्कृष्ट साधनों का जिसने विभाग किया, जो सभी का सच्चा मार्ग दर्शक है—उसकी हम प्रशंसा करते हैं।

'वसु' शब्द इस मंत्र में महत्व का है। जिस साधन से मनुष्यों का जगत् में भली-भाँति रहना हो सके, उस वस्तु का नाम 'वसु' है।

'वसु' के अर्थ करते हुए वेदों के प्रसिद्ध प्रामाणिक विद्वान श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी ने लिखा है कि—"वसु संज्ञक राष्ट्रीय धन आठ प्रकार का बनकर राष्ट्र में संचार करता है।

१—अध्ययन

२—अध्यापन

३—स्वयं शक्ति संपन्न बनता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४—दूसरों की रक्षा करना
५—स्वयं धन प्राप्त करना
६—दान द्वारा अच्छे कार्यों में उसका अर्पण करना।
७—स्वयं कुशल कारीगर बनकर
८—राष्ट्र को समृद्ध करना
धन का यह विभाग, वर्ण व्यवस्था के आधार पर

ब्राह्मण का धन "ज्ञान"—

क्षत्रिय का धन "शौर्य"
वैश्य का धन भौतिकउत्पादन
और शूद्र का धन "श्रम" सिद्ध करना है।

समाजवाद केवल शूद्रों की समस्या पर विचार करता है। अतः वह शास्त्र है। चारों वर्णों का नहीं, अतः वह अपूर्ण है।

प्रत्येक देश में मार्ग दर्शक, नेता, विधान निर्माता भी रहेंगे और हैं।

—सैनिक, वीर, योद्धा, रक्षक भी रहेंगे और हैं।

—उत्पादक, वर्ग भी प्रत्येक राष्ट्र और समाज का आवश्यक अंग है।

—कुछ व्यक्ति श्रमिक भी प्रत्येक राष्ट्र और समाज में रहेंगे और हैं।

वैदिक अर्थ-शास्त्र चारों वर्णों की समस्याओं पर पृथक-पृथक विचार कर सामञ्जस्य उत्पन्न करने वाला मार्ग बताता है। समाजवाद सभी को एक ही लाठी से हांकने की पशु-प्रवृत्ति के अनुसार राह दिखाता है!

अतः वह अपूर्ण दर्शन है

वेद कहता है—

वसो चित्रस्य राधसः

वसु—अर्थात् आठ प्रकार का धन

राधसः—परिपूर्णता, पराक्रम, पूर्ण साधन, विजय, अभ्युदय, उन्नति के लिए

चित्र—तेजस्वो—आश्चर्य कारक—और सर्वोत्कृष्ट है!

वेद कहता है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असंबाधं माध्यतो मानवानां

अथर्व... १२-१-२—हमारी भूमि के मनुष्यों के बीच में अद्वेष अर्थात् झगड़ा, आपस की लड़ायी नहीं है। इन चारों वर्णों में किसी भी प्रकार का कोई संघर्ष न हो। सब एक दूसरे के पूरक हैं। कोई किसी का विरोधी नहीं है। वेद की दृष्टि से—

सब व्यक्ति समान हैं।

कर्मों के अनुसार उनमें श्रेणी विभाजन है।

उन्नति के लिए सब को समान अवसर प्राप्त है।

वेद कहता है—

मरुद्भ्यो वैश्यम्

मनुष्यों के लिए वैश्यों को रखो।

मानव मात्र का पोषण करना वैश्यों का कार्य है। वैश्यों का धर्म है कि वे अपने राष्ट्र में किसी भी उपयोगी वस्तु का अभाव न होने दें।

वेद कहता है—

आक्रयायै अ–योगुम

वैश्य कैसा हो—क्रय विक्रय के विशेष प्रयत्न करने वाला हो। राजा का या राज्य का कार्य व्यापार का नहीं है। जो राज्य स्वयं वैश्य बन जाता है वह अपना क्षात्र धर्म समाप्त कर देता है, और नष्ट हो जाता है। राजा का कार्य है कि वह वैश्य का निरीक्षण करे—उसे धर्म पूर्वक कार्य की प्रेरणा करे, पर स्वयं वैश्य न बने।

वेद कहता है—

श्रेयसे वित्त-धम्

कल्याण के लिए धन का धारण करने वाले को प्राप्त करो। 'वित्त-ध' का अर्थ है जो अपने पास बहुत धन रखता हो। साहूकार--महाजन आदि। राष्ट्र की उच्च स्थिति कंगालों से नहीं, धन संपन्न ऐश्वर्यवानों से बनती है। यह धन युक्त वैश्य धन से युक्त हों और राष्ट्र का अभाव दूर करें।

वेद कहता है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

 Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इरायै की—नाशम्

अन्न के लिए किसान को प्राप्त करो। उत्पादन बढ़ाएं उत्तम किसान। राष्ट्र के अभ्युदय के लिए किसान रीढ़ की हड्डी है। वह अन्न उत्पादक है, वैश्य है। उसका कार्य अन्न की वृद्धि है। अन्न उत्पादन राज्य का काम नहीं। किसान का काम है। अथर्ववेद ४-११-१० में स्पष्ट लिखा है कि—(पद्भिः) अपने पावों द्वारा (सेदिं) विनाश को पराजित करता हुआ और (जंघाभिः) जांघों द्वारा (इरां) अन्न को (उत्-खिदन्) ऊपर करता हुआ (अनड्वान) बैल तथा (श्रमेण की-नाशः) कष्ट के साथ खेती करने वाले किसान ये दोनों (कीलाल) उत्तम अन्न पान को सब (अभिगच्छत,) सबप्रकार से प्राप्त करते हैं। मंत्र इस प्रकार है।

पद्भिः सेदिम वक्रामन्निरां जंघा भिसत्खिदन्।

श्रमेणानड्वात् कीलालं कीनाशश्चाभिगच्छतः ॥

वेद के यह मंत्र स्पष्ट बता रहे हैं कि उत्पादन का कार्य वैश्य का का है। राज्य का नहीं। राज्य जब किसान का काम संभाल ले राष्ट्र की जो दुर्दशा होती है उस का उदाहरण १९७३ में भारत में राज्य द्वारा अनाज का राष्ट्रीयकरण है। समाजवादी शासन को भी १९७४ में- अपनी भूल को स्वीकार करना पड़ा और अनाज के व्यापार से अपना एकाधिकार समाप्त करना पड़ा।

अतः वैदिक अर्थ व्यवस्थानुसार यज्ञ मार्ग पर चलते हुए हमें सभी राष्ट्र और विश्व का सर्वांगीण विकास करें।

यज्ञ और मार्ग द्वारा मनुष्य आत्मा और शरीर का विकास करता हुआ सब भांति संतुष्ट होता है।

समाजवाद एक नारा है, जो एक वर्ग दूसरे वर्ग की समाप्ति के लिए लगाता है।-अतः इस नारे के कुचक्र से निकल सभी यज्ञ मार्ग का अनुसरण करें ताकि धरती स्वर्ग बन सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीयकरण और वेद

राष्ट्रीयकरण का अर्थ है संपत्ति के समस्त उत्पादक साधनों का राज्य द्वारा प्रबंध। इस पद्धति में व्यक्ति का अस्तित्व केवल मशीन सा रह जाता है और उसे राज्य द्वारा नियुक्त कार्य ही करना पड़ता है। इस व्यवस्था में व्यक्ति द्वारा स्वतः प्रेरणा से कुछ करने का उत्साह भी समाप्त हो जाता है।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति स्वातन्त्र्य का तो हनन होता ही है—राष्ट्र की उन्नति और विकास भी रुक जाता है। राष्ट्रीयकरण के जितने भी प्रयोग हमारे देश में हुए हैं उनमें असफलता ही हुयी है। फिर भी कुछ व्यक्ति और संस्थाएँ राष्ट्रीयकरण के नारे के प्रचार में व्यस्त रहते हैं। उन लोगों की ओर से यह तर्क ही प्रस्तुत किया जाता है कि राष्ट्रीयकरण की व्यवस्था के परिणास्वरूप व्यक्ति का शोषण न होगा और उद्योगों में एकाधिपत्य न हो पाएगा।

समाजवाद के ये उद्घोषक अपने नारे के पक्ष में कतिपय साम्यवादी देशों की अर्थ व्यवस्था का उदाहरण देते हैं और 'दूर के ढोल सुहावने' की स्थिति के अनुरूप भारतीय जनमानस के बहुत बड़े वर्ग को आकृष्ट करने में भी इन्हें सफलता मिली है इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। किन्तु इस वर्ग के लोग इस तथ्य को विस्मृत कर देते हैं कि जिन देशों में साम्य-वादी या समाजवादी शासन पद्धति के अन्तर्गत राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया अपनाई गयी थी, जहाँ पहले व्यक्तिगत संपत्ति का उन्मूलन ही युग का नारा बन गया था, वहाँ अनुभवों ने समाजवादी शासकों को व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार को प्रत्यक्ष भी, अप्रत्यक्षतः मान्य करना आरम्भ कर दिया है।

भारत में राष्ट्रीयकरण के घनघोर नाद को निनादित करने वाले शासकों ने जिन उद्योगों का राष्ट्रीयकण किया, उनमें भी अब तक का अनुभव यही है कि भ्रष्टाचार और घाटे का ही प्राबल्य रहा है, राष्ट्रीयकरण के उद्गाता उद्योगों के राष्ट्रीयकरण, व्यक्गित संपदा के उन्मूलन पर जोर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देते हैं, पूंजीवादी पद्धति के उपासक पूर्ण स्वातन्त्र्य का उद्घोष करते हैं, किन्तु ये दोनों ही पद्धतियाँ अपूर्ण हैं, क्योंकि एक में मानव चिन्तन तक पर अंकुश लगता है तो दूसरी व्यवस्था में आचरण पर कोई अंकुश ही नहीं रहता। इसकी तुलना में वैदिक व्यवस्था में राष्ट्र और समाज की मूल इकाई अर्थात् व्यक्ति से लेकर समष्टि तक के निर्माण की व्यवस्था है।

हम इस अध्याय में वेद और महर्षि दयानन्द के कतिपय विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। पाठक इन पर स्वयं चिन्तन करे—

ऋग्वेद १-१२५-७

मा पृणान्तो दुरितमेन आरन्॥

दानी लोग दुःख दारिद्रय में कभी न पड़ें।

दानी वही हो सकता है जिसके पास अपना धन हो। जिसके पास होगा ही नहीं वह देगा क्या? और फिर मंत्र भाग कह रहा है कि उन्हें कभी दरिद्रता न मिले। यही नहीं—वेद का आदेश है—

अ० १३-१-३४

द्रविणं च रोह

धन को बढ़ाओ!

आप सोच सकते हैं कि वेद का यह आदेश राज्य के लिए भी तो हो सकता है, पर नहीं वेद स्पष्ट कह रहा है कि—

मा नो आकृते पुरुहूत योना।

ऋ० १-१०४-७

हे इन्द्र! हमें धन धान्य से शून्य घर में मत रख!

कितना स्पष्ट निर्देश है वेद का—

सर्व—पणेः सम विन्दत।

अ० २०-२५-४

व्यापार से सब कुछ मिलता है।

मयि देवा द्रविण मा यज्ञन्ताम।

अ०-५-३-५

उत्तम गुण मुझमें धन लावें।

<u>मुझ में</u> शब्द पर ध्यान दीजिए!

भद्रा रातिः—ऋ०-८-१९-१९

हमारा दान अच्छा हो (जिसके पास धन होगा ही नहीं, वह दान कैसे देगा?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न भोजा मम्रुर्न न्यर्थं मीयुः ।

ऋ०१०-१०७-८

धन को स्वयं भोगने वाले
और दूसरों को देने वाले
न मरते हैं न क्षीण होते हैं ।।

नू मर्त्तो दयते सनिष्यन् यो विष्णव ।
उरू गायाय दाशत ।

ऋ० १०-१००-१

धन का का इच्छुक वह पुरुष
जल्दी धन को पा लेता है
जो बहुतों से पाने योग्य को देता है ।

महर्षि दयानन्द के विचार

ऋ० १-८-८ का भावार्थ लिखते हुई ऋषि लिखते हैं—

'सब मनुष्यों को सर्वशक्तिमान अन्तर्यामी ईश्वर का आश्रय लेकर, अपने पूर्णपुरुषार्थ के साथ चक्रवर्ती राज्य के आनन्द को बढ़ाने वाली विद्या की उन्नति, सुवर्ण आदि धन और सेना आदि बल सब प्रकार से रखना चाहिए जिससे अपनें आपको और सब प्राणियों को सुख हो ।

ऋ० १-९-६

सब मनुष्यों को उचित है कि···पुरुषार्थी और यशस्वी होकर विद्या तथा राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए सदैव उपाय करें ।

ऋ० १-९-७

धन के जोड़ने की इच्छा अपनें पुरुषार्थ द्वारा करें ।

ऋ० ३-५१-६

मनुष्यों को चाहिए कि ऐसी वाणी ग्रहण करें और सुनें कि जिससे धन संग्रह होता है ।

ऋ० ३-५५-२०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

 Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई भी पुरुष परमेश्वर की आज्ञा के बिना बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त नहीं होता।

सब लोगों को चाहिए कि परमेश्बर की आज्ञा का पालन करके ऐश्वर्यवान् होवें।

अ० ३-६८-४

जो विद्वान् होकर धर्मयुक्त आचरण से प्रस्तुत करते हैं वे लक्ष्मीवान और अतुल धनों को प्राप्त होकर पराक्रम को बढ़ाते हैं।

सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ समुल्लास

—पशुपालनादि का अधिकार वैश्यों ही को होना योग्य है।

—इस प्रकार वर्णों को अपने-अपने अधिकार में प्रवृत्त करना राजा आदि का काम है।

—बढ़े हुए धन का व्यय देशोपकार करने में [गृहस्थी व्यक्ति] किया करें।

—धन से सर्वदा परमार्थ किया करें।

जहाँ तक बने वहाँ तक प्रेम से अपने सन्तानों के विद्वान् और सुशिक्षा करने कराने में धनादि पदार्थों का व्यय करके उनको पूर्ण विद्वान सुशिक्षा युक्त कर दें।

षष्ठ समुल्लास

सेनास्थ जन भी उन जीते हुए पदार्थों में से सोलहवां भाग राजा को देवें। और राजा भी सेनास्थ योद्धाओं को उस धन में से जो सब ने मिल के जीता हो, सोलहवां भाग देवें।

—जैसे प्राणियों के प्राण शरीरों को कृषित करने से क्षीण हो जाते हैं वैसे ही प्रजाओं को दुर्बल करने से राजाओं के प्राण अर्थात् बलादि बन्धु सहित नष्ट हो जाते हैं।

—राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है। जो प्रजा न हो तो राजा किसका और राजा न हो तो प्रजा किसकी कहावे ?

दोनों अपने-अपने काम में स्वतंत्र और मिले हुए प्रीति युक्त काम में परतन्त्र रहें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद और ऋषि दयानन्द द्वारा प्रगट विचारों से स्पष्ट है कि—

सम्पत्ति के उत्पादक साधनों पर व्यक्ति का ही अधिकार होना चाहिए। धन उत्पादन वैश्य का कार्य है। राजा का कार्य प्रजा एवं धर्म का [नियमों का] संरक्षण मात्र है।

वैदिक धर्म न पूंजीवादी है, न समाजवादी, न साम्यवादी। वह धर्म यज्ञ—के अनुसार मानव मात्र की समानता का, उत्कर्ष के लिए समान अवसर का, मिल जुल कर दुःख-सुख बाँटने का पक्षपाती है।

संक्षेप में कहना हो तो यह भी कहा जा सकता है कि पूंजीवादी व्यवस्था व्यक्ति को शैतान बनाती है साम्यवादी व्यवस्था व्यक्ति कोहैवान बनाती है और वैदिक व्यवस्था मानव को वास्तव में इन्सान बनाती है।

पूंजीवाद जहाँ धन के कुछ हाथों में जमाव की स्थिति बनाता है, समाजवाद जहाँ सर्वहारा के नाम पर समग्र संपदा पर एक-दो दल विशेष का ही प्रभाव बढ़ाता है,वहाँ वेद का मार्ग व्यक्ति द्वारा धन के साथ-साथ सैकड़ों हाथों से अर्जन के साथ ही उसके समष्टि की हित साधनार्थ हजार हाथों से विसर्जन कर सर्वे सन्तु निरामया के प्रेरक आदर्श से जन जन को सद् चिद् और आनंद के लक्ष्य पर ले जाता है।

—:०:—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वदिक अर्थव्यवस्था का आधार

व्यक्ति संसार में आता है अर्थात् बालक जन्मता है तो धन की आवश्यकता भी उसके साथ ही उपस्थित हो जाती है। बालक के लिए माता का दूध उसकी जीवन रक्षा का साधन है और यही उसका धन है बड़े होने पर वस्त्र और अन्न तथा रहने के लिए मकान ये सभी तो सम्पदा के ही रूप हैं। वस्तुतः शारीरिक विकास और संरक्षण के लिए आवश्यक उपादानों को भी धन की संज्ञा दी जा सकती है। आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सभी उपादानों को जुटाना अर्थात् इस रूप में धन का संग्रह एक आवश्यक मानवीय दायित्व है।

वैदिक व्यवस्था में धन से विरक्ति का नहीं तो उसके प्रति आसक्ति का भी विधान नहीं है। जबकि पूँजीवादी पद्धति व समाजवादी पद्धति दोनों में ही धन के प्रति आसक्ति ही दो विभिन्न छोरों के रूप में मुखरित होती है। पाश्चात्य चिन्तन की धुरी जहाँ धन ही है वहाँ वैदिक दर्शन में पहले जन आता है और फिर धन। समाजवादी व पूँजीवाद आदि व्यवस्थाओं में पूँजी के लिए प्रभु की उपेक्षा और धन के समक्ष जन को हेय मानने की प्रवृत्ति का प्राबल्य है, जबकि वेद के विधान के अनुसार धन से पहले जनको स्थान प्राप्त है और जन के लिए धन आवश्यक माना गया है किन्तु धन के लिए 'जन' को बलि चढ़ा देना उसका आदर्श नहीं।

इसीलिए पाश्चात्य चिन्तन में जहाँ भौतिक सुखों के जुटाने और बढ़ाने को जीवन का लक्ष्य माना गया है और व्यक्ति की महत्ता का आँकलन भी उसी के आधार पर होता है, भोग को ही प्रमुखता मिलती है, जबकि वैदिक दर्शन में त्यागी पूज्य है और भोगी हेय है।

जहाँ तक आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रश्न है वैदिक समाजव्यवस्था व आर्थिक चिंतन उनको न्यूनतम करने पर जोर देता है किन्तु पाश्चात्य विचारधाराएँ उनके बढ़ाने पर ही केन्द्रित हैं। सूत्र रूप में यह भी कहा जा सकता है कि पाश्चात्य अर्थव्वस्था की प्रेरणा का स्रोत पेट है जबकि वैदिक चिंतन के अनुसार व्यक्ति का पेट है किन्तु व्यक्ति पेट ही नहीं है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का सिद्धान्त ही समग्र मानवीय क्रियाओं का नियामक होना चाहिये।

आवश्यकता न्यूनतम और उद्यम या परिश्रम अधिकतम ही वैदिक कर्मपद्धति का आधार है। क्योंकि वैदिक व्यवस्था का अन्तिम आदर्श व्यक्तित्व को महानता की उस उत्कृष्ट स्थिति तक पहुँचाना है जिसमें वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिना, सर्वे सन्तु निरामया जबकि समाजवादी व साम्यवादी दर्शन का चरमोत्कर्ष Greatest good of the greatest Number भी दूसरे शब्दों में बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के बौद्ध दर्शन के निकट तक ही पहुँच पाया है। इसके विपरीत वैदिक आदर्श है सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय।'

इसी उद्देश्य को समक्ष रखकर वैदिक अर्थव्यवस्था अधिकाधिक नहीं अपितु हर हाथ को यथायोग्य काम पर आधारित है। अतएव आर्थिक नीतियों के नियमन और योजनाओं क्रियान्वयन में भी वैदिक अर्थनीति के अनुसार ऐसी व्यवस्था का अवलम्बन किया जाना अपेक्षित है कि जन शक्ति का औद्योगिक व कृषि आदि सभी क्षेत्रों में अधिकाधिक उपयोग हो सके। हमारी योजनाएँ धन प्रधान नहीं अपितु जन प्रधान और पूँजी पर आधारित नहीं अपितु श्रम पर अधिष्ठित होनी चाहियें!

वैदिक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत न तो यंत्रों के समक्ष व्यक्ति को हेय बनाने की अनुमति है और न ही यंत्रों को हेय समझने की। किन्तु उसका मूल सूत्र यह है कि व्यक्ति के लिए यंत्र हो सकते हैं, व्यक्ति यंत्रों के लिए समर्पित नहीं हो सकता है। स्वदेश में यदि श्रम प्रधान व जन प्रधान योजनाएँ वैदिक अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धान्तों के अनुरूप क्रियान्वित की जातीं तो आज देश के समक्ष बेकारी और अभाव का जो ताण्डव नृत्य हो रहा है, वह दृष्टिगोचर न होता।

वैदिक अर्थव्यवस्था व्यक्ति को विशेष महत्व देती है। व्यक्ति का श्रम ही अर्थ उत्पादन का आधार है किन्तु आज तो मशीन को व्यक्ति से अधिक महत्व दिया जा रहा है। पाश्चात्य आर्थिकदर्शन में चिन्तन जड़ पर केन्द्रित होता है तो वैदिक व्यवस्था में 'चेतन' पर, क्योंकि चेतन जड़ का रचयिता व संचालक भी है।

बेकारी का कारण

हमारी दृष्टि में बेकारी का कारण है मशीन को अधिक महत्व देना। जुलाहा करघों पर कपड़े बनाता है तो राष्ट्र के सभी नागरिकों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तन ढँकने के लिए लाखों व्यक्तियों को काम मिल जाता है। किन्तु एक बड़ी कपड़ा मिल लगने से १००० व्यक्तियों को तो काम मिल जाता है पर ४० हजार व्यक्ति बेकार हो जाते हैं। इसी भांति हम जितना जितना मशीनों पर निर्भर होते जाते हैं व्यक्ति बेकार होता जाता है।

अभी ४०-५० वर्ष पहले सम्पन्न परिवारों में हाथ से खींचने के पंखे हुआ करते थे। निर्बल वृद्ध व्यक्ति इन्हें खींच कर अपना निर्वाह कर लेते थे। पर बिजली के पंखे लग जाने से हाथ के पंखे गए और साथ ही हजारों व्यक्ति बेकार हो गये !

भारी उद्योग जहाँ-जहाँ जैसे-जैसे बढ़ रहे हैं वैसे-वैसे बेकारी बढ़ती चली जा रही है। जब दो हाथ हजार हाथों का काम मशीन संभाल ले तो ९९९ हाथों को काम कौन दे, मशीन की आवश्यकता और प्रयोग तभी होनी चाहिये जब व्यक्ति द्वारा कार्य न चल सकता हो !

वैदिक अर्थ व्यवस्था का आधार है—

१—यज्ञ अर्थात् त्यागवाद, अपना आवश्यकताएँ कम से कम करना !

२—विकेन्द्रीयकरण। उत्पादित धन का अधिकाधिक वितरण।

३—संग्रह की प्रवृत्ति का विरोध।

४—कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन। व्यक्ति के श्रम का उपयोग। अधिक से अधिक हाथों को काम।

५—व्यक्ति का धन उत्पादक साधनों पर पूर्ण अधिकार।

६—व्यक्ति द्वारा धन का सब के कल्याण और अभाव की समाप्ति के लिए प्रयोग।

७—राज्य का कार्य धन के अधिपति का संरक्षण और धर्म पूर्वक व्यय की प्रेरणा। अधर्म से संग्रह और व्यय पर अंकुश।

८—'अर्थ' संग्रह व उत्पादन पर समाज के एक अंग वैश्य का एकाधिकार।

९—अधिक से अधिक व्यक्तियों को काम। बेकारी की समूल समाप्ति।

१०—अर्थ उत्पादन में धर्म पूर्वक कार्य।

इन सूत्रों के आधार पर वैदिक अर्थ व्यवस्था खड़ी है।

सार रूप में हम यह समझें कि सबसे प्रमुखता व्यक्ति के विकास को दी जानी चाहिये। प्रत्येक हाथ को काम मिलना चाहिए ! भारी उद्योगों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व मशीनों का प्रयोग तब होना चाहिये जब हाथों के द्वारा कार्य न चल सके। वैदिक अर्थ व्यवस्था में धन का उद्देश्य व्यक्ति का उत्थान-निर्माण है। किसी भी कारण से यदि व्यक्ति को हानि पहुँचती है तो उसे रोका जाना चाहिये। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं कि व्यक्ति से समाज बनता है। स्वस्थ-सबल समाज के लिए व्यक्ति का अभाव दूर होना ही चाहिए ! यहाँ इतना और समझ लें कि समाज का दायित्व है कि कोई व्यक्ति अभाव ग्रस्त न रहे।

यत्र विश्वं भवत्येक नीड़ं

यह संसार एक परिवार बन जाएं, और जो कुछ भी हमारे पास है हम उसका उपयोग मिल बाँट कर करें, तो धरती पर दुःख और अभाव नहीं रह सकता !

यते मही स्वराज्ये

जहाँ भूमि हो वहाँ स्वराज्य हो ! प्रत्येक स्थान, परिवार-प्रदेश में अपने को स्वतन्त्र अनुभव करे। स्वतन्त्रता विचार की, व्यवहार की, चिन्तन की और नियंत्रण हो, "धर्म" का !

धर्म भावना का नियन्त्रण ही व्यक्ति को ईमानदार, सत्यवादी, परोपकारी बना सकता है। राज्य के नियन्त्रण व्यक्ति तोड़ना चाहता है "धर्म" के नियन्त्रण में रहने पर वह आनन्द अनुभव करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक दृष्टि से

आज की समस्याओं का हल

प्रश्न—वर्तमान आर्थिक विषमता कैसे दूर हो ? एक ओर कंगाली और दूसरी ओर अपार धन राशि—इसका क्या हल है ?

उत्तर—इसका हल धर्म भावना द्वारा बड़ी आसानी से हो सकता है। राज्य का कर्त्तव्य है कि वह धनपतियों को धर्म की प्रेरणा करे ! राज्याधिकारी मंत्रीं स्वयं सादगी, त्याग का आदर्श अपनाएं और राज्य द्वारा निरन्तर धर्म के कार्यों को, विचारों को प्रसारित किया जाए।

"राज्य" धर्म राज्य हो ! धर्म राज्य से तात्पर्य है, यम-नियमों पर आधारित राज्य। धृति, क्षमा, दमन, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धीः, विद्या, सत्य, अक्रोध, की भावना का प्रसारक राज्य, धर्म राज्य कहा जाएगा।

५ यम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और ५ नियम—शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर भक्ति का प्रचार राज्य अपने सभी प्रचार साधनों से करे। ऐसा करने से धनपति में अभाव दूर करने की भावना उत्पन्न होगी।

प्रश्न—यह तो आपने एक आदर्श की बात बतायी। किन्तु व्यवहार में कैसे गरीबी मिटायी जाए ?

उत्तर—गरीबी समाप्त करने के लिए निम्न उपाय प्रयोग में लाए जाएं तो तीन मास में देश का काया कल्प हो सकता है।

१—१००) के नोटों का प्रचलन बन्द किया जाए।

२—राज्य कर्मचारियों के वेतन में ३० प्रतिशत कमी की जाए।

३—मंत्रियों को १०००) और संसद् सदस्यों को ५००) मासिक से अधिक न दिया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४—भारी उद्योगों को कुछ दनों के लिए स्थगित कर दिया जाए। केवल राष्ट्र रक्षा के लिए आवश्यक भारी उद्योग ही खोले जाएं। इनके स्थान पर ग्रामों में छोटे छोटे कुटीर उद्योगों का जाल बिछा दिया जाए।

५—शासन का भ्रष्टाचार धर्म निरपेक्षता के नारे ने बढ़ाया है। धर्म भावना मिटने से रश्वत, स्वार्थ ने सर्वत्र डेरा जमा लिया है। अतः शासन को ऊपरसे पवित्र बनाया जाए। विलासिता और अधिक व्यय करने की प्रवृत्ति को रोका जाए। अध्यादेश द्वारा विलास प्रसाधनों के आयात व निर्माण को तुरन्त रोका जाए! फैशनेबिल कपड़ों पर प्रतिबन्ध लगाया जाए! पाउडर, लिपस्टिक, आदि गर्हित पदार्थ घोषित हों। सिगरेट, शराब आदि पर भारी कर लगें।

६—हड़ताल, तालाबन्दी करने वालों को कठोरतम दंड दिए जाएं।

७—प्रत्येक क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाया जाए।

८—कृषि की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। कागजी योजनाएं और आसमानी प्रस्ताव छोड़कर किसानों को सभी संभव सुविधाएं दी जाएं।

९—सभी मंत्री, संसद् सदस्य सेवा की भावना से काम करें। भाषण कम और काम ज्यादा करें।

१०—उत्पादन भरपूर हो, व्यापार उन्मुक्त हो। प्रदेशीय करादि व सीमाएं समाप्त की जाएं।

सारा देश युद्ध स्तर पर उत्पादन दें जुट जाए और प्रखर धर्म व राष्ट्र प्रेम की भावना से सभी मिल जुलकर काम करें, तो देश की सारी आर्थिक समस्या बहुत आसानी से सुलभ सकती है।

पश्चिम की अंधी नकल और शासन के भ्रष्टाचार ने देश को तबाही की भट्टी में झोंक दिया है। वस्तुतः समाजवाद और राष्ट्रीयकरण का खोखला नारा ही देश की गरीबी और बढ़ती मँहगाई का मुख्य कारणहै।

प्रश्न—आपके और समाजवाद के गरीबी मिटाने के प्रकार में क्या अंतर है।

उत्तर—समाजवाद अमीर को मिटाकर राज्य के कुछ व्यक्तियों के हाथ में सत्ता देकर, गरीबी मिटाने का नारा लगाता है। किन्तु हम गरीब को उन्नति का समान अवसर देकर उसे सम्पन्न बनाना चाहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—समाजवाद अमीरों का शत्रु है।

—हम गरीबी को, अभाव को समाप्त करना चाहते हैं।

प्रश्न—यदि राज्य उत्पादन के प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं करेगा तो उसका लाभ गरीब को कैसे होगा ?

उत्तर—हमारे दृष्टिकोण में अमीर-गरीब नामक दो वर्ग नहीं हैं। राष्ट्र के समस्त नागरिकों का वैदिक दृष्टि से केवल एक ही वर्ग है। सभी को समान उन्नति का अवसर देना वैदिक राज्य का कर्तव्य है।

श्रमिक, वैश्य बने, वैश्य उन्नति कर क्षत्रिय बनें और क्षत्रिय उन्नति कर ब्राह्मण बने।

राज्य का कार्य सभी को उन्नति के समान अवसर देना है। सभी जब तक धर्म पूर्वक कार्य करते हैं तब तक वे कार्य करने में स्वतन्त्र हैं किन्तु जहाँ कोई धर्म को छोड़ता है, तब राजा का अंकुश उस पर आरम्भ होता है।

प्रश्न—क्या पिता की सम्पत्ति का अधिकार पुत्र को, सन्तान को है, या राज्य को ?

उत्तर—पुत्र या संतान पिता के समस्त दायित्वों, कर्तव्यों की पूर्ति करता है। पुत्र कहते ही उसे हैं जो पिता का उत्तराधिकारी हो !

प्रश्न—क्या गरीब और अमीर के बच्चों की शिक्षा में भेद होना चाहिए।

उत्तर—नहीं, क्योंकि वैदिक व्यवस्था में कोई गरीब, अमीर नहीं। राजा व ब्राह्मण, वैश्य या शूद्र की संतान को भी शिक्षा की समान सुविधाएँ मिलनी चाहिएं। गुरुकुल में सभी के बालक समान रूप से रहें। स्व योग्यता अनुसार उन्नति करें। किसी के साथ भी पक्षपात न हो। शिक्षा समाप्ति पर आचार्य उन्हें योग्यतानुसार वर्ण प्रदान करे ! और जिसे जो-जो कार्य मिले वह उसी के अनुसार अपना-अपना कार्य करें !

प्रश्न—यदि ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण न हो वैश्य हो जाए, या वैश्य का पुत्र ब्राह्मण हो जाए तो सम्पति का क्या बने ?

उत्तर—हम पहले बता चुके हैं कि—

ब्राह्मण का धन "ज्ञान" है।

अतः वह उत्तराधिकार में 'ज्ञान' ही देता है। यदि उसका पुत्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्राह्मण नहीं बन सका, तो ब्राह्मण का 'ज्ञान' धन वह नहीं संभालेगा। ऐसी स्थिति में आचार्य की व्यवस्थानुसार जो ब्राह्मण वर्ण धारण करेगा, वह पुत्र ब्राह्मण का कहलाएगा और वही उसका उत्तराधिकारी होगा।

इसे ऐसे समझिए कि ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के चार पुत्र गुरुकुल गए। ब्राह्मण का पुत्र यदि ब्राह्मण बना तो वह अपने पिता के ज्ञान को संभालेगा किन्तु दुर्भाग्यवश यदि वह शूद्र हुआ और शूद्र का पुत्र ब्राह्मण बन गया तो वह ब्राह्मण के उन धन का उत्तराधिकारी होगा। ऐसी स्थिति में वह ब्राह्मण का पुत्र बन जाएगा। पर यदि ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण ही बनता है तो वही अपने पिता के ज्ञान का उत्तराधिकारी होगा! यहाँ यह स्पष्ट समझ लें कि उत्तराधिकार घर-परिवार का नहीं 'ज्ञान' का है। क्षत्रिय का धन "शौर्य" है। वैश्य का 'धन' उत्पादन है। शूद्र का धन 'श्रम' है। यह वर्ण, Duties हैं। कर्त्तव्य हैं, पद हैं।

वैदिक अर्थ व्यवस्था में, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र अपने-अपने कर्त्तव्य कर्म में स्वतंत्र हैं। उनके संतान गुरुकुल में समान रूप से पढ़ेंगे। जो पिता के काम को संभालनें के योग्य होंगे, पिता का काम सम्भालेंगे। जो नहीं सम्भाल सकेंगे वे अपने योग्य कार्य को सम्भालेंगे ! और जिनके पुत्र उनका कार्य सम्भालने में असमर्थ होंगे वे अपने कार्य को समझने में सक्षम पुत्र आचार्य से कहकर गोद ले लेंगे !

प्रश्न—क्या इससे सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण सिद्ध नहीं होता ?

उत्तर—नहीं, कदापि नहीं। सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण का अर्थ है सम्पत्ति के प्रबंध पर राज्य का अधिकार ! वैदिक व्यवस्था में अधिकार राज्य का नहीं व्यक्ति का सुरक्षित है ! वह अपने पुत्र के अयोग्य होने पर किसी भी योग्य पुत्र को अपनी सम्पत्ति का प्रबंध-भार-दायित्व सौंपने में पूर्ण स्वतंत्र है। अतः सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण की बात वैदिक व्यवस्था के सर्वथा विरुद्ध सिद्ध होती है !

प्रश्न—आपकी दृष्टि में इस सम्पूर्ण समस्या का क्या हल है ?

उतर—संसार की आर्थिक समस्या का हल है"**वैदिक साम्राज्यवाद**"। वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक युग के महान् क्रांतिकारी ऋषिदयानन्द न समाजवादी थे, न पूंजीवादी,वे थे साम्राज्यवादी। चौंकिए नहीं,गहरे पानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पैठ बुद्धि पूर्वक समझने का प्रयत्न कीजिए !

महर्षि दयानन्द संसार में आर्यों का चक्रवर्ती अखंड साम्राज्य चाहते थे ! आर्य कौन,

ईश्वर के पुत्र !
ईश्वर का पुत्र कौन ?
जो ईश्वर की बतायी राह पर चले !
ईश्वर की बतायी राह कौनसी ?
धर्म की—
वेद की
सत्य की,

ऋषि दयानन्द धरती पर उस महान् क्रांति के सूत्रधार थे, जिस क्रांति में अनार्य समाप्त हो जाएँ अर्थात् अधर्म मिट जाए ।

महर्षि का चक्रवर्ती साम्राज्य वैदिक विचारधारा का साम्राज्य है ।
आर्य कोई जाति नहीं,
आर्य कोई वर्ग नहीं,
आर्य कोई मत नहीं,

आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ व्यक्ति जो व्यक्ति श्रेष्ठ हैं, जो प्रभु के पुत्र हैं, जो धर्म पर चलने वाले हैं उन श्रेष्ठ आर्यों का, वैदिक विचारधारा का साम्राज्य भू मण्डल में हो !

अतः आज आवश्यकता है कि हम साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद अधर्मवाद, नास्तिकवाद और सभी मनुष्य कृत वादों को मिटाकर धरती को एक बनाने के लिए वेद-वाद का धर्मराज्य का, चक्रवर्ती साम्राज्य सर्वत्र स्थापित करें ।

सब के मत एक हों
सब के विचार एक हों
सब का चिन्तन एक हो
सब का लक्ष्य एक हो
सब सब के कल्याण के लिए काम करें—सोचें,
यही वेद वाद है ।
यही **धर्मवाद** है।
इसी की स्थापना महर्षि दयानन्द **का लक्ष्य था**।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न—काले धन की समस्या का क्या हल हैं ?

उत्तर—काला धन राज्य के अधार्मिक होने का परिणाम है। राज्य करने वाले व्यक्ति इस काले धन के संरक्षक हैं।

वैदिक अर्थ व्यवस्था में राजा प्रजा का संरक्षक-सेवक होता है। योगी, तपस्वी, जितेन्द्रिय धार्मिक व्यक्ति शासन में हों तो वे अपना जीवन विलासितापूर्ण न बिताएँ। त्याग-तपस्या से स्वयं धर्म की राह पर चलें और सभी को चलाएँ।

बड़े नोट बन्द कर और विलासिता की सामग्री पर प्रतिबन्ध लगा कर तथा धर्म भावना का प्रचार कर राज्य काला धन समाप्त करा सकता है !

प्रश्न—गरीब-अमीर का भेद कैसे मिटे ?

उत्तर—वैदिक दृष्टि में कोई गरीब नहीं, कोई अमीर नहीं। हाँ किसी के पास अभाव नहीं होना चाहिए। जिन्होंने श्रम से अधिक संग्रह कर लिया है वे अपना संग्रह अभाव दूर करने में प्रयुक्त करें ! धर्म पूर्वक धन का प्रयोग यही है कि कहीं भी अभाव न रहने दें। धन संग्रह का भी यही उद्देश्य होना चाहिए और यह मनोवृत्ति राज्य धर्म-प्रचार द्वारा ही उत्पन्न कर सकता है !

प्रश्न—यदि कोई धन सम्पन्न व्यक्ति अभाव ग्रस्त को तंग करे, सताए तो क्या किया जाए ?

उत्तर—यह कार्य धर्म विरुद्ध होगा और राज्य का कार्य धर्म की रक्षा का है। हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि जब तक प्रजा धर्म मार्ग पर चलती है तब तक पूर्ण स्वतन्त्र है ! राज्य को किसी भी व्यक्ति के धर्म पूर्वक किए जा रहे कार्य को रोकने का अधिकार नहीं है।

किन्तु यदि कोई व्यक्ति अधर्म पूर्वक धन से किसी को तंग करता है और अपने धन का प्रयोग अभाव ग्रस्त की रक्षा में नहीं, अपितु उसे सताने हेतु करता है तब राज्य का कर्तव्य होता है कि ऐसे अधार्मिक व्यक्ति को कठोरतम दंड दें। जिससे कि अन्य व्यक्ति भी शिक्षा ग्रहण कर सकें।

प्रश्न—एक ओर आप यह कह रहे हैं कि धन कमाना केवल वैश्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का कार्य है। दूसरी ओर अन्य तीन वर्णों के लिए भी मकान, अन्न वस्त्र आदि चाहिएं। तो क्या ये धन नहीं? और यदि ये धन हैं तो क्या ये वर्ण भी धन के कार्य में नहीं लगे।

उत्तर—प्रश्न सर्वथा मौलिक हैं और यह वैदिक अर्थ व्यवस्था के आधारभूत सिद्धान्त को स्पष्ट कर रहा है! वस्तुत: सही दृष्टि यह है कि जीवन की सामान्य उपयोगी वस्तुएँ धन नहीं हैं। रोटी, मकान, वस्त्र दूध, जल आदि वैदिक दृष्टि से धन नहीं हैं।

'वेद' की विचारधारा में "धन" वही है जो संग्रह किया जाए! आवश्यकता पूर्ति की आवश्यक सामग्री साधन है।

साधन जब उपयोग से अधिक होकर संग्रह हो जाते हैं तब वह धन होता है।

—'धन' वह है जो संग्रहीत हो!

—'धन' वह है जो आवश्यकता से अधिक हो!

—'धन' वह है जो अभाव दूर करने में समर्थ हो!

—'धन' वह शक्ति है जो व्यक्ति दूसरों को दे सकता है!

ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र के पास जीवन निर्वाह के साधन होते हैं, होने चाहिए! पर उनके पास 'धन' नहीं होता!

धनपति 'वैश्य' होता है। उसे ही यह अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी आवश्यकताओं से अधिक साधन संग्रह करे। और उसका ही यह कर्तव्य है कि किसी को भी साधनों का अभाव न रहने दें।

प्रश्न—क्या आप का यह उत्तर पिछले अध्यायों में वर्णित आप के विचारों के ही विरुद्ध नहीं है!

उत्तर—नहीं। क्योंकि वहाँ हमने 'धन' शब्द का प्रयोग प्रचलित मान्यताओं के आधार पर किया है। और यह स्पष्टीकरण वैदिक आधार को स्पष्ट करने के लिए है। दोनों में कोई भेद नहीं है।

नोट :—

पुस्तक पढ़कर यदि आप के मन में कोई प्रश्न उभरे तो हमें लिखें। हम उनके समाधान का प्रयत्न करेंगे। —लेखक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाज अ

—श्री वीरेन्द्र जी

कुछ समय से आर्य सामाजिक क्षेत्र में एक नया विच... यह कि आर्यसमाज और आर्य सभा का पारस्परिक सम्बन्ध क्या है ? ... बने अब तीन-चार वर्ष हो चुके हैं वह एक चुनाव भी लड़ चुकी है। इस... ही अन्दर यह चर्चा का विषय तो बनी हुई थी परन्तु स्पष्ट रूप से इस प्रश्न का उत्तर न मिल रहा था कि आर्य सभा का आर्यसमाज से क्या सम्बन्ध है ? आर्य सभा के कई नेताओं ने कई बार कुछ ऐसे वक्तव्य भी दिये जिनसे यह समस्या सुलझने की बजाय उलझ गई। मैं समझता हूँ कि अब इसकी तरफ से आँखें मूंदे रखना आर्य-समाज और आर्य सभा दोनों के लिये हानिकारक होगा। इसलिये कुछ बातें स्पष्ट कर देना चाहता हूँ।

पहली और सबसे आवश्यक यह कि **आर्यसमाज का आर्य सभा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।** आर्य सभा कांग्रेस, जनसंघ, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट पार्टियों के समान एक स्वतन्त्र राजनीतिक दल है।

कोई आर्य समाजी यदि उसकी विचारधारा से सहमत हो तो वह अपने निजी रूप में उसमें उसी प्रकार सम्मिलित हो सकता है जिस प्रकार कि कोई आर्य समाजी जनसंघ या कांग्रेस में हो सकता है। इस दृष्टि से आर्य समाजियों के लिये आर्य सभा उसी प्रकार का एक राजनीतिक दल है जिस प्रकार का, कि कोई और राजनीतिक दल। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य सभा के कई नेता यह दावा अवश्य करते हैं कि उनकी विचारधारा वही है जो महर्षि दयानन्द की थी। परन्तु इस पर आर्य-समाज में बहुत तीव्र मत-भेद हैं। ऐसी अवस्था में आर्य सभा की विचारधारा को आर्यसमाज की विचारधारा नहीं कहा जा सकता। कुछ आर्य समाजियों की तो यह विचारधारा हो सकती है परन्तु आर्यसमाज की नहीं। यह स्पष्टीकरण इसलिये आव-श्यक हो गया है कि कुछ राजनैतिक क्षेत्रों में यह समझा जाने लगा है कि आर्यसमाज और आर्यसभा दोनों एक हैं।

दूसरी बात जो मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ वह यह कि आर्यसमाज का मंच किसी भी राजनतिक दल के प्रचार के लिये प्रयुक्त करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। जब तक सार्वदेशिक सभा और केवल सार्वदेशिक सभा ही नही, आर्य महा-सम्मेलन निश्चित रूप से यह घोषणा नहीं कर देता कि अब आर्यसमाज सीधा राज-नीति में भाग लेगा, तब तक आर्यसमाज का मंच किसी भी राजनीतिक उद्देश्य के लिये यदि प्रयोग में लाया जाता है तो वह आर्यसमाज के हितों से द्रोह होगा। इस लिये यह अत्यावश्यक है कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी जाये कि **आर्यसमाज का आर्य सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है।** आर्य सभा एक स्वतन्त्र राजनीतिक दल है जब कि आर्यसमाज एक सार्वभौमिक संस्था है। आर्यसभा की अपनी पृथक् विचारधारा और कार्यक्रम हैं और उसके विषय में आर्य सामाजिक क्षेत्रों में भारी मतभेद है। इस लिये यह अत्यन्तावश्यक हो गया था कि यह स्पष्टीकरण कर दिया जाए। आर्य... निधि सभा पंजाब के मन्त्री के नाते मैं आर्य... स्पष्ट कर दे...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...७४ | रजिस्टर्ड
डी० (सी०) २

का कार्य है। दूसरी ओ...
आदि चाहिए। ...
भी धन ...

५०६२—सितम्बर
श्रीमती सन्तोष कुमारी, एच० १/२,
माडल टाउन दिल्ली

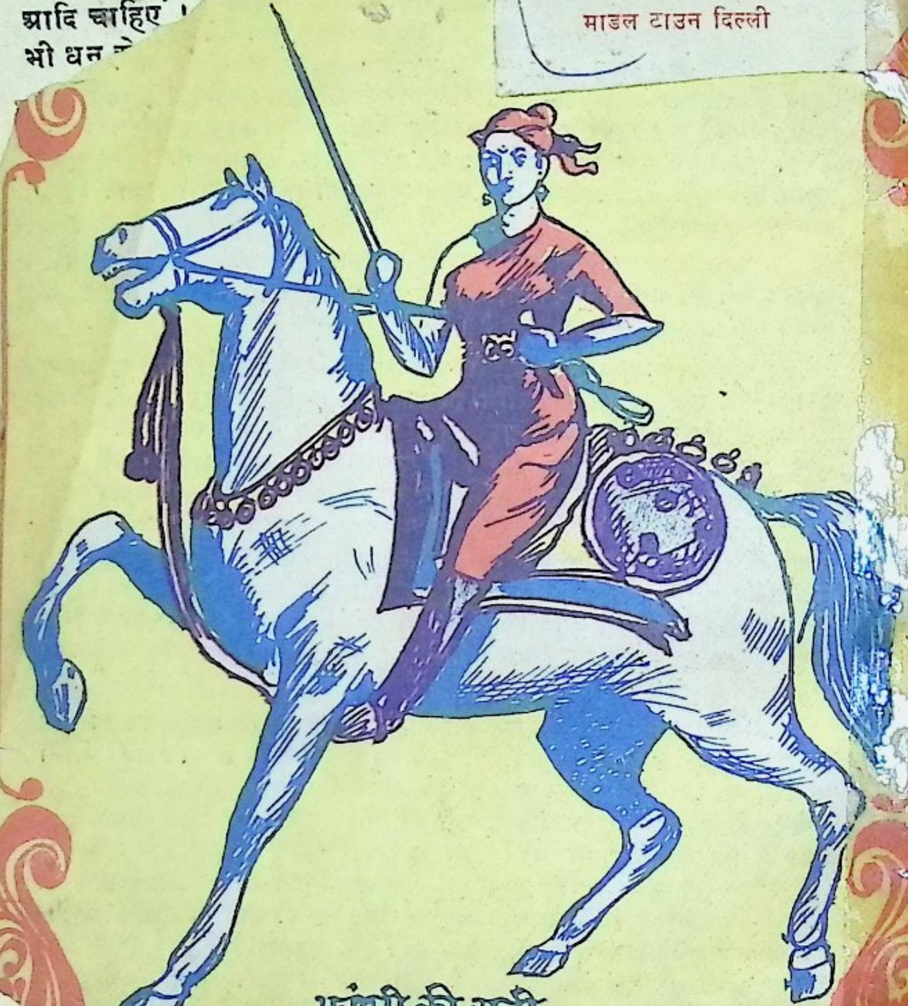

झांसी की रानी

पु...
उसके समाधान क...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi